लखनऊ रेजीडेन्सी का घेरा

श्रीचरण काला

सामाजिक विज्ञान एव मानविकी विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रथम सस्करण
मार्च १९७२   चैत्र १८९४

P U 2 T

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, १९७२

मूल्य : दो रुपए

प्रकाशन विभाग मे, सैयद ऐनुल आबेदीन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय शिक्षा सस्थान भवन, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-१६ द्वारा प्रकाशित तथा न्यू इडिया प्रिंटिंग प्रेस, खुरजा में मुद्रित ।

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तको के अतिरिक्त, बालक की इच्छा कुछ और भी पढने की होती है। हमारे देश मे आजकल उसे जो कुछ पढने को मिलता है वह प्राय कोरी कल्पना तक ही सीमित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस कमी को अनुभव किया है और कुछ रोचक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई है जिनमे कि बालको का ज्ञानवर्धन हो सके और साथ ही उनमे स्वय पढने की प्रवृत्ति जाग्रत हो सके। यह कार्य सामाजिक विषय के क्षेत्र मे सामाजिक विज्ञान एव मानविकी विभाग कर रहा है।

बालक का भावात्मक विकास सयत एव सतुलित हो इस कार्य मे सहायक पुस्तके काफी योग दे सकती है क्योकि वे उसके जीवन, वातावरण, परिस्थितियो एव समाज और पदार्थो का एक ऐसा रूप उपस्थित कर सकती है जो सयत हो, वास्तविक हो, सच्चा एव सरल हो। जिसमे बालक स्वय को रख कर अपने को देख, समझ और परख सके।

आज की विषम परिस्थितियो मे ऐसी सहायक पुस्तको का महत्व और भी बढ गया है जो बालको मे आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान और अनुशासन की भावना जाग्रत एव विकसित कर सकें, जो उनमे राष्ट्रीय एकता के भाव भर सके और उनमे देश-प्रेम की भावना जाग्रत कर सके।

इन कुछ सिद्धातो को सामने रख कर ये सहायक पुस्तकें तैयार की गई है। इनमे जो भी ज्ञान दिया गया है वह रुचिकर घटनाओ के माध्यम से सीधी, सरल एव प्रभावोत्पादक भाषा मे दिया गया है। बालको की आवश्यकताओ, पठन-रुचियो और भावनाओ का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है।

मुझे आशा है ये पुस्तकें बालको की ज्ञान-वृद्धि मे सहायक होकर उचित भारतीय दृष्टिकोण का निर्माण करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

स० वि० चद्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद

अगस्त १९७१
नई दिल्ली

विषय-सूची

	पृष्ठ
लखनऊ रेजीडेन्सी	१
अवध का क्षुब्ध वातावरण	६
क्राति की चिनगारी	२०
युद्ध की तैयारी	३०
रेजीडेन्सी के घेरे मे जीवन	३६
रेजीडेन्सी का मुक्ति प्रयास	५२
हेवलाक का अवध छोडना	६३
मददगार स्वयं घेरे के अदर	६८
रेजीडेन्सी का सफल मुक्ति प्रयास	८१
सिंहावलोकन	६५

लखनऊ रेजीडेन्सी

लखनऊ रेजीडेन्सी ..... सन १८५७ ..... भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध का प्रथम सग्राम !

अवध के क्रातिकारियो ने लखनऊ रेजीडेन्सी को घेर रखा था । उस पर दिन-रात गोलाबारी हो रही थी । रेजीडेन्सी की मीनार तोप के गोलो की मार से टूट गई थी । मकानो की छते गोलो के धमाको से चकनाचूर हो गिर गई थी ।

दीवाले जगह-जगह टूट गई थी और सर्वत्र उन पर गोलो के निशान बन गए थे। रेजीडेन्सी के तमाम भव्य भवन खडहर हो गए थे। आज भी वे खंडहर उसी दशा मे विद्‌यमान है।

रेजीडेन्सी का यह घेरा पॉच महीने तक बना रहा और उस पर निरतर गोलाबारी होती रही थी।

(लखनऊ रेजीडेन्सी नगर का प्रमुख दर्शनीय स्थान है। वह गोमती नदी के दाऍ किनारे एक टीले पर स्थित है। उसकी स्थिति की तुलना हीरे की कनी से की गई है। यह तैतिस एकड क्षेत्र मे फैला है, इसमे सोलह भवन थे। गोमती नदी के दाई ओर लगभग तीन सौ गज चौडा मैदान है, जो क्रमश रेजीडेन्सी के मध्य मैदानी भाग तक लगभग एक हजार फुट की ऊँचाई तक उठता हुआ चला जाता है। नदी के किनारे से रेजीडेन्सी पहुँचने के लिए हल्की चढाई तय करनी पडती है।)

रेजीडेन्सी के समस्त भवन टीले के ऊपर चौरस मैदानी भाग मे बने थे जिसके चारो ओर फैला हुआ ढालू मैदान था। इस कारण रेजीडेन्सी की किलेबंदी सरलता से की जा सकती थी। यदि मैदानी भाग की परिक्रमा की जाए तो हम देखेंगे कि ढालू भाग के प्रारंभ में ही उस समय की रक्षा पक्ति थी, जो मुनारो के द्‌वारा दिखाई गई है। इस पक्ति में खाइयॉ खोदी गई थी, दीवालें उठाई गई थी, उपयुक्त

स्थानो मे तोपे लगाई गई थी और रक्षार्थ वचाव के अन्य उपाय किए गए थे। इस रक्षा पक्ति मे चार दिशाओ मे चार प्रशस्त तोपखाने भी थे। ये तोपखाने ऐसे स्थानो पर लगाए गए थे, जहाँ से दूर-दूर तक सामने और दाएँ-बाएँ मार की जा सकती थी। पूर्व दिशा मे गोमती की ओर रेडन का तोपखाना था। इससे नदी के किनारे के विस्तृत मैदान मे गोलाबारी की जा सकती थी। लोहे के पुल पर भी यहाँ की शक्तिशाली तोपो से गोलाबारी की गई थी। जब सर हेनरी लारेन्स जो उस समय अवध का चीफ कमिश्नर था, चिनहट के युद्ध मे क्रातिकारियो से हार कर रेजीडेन्सी मे शरण लेने के लिए भागकर आया था, तो क्रातिकारी उसका पीछा कर रहे थे।

रेडन तोपखाने की मार के कारण क्रातिकारी लोहे के पुल को पार नही कर पाए थे। रेजीडेन्सी के दक्षिण-पूर्व मे बेली गार्ड, रेजीडेन्सी का प्रमुख द्वार था। इसके दाई ओर बेली गार्ड तोपखाना था, जहाँ से उन पर मार की जा सकती थी, जो इस द्वार द्वारा अदर घुसना चाहते थे।

रेजीडेन्सी के निवासियो के सहायतार्थ जब हेवलाक कानपुर से आया था तो वह इसी द्वार से रेजीडेन्सी मे घुसा था। रक्षा पंक्ति के दक्षिण भाग मे कानपुर तोपखाना था। दक्षिण-पश्चिम में गाविन का तोपखाना था। इनके अतिरिक्त कई स्थानों पर तोपों का प्रबध किया गया था।

आवश्यकतानुसार आक्रमण होने पर ये तोपे हमले के स्थानो पर ले जाई जा सकती थी ।

रेजीडेन्सी का प्रमुख भवन स्वय रैजीडेट का तिमजिला निवास स्थान था। आज भी दूर से ही इसकी टूटी मीनार दिखाई देती है। यह मीनार मुख्य भवन से कुछ ही फुट अधिक ऊँची थी। इसमे दिन-रात सतरी तैनात रहते थे, जो दूर-दूर तक देख सकते थे कि कोई शत्रु तो निकट नही आ रहा है। यहॉ से शत्रु की गतिविधि पर देखरेख की जा सकती थी, यही कारण है कि मीनार पर सबसेप्रव ल गोलाबारी हुई थी। सबसे ऊँची मजिल तो करीब-करीब

बेलीगार्ड, रेजीडेन्सी का मुख्य द्वार

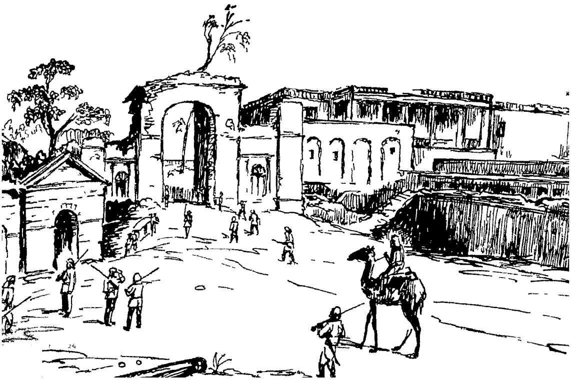

गिर ही गई थी। यहाँ से निशानेवाज भी चुन-चुन कर शत्रुओ को मार सकते थे। यह मीनार अव सुरक्षित नही है। वह दर्शको के लिए बद कर दी गई है।

इसी मीनार से अग्रेजो का राष्ट्रीय झडा यूनियन जैक फहराता था। विदेशी सत्ता का प्रतीक भला क्योकर फहराने दिया जाता। वह स्वदेश-प्रेमियो की आँख की किरकिरी वन गया था। गोलियो की मार से वह देखते ही देखते छलनी हो गया था। उसे विवश होकर उतारना पडा था। रेजीडेन्सी के घेरे के काल मे वह तहखाने मे लिपटा

रेजीडेन्सी का एक भाग अपने मूल रूप मे

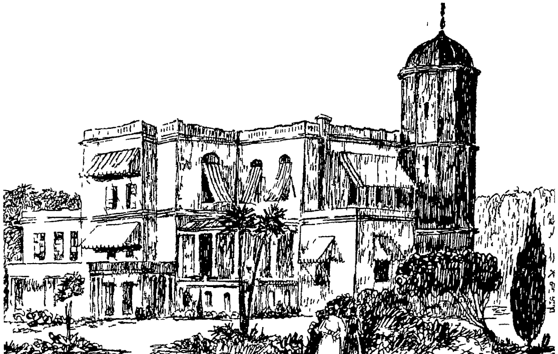

पड़ा रहा। यह वही झंडा था जिसके विषय मे विलायत के राष्ट्र-कवि लार्ड टेनीसन ने लिखा था कि वह क्राति पर्यंत रेजीडेन्सी के ऊपर फहराता रहा था और क्राति-कारियो को चुनौती देता रहा। लेकिन इस कथन को कवि की कल्पना ही मानना चाहिए।

रेजीडेंट के निवास स्थान के नीचे एक तहखाना था, जिस में घेरे के काल में अग्रेज औरते और बच्चे सिमटे पडे रहते थे जिससे वे ग्रीष्म काल की गर्मी और गोलों की मार से सुरक्षित रह सके। लेकिन तहखाने की सीलन के कारण वे स्वस्थ न रह पाए। दिन के समय भी तहखाने मे इतना अँधेरा रहता था कि भोजन करते समय मोमबत्ती जलानी पड़ती थी।

तहखाने के ऊपर के कमरों मे अब सग्रहालय बना दिया गया है, इसमे एक मिट्टी का मॉडल बना है, जो सन १८५७ की रेजीडेन्सी को उसी रूप मे दर्शाता है। इसकी दीवालों पर तत्कालीन कलाकारों द्वारा बनाए हुए युद्ध के चित्र हैं।

इनको ध्यानपूर्वक देखने से हमें सन १८५७ की क्राति के युद्धों के विषय मे अनेक प्रकार की सूचनाएँ मिलती हैं। यहाँ वे अस्त्र-शस्त्र भी एकत्रित हैं जिनका प्रयोग इस युद्ध में हुआ था।

रेजीडेन्सी के मध्य भाग में एक मस्जिद है जो अन्य भवनों की

अपेक्षा अच्छी दशा मे है। इसके दो कारण हो सकते है। एक तो वह स्वत ही रेजीडेन्सी क्षेत्र के मध्य भाग मे होने से गोलों की मार से बच गई हो। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि धार्मिक स्थल होने के कारण क्रातिकारियो ने उसे किसी प्रकार की क्षति न पहुँचाई हो।

रक्षा पक्ति की दक्षिण दिशा मे मार्टिनियर की चौकी थी। इस चौकी का भार आशिक रूप से स्थानीय ला मार्टिनियर कालेज के छात्रो पर था जिन्होने अपने कर्तव्य का पालन वीरता से किया था। इस वीरता के कार्य के लिए बाद मे उन्हे एक झडा प्रदान किया गया था। यही पर ब्रिगेड मेस एव सिख स्क्वायर था जहाँ सिख सवार एव सिख पैदल सेना रहती थी। पूर्व की ओर भोजन करने का कमरा था जो युद्ध काल मे अस्पताल बना दिया गया था।

रेजीडेन्सी के क्षेत्र मे जगह-जगह स्मारक बने है। इन्हे सैनिको ने अपने उन साथियों की याद में बनाया था जो वीर गति को प्राप्त हुए थे। इनमे सबसे दर्शनीय और कला की दृष्टि से उत्कृष्ट सर हेनरी लारेन्स का स्मारक बना है।

रेजीडेन्सी के कब्रिस्तान की चर्चा किए बिना रेजीडेन्सी के घेरे की कहानी अपूर्ण रह जाती है। यहाँ उन अग्रेज सैनिको की कब्रे है जो क्रातिकाल मे युद्ध अथवा युद्धजनित अन्य

कारणों से मर गए थे। यहाँ उल्लेखनीय कब्र सर हेनरी लारेन्स की है जिसके उत्तम संगठन के ही कारण घेराव मे आए हुए व्यक्ति पाँच माह का समय काट पाए थे। वह घेराव के प्रारंभिक काल मे ही एक गोले के लगने के कारण मर गया था। उसकी कब्र पर लिखा है—

यहाँ चिर निद्रा मे लेटा है सर हेनरी लारेन्स,
जिसने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की थी।

यदि ये खडहर बोल सकते तो न जाने कितनी रोचक बाते हमे बता सकते। पर न ये बोल सकते है और न आप बीती ही सुना सकते है। किंतु इनको देखकर सन १८५७ के युद्ध के विषय मे हम बहुत कुछ जान सकते है। दीवालो पर इंच-इंच की दूरी पर गोलो के निशान बने है। ये हमे बताते है कि रेजीडेन्सी पर कितनी भयंकर गोलाबारी हुई होगी।

रेजीडेन्सी के खडहर राष्ट्रीय निधि है। उनकी सुरक्षा का भार भारत सरकार पर है। भारतीय पुरातत्व विभाग पर देश के समस्त ऐतिहासिक भवनो की देखभाल एव रक्षा का दायित्व रहता है। वह समय-समय पर इनकी मरम्मत भी करता है और उनको सुरक्षित रखता है।

अवध का क्षुब्ध वातावरण

लार्ड वेलेजली ने अन्य राज्यो की तरह ही अवध के साथ भी सहायक सधि की थी। इससे अवध का भी वही हाल हुआ जो सहायक सधि मानने वाले अन्य राज्यो का हुआ था। अवध मे शासन व्यवस्था दिन पर दिन विगडने लगी। अतिम नवाव वाजिदअली शाह नाच-गाने और भोग-विलास मे लिप्त रहने लगा। एक दिन उसे डलहौजी का पत्र मिला कि कुशासन के कारण उसका राज्य अग्रेजी राज्य मे मिला दिया जाता है। वाजिदअली शाह कर भी क्या सकता था। वह केवल हाथ मल कर रह गया।

और सन १८५७ की क्राति के पद्रह माह पूर्व अवध अग्रेजी राज्य मे मिला लिया गया। स्वाधीनता के खो जाने के कारण अवधवासी दु खी और असतुष्ट थे। यह असतोष और अधिक बढा, जब उन्हे नए शासन द्वारा सुविधाएँ कम और असुविधाएँ ही अधिक मिली। अग्रेजी शासन

मे दिन पर दिन सर्वसाधारण की कठिनाइयॉ बढती गई।

सर हेनरी लारेन्स को अवध का चीफ कमिश्नर बनाया गया था। उसमे मानवता थी। वह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था और नवाबी काल की कुव्यवस्था से परिचित था। उसने सिफारिश की कि अवधवासियो के साथ उदारता का व्यवहार होना चाहिए। 'नवाबी शासन की अपेक्षा हमे उन्हे अधिक सुविधाएँ देनी चाहिएँ। नए शासन से हमे आर्थिक लाभ नही उठाना चाहिए।' लेकिन लालची कपनी अवध से दो करोड रुपया कर पाने के लिए लालायित थी। उसमे यह दूरदर्शिता कहॉ थी कि अवध मे स्थायी अग्रेजी शासन स्थापित करने मे जनता का सहयोग लेती क्योकि जनता की सद्भावना पर ही स्थायी राज्य स्थापित हो सकता था। कपनी ने तो यही सोचा था कि अग्रेजी सेना की सहायता से वह अवध को अपने अधिकार मे रख लेगी। अत. नया शासन अवध की सर्वसाधारण जनता की सद्भावनाएँ प्राप्त न कर सका। विदेशी शासन अप्रिय हो गया।

तत्कालीन इतिहासकार 'रीज' का भी यही मत है कि कपनी अपनी आमदनी बढाने के लिए इतनी आतुर हो गई थी कि उसने जनता के सुख की कुछ भी परवाह नही की। टिकटों, अर्जियों, मकान, खाद्य पदार्थ एव नौकाओं पर कर लगा दिए गए थे। अफीम, नमक, अनाज और स्पिरिट के ठेकेदार

नियुक्त कर दिए गए थे। अफीम पर लगाए गए कर से तो पूरे अवध मे वहुत असतोष फैला। लखनऊ नगर मे यह असतोष सबसे अधिक था। इस नगर मे चीनवासियो की भाँति लोग वहुत अफीम खाते थे। एकाएक अफीम पर कर लग जाने से गरीव लोग उसे खरीद न पाए। अफीम का दाम वढ गया। निराश होकर कई अफीमचियो ने अपना गला काट लिया। आदमियो की बात तो छोडिए, उस समय बुलबुलो तक को अफीम खिलाई जाती थी। बुलबुलो को लडाना उस समय का प्रमुख मनोरजन था। दैनिक आवश्यकता की प्रत्येक सामग्री पर कर लग जाने से, और बढती हुई मँहगाई के कारण अवध के लोगो मे असतोष वढता ही गया।

विदेशी शासन के प्रति असतोष अवधवासियो तक ही सीमित न रहा, वरन उसने अग्रेजो द्वारा बनाई गई 'बगाल सेना' के अवधी सिपाहियो को भी प्रभावित किया। बंगाल सेना मे अवध के डेढ लाख सिपाही थे। ये सैनिक स्वय भी अग्रेजी सैनिक प्रशासन से सतुष्ट नही थे। अग्रेज अधिकारियो के रवैये से उनको विश्वास हो गया था कि अग्रेज सरकार उनका धर्म भ्रष्ट कर उन्हे क्रिस्तान बनाना चाहती है। कपनी के सैनिको के लिए एक नया कानून बना था कि नए रगरूटो को समुद्र पार कही भी लडने के लिए भेजा जा सकता है। उस समय के धार्मिक विश्वास के

बगाल सेना के सिपाही

अनुसार समुद्र पार जाने से धर्म नष्ट हो जाता था। इससे उनका विश्वास और अधिक पुष्ट हुआ कि सरकार उनका धर्म परिवर्तन करना चाहती है। जब सैनिको को बर्मा और अफगानिस्तान जाने की आज्ञा हुई तो बहुत से सिपाहियों ने छुट्टी ले ली और अनेक सेना छोड कर भाग गए। वे सिपाही जो युद्ध करने के लिए गए थे, लौटने पर जाति से बहिष्कृत कर दिए गए। वे अब अछूत समझे जाने लगे थे।

उनके सहधर्मी न तो उनसे बोलते, न मिलते और न ही किसी प्रकार का संसर्ग ही रखते थे। शुद्धि कराने मे उनकी कई वर्षो की गाढी कमाई स्वाहा हो जाती थी।

बगाल सेना के एक-तिहाई सैनिक अवध के उच्च जाति के हिंदू थे। खान-पान, जाति-पॉति एव विदेश यात्रा के प्रति उन पर कई धार्मिक बधन लगे थे। सेना की नई व्यवस्था के अनुसार उनकी इन मान्यताओं पर आघात हुआ था।

ईसाई धर्म प्रचारक सार्वजनिक स्थानो मे ईसाई धर्म का प्रचार करते थे। यदि वे केवल ईसाई धर्म के सिद्धातो की ही चर्चा करते तो किसी को आपत्ति नही होती। लेकिन वे अपने प्रचार मे हिंदू एव मुस्लिम धर्म के प्रति कई अप्रिय एव कटु बातें कहा करते थे। सर्वसाधारण की यह भावना थी कि ईसाई प्रचारकों पर कंपनी धन व्यय करती है, और राज धर्म होने के कारण उसे विभिन्न अधिकारियो से कुछ न

कुछ सरक्षण अवश्य प्राप्त था। अब किसी को इसमे सशय नही रह गया था कि फिरगी उनका धर्म नष्ट करने पर तुले हुए है। चर्बी वाले कार्तूस ने इस असतोष मे विस्फोट का काम किया। फील्ड मार्शल लार्ड रोबर्ट्स ने लिखा है कि कार्तूस वास्तव मे गाय और सूअर की चर्बी से बनाए जाते थे।

सिपाहियो की धार्मिक भावना का कुछ भी विचार नही किया गया था। यह विश्वास करना कठिन है कि कार्तूस बनाने

चर्बी वाले कार्तूस ने असतोष मे विस्फोट का काम किया

वालो से कोई भूल हुई हो । उस विषय मे एक तत्कालीन तुकबदी उल्लेखनीय है .

न ईरान ने किया, न शाह रूस ने,
अग्रेज को तबाह किया कार्तूस ने ।

अवध के चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेन्स ने उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड केनिग को ६ मई, १८५७ को एक पत्र लिखा—"पिछली रात्रि को अवध तोपखाने के एक जमादार के साथ मैने वातचीत की । मुझे उसके इस विश्वास पर आश्चर्य हुआ कि पिछले दस वर्ष से सरकार समस्त अवध-वासियो को जबरन या धोखा देकर धर्म-परिवर्तन के कार्य मे लगी हुई है । उसने हमारे किसी भी काम की सराहना नही की । वह बार-वार यही दुहराता रहा कि मै तुम से वही कह रहा हूँ, जो सब कहते है ।"

अग्रेजो के प्रति घृणा और असतोष की भावना ने बदला लेने की इच्छा को पुष्ट किया । सेना मे इस समय अग्रेज और भारतीय सिपाहियो का अनुपात एक और छ का था जो सेना मे अनुशासन बनाए रखने की दृष्टि से ठीक नही था । इस विषय मे एक गवर्नर जनरल ने शासन को चेतावनी दी थी कि भारत मे अग्रेज और भारतीय सैनिको का अनुपात एक और तीन का अवश्य रहना चाहिए । सिपाहियो मे यह भावना घर कर गई थी कि उन्होने ही अग्रेजो के लिए सपूर्ण

भारत को जीता है । फिर क्या उनमें अब वही शक्ति नही थी कि वे विदेशी सत्ता को उखाड फेके, और अपने धर्म की रक्षा करे ।

इस सकल्प को पूरा करने के लिए इस भविष्यवाणी ने भी योग दिया कि प्लासी के युद्ध के सौ वर्ष वाद भारतवर्ष मे अग्रेजी शासन का अत हो जाएगा। अधविश्वासियों को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब भारतवर्ष मे अग्रेजो के इने-गिने दिन ही रह गए है ।

अग्रेजो ने नवाबी सेना के साठ हजार सैनिको की छँटनी कर दी थी । उनमे से बहुत कम सैनिको को सशस्त्र पुलिस मे नौकरी मिल पाई थी । नवाबी सेना से निकाले हुए ये सैनिक बेरोजगार हो गए थे । वे अपने गाँवो को लौट गए थे और अपने साथ अग्रेजो के प्रति घृणा एव दुर्भावना लेते हुए गए थे । अवध के प्रत्येक ग्राम मे ऐसे व्यक्ति मिल सकते थे, जो विदेशी सत्ता के शत्रु थे, और जिन्हे व्यक्तिगत रूप से विदेशी शासन द्वारा हानि पहुँची थी । वे विदेशी राज्य के प्रति जहर उगला करते थे, और अपने सीमित क्षेत्र मे विदेशी सत्ता के विरुद्ध प्रचार करते थे । बस समय आने पर उन्होंने अवध की जनता को सगठित किया, और सक्रिय रूप से अग्रेजो के विरुद्ध हो गए ।

जनता मे असंतोष बढने के कई और कारण भी थे । नई

शासन व्यवस्था मे समस्त ऊँचे पद अग्रेजो के लिए सुरक्षित हो गए थे। भारतीयो को केवल निम्न पद ही दिए जाते थे। इससे योग्य भारतीयो मे विदेशी शासन के प्रति असतोष फैला।

नवावी सरक्षण मे कारीगरो की रोजी अच्छी चलती थी परतु विदेशी शासको की रुचि भिन्न थी जिससे कारीगर बेकार हो गए और भूखो मरने लगे। उनकी वनाई हुई वस्तुओ के लिए खरीदार न रहे। नए शासन ने उनकी किसी भी प्रकार से सहायता नही की।

नवावी शासन व्यवस्था मे जमीदारो का अपना विशिष्ट स्थान था। वे राज्य के लिए भूमि कर वसूल करते थे, और अपने क्षेत्र मे सुव्यवस्था भी वनाए रखते थे। अग्रेजो ने अवध मे जब भूमि का बदोवस्त शुरू किया तो वे यह मान कर चले कि भूमि का असली मालिक किसान था और जमीदारो ने जालसाजी से उनके अधिकारो को ले लिया था। इस कारण जमीदारो के कई गॉव छिन गए जिससे वे अग्रेजो के कट्टर शत्रु बन गए।

मौलवी अहमदउल्लाह शाह क्रातिकारियो के प्रमुख नायक थे। वह दक्षिण के रहने वाले थे लेकिन क्राति के समय वे अवध मे प्रचार कार्य करते थे। उन्होने अवध मे घूम-घूम कर अग्रेजो के विरुद्ध क्राति कराने के लिए हिदुओ एव

मुसलमानो को ललकारा था। उन्होंने चेतावनी दी थी कि समय आ गया है जब वे अपनी दासता की बेडियो को काट डाले या हमेशा के लिए दास बने रहे। वे ओजस्वी वक्ता थे। अवध के जनजागरण मे उनका प्रमुख हाथ था। उनकी धारणा थी कि सशस्त्र विद्रोह की सफलता के लिए सेना से अधिक जनता के सहयोग की आवश्यकता है। वे फिरगियो के विरुद्ध धर्म युद्ध की घोषणा करते फिरते थे।

सन १८५७ का मई मास था। अवधवासी अग्रेजो द्वारा स्थापित व्यवस्था से खिन्न एव दुखी थे। ऐसा कोई भी वर्ग नही था जो उनसे सतुष्ट हो। सर्वत्र असतोष व्याप्त था। असतुष्ट व्यक्ति प्रचार कर रहे थे। जनमत का सगठन हो रहा था। तरह-तरह की अफवाहे फैल रही थी। नगर मे हिदी, उर्दू और फारसी मे पोस्टर लगाए गए थे जिनमे हिदुओ और मुसलमानो को ललकारा गया था कि स मय आ गया है कि फिरगियो का विनाश कर दिया जाए। नगर के कई भागों में गुड्डो को विलायती कपडे पहनाकर सार्वजनिक स्थलों में तलवार से उनका सिर काट दिया गया था। इससे लोगों मे नया जोश पैदा हो जाता था और वे अग्रेजों को मारने के लिए लालायित रहते थे।

मई २१ को सर हेनरी लारेन्स ने लिखा कि नगर मे शाति है, लेकिन जनता में असतोष है। यदि दिल्ली को तुरत विद्रोहियो से वापस न ले लिया गया तो लखनऊ मे अधिक

समय तक शाति बनाए रखना कठिन होगा।

कपनी के कर्मचारी भी भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने लगे थे। उनमे वह योग्यता नही थी जो क्लाइव के समय मे थी, जब क्लर्क एक हाथ मे कलम और दूसरे हाथ मे तलवार लेकर फैक्ट्री की रक्षा करता था। इस समय के अग्रेजो मे यह योग्यता नही रह गई थी कि वे क्राति का सामना कर पाते। बिगड़ती हुई स्थिति को वे सही प्रकार से न तो समझ पाए और न ही समय आने पर उसका सामना कर पाए।

इस प्रकार अवध की क्राति ने जन-आदोलन का रूप लिया और अवधवासियो की आशा और सघर्ष का केद्र लखनऊ रेजीडेन्सी वनी।

वातावरण क्षुब्ध हो गया था। जनता मे गहरा असतोष फैला था। अग्रेजी राज्य को उखाडने के लिए वे दृढ संकल्प थे। स्थिति बिगड़ गई थी। बस, आवश्यकता थी केवल एक चिनगारी की।

क्रांति की चिनगारी

अवध की क्राति को प्रारभ करने के लिए प्रभावोत्पादक घटना का होना आवश्यक था। ऐसी घटना जो सर्वसाधारण का ध्यान अपनी ओर खीच ले, और अवध की विस्फोटक स्थिति को चिनगारी प्रदान कर सके। ऐसी घटना चिनहट का युद्ध था जिसमे क्रातिकारियो ने अग्रेजो को बुरी तरह से हराया था।

जून की विषम गर्मी थी। दिन भर गर्म लू चलती थी। रात की दम घुटाने वाली गर्मी मे सोना कठिन हो गया था। जगह-जगह तरह-तरह की अफवाहे फैल रही थी। वातावरण मे बेचैनी थी—कोई नही कह सकता था कि कब क्या हो जाए। आखिर वह दिन आं ही गया — ३० जून १८५७, जब क्रातिकारी और अग्रेज एक-दूसरे से लड़ ही बैठे।

अवध के चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेन्स को युद्धकालीन

परिस्थिति मे ब्रिगेडियर का सैनिक पद भी दे दिया गया था। इस प्रकार वह अवध क्षेत्र का सर्वोच्च सैनिक एव असैनिक अधिकारी था, और विषम स्थिति का सामना करने के लिए स्वतन्त्रतापूर्वक निर्णय ले सकता था। हेनरी लारेन्स स्वय योग्य व्यवस्थापक और दूरदर्शी व्यक्ति था, किंतु उसका सैनिक अनुभव कम था। रेजीडेन्सी की रक्षा के लिए वह स्वय वहाँ आकर रहने लगा था।

जून २६, लारेन्स को समाचार मिला कि चिनहट मे क्रांतिकारियो की सेना एकत्र हो गई है। उस सेना मे ५०० सैनिक, ५० घुडसवार और एक छोटी तोप थी। लारेन्स ने भी एक सेना एकत्र की, जिसमे ३०० अग्रेज सैनिक, १७० भारतीय पैदल सैनिक, ८४ भारतीय घुडसवार सैनिक, ३६ स्वयसेवक घुडसवार, दस छोटी तोपे और एक बडी तोप थी, जिसे एक हाथी खीचता था।

सर हेनरी लारेन्स के लिए यह एक सुनहरा अवसर था। यदि वह क्रातिकारियो को हराने मे सफल हो गया, तो प्रारभ मे ही क्रातिकारियो का हौसला पस्त हो जाएगा, और अग्रेजी शक्ति की अजेयता का डका बज उठेगा। अत. यह निश्चय किया गया कि तीस जून को प्रात काल, पौ फटते ही अग्रेज फौज चिनहट की ओर प्रस्थान करेगी।

लेकिन कुव्यवस्था के कारण सेना तब रवाना हो सकी जब

सूर्य काफी चढ चुका था। सिपाहियो को सुबह नाश्ता भी न मिल पाया था। तीन मील चलकर सेना कुकरेल नदी के पुल पर पहुँची। सैनिको की एक टोली को शत्रु की गति-विधि का परिचय पाने के लिए आगे भेजा गया, किंतु वे क्रातिकारियो के बारे मे कोई सूचना न दे पाए। कुछ राह-गीरो ने भी यही समाचार दिया कि चिनहट में कोई क्राति-कारी नही है। ऐसी स्थिति में लारेन्स को लौट जाना चाहिए था। फिर भी वह आगे बढा। सभवत वह चिनहट की जनता को अग्रेजी शक्ति से प्रभावित करना चाहता था।

बडी तोप जिसे हाथी खीचता था

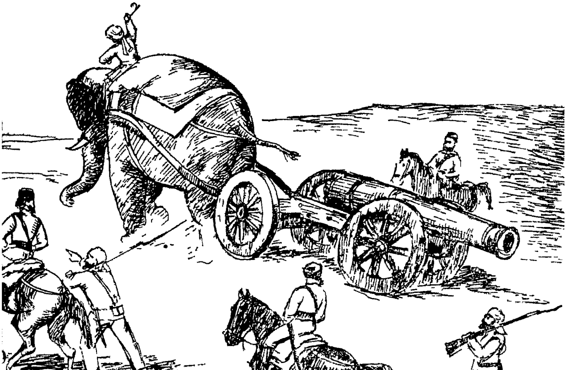

दिन काफी चढ चुका था । सूर्य सिर पर आ गया था । जून की विकट धूप थी । दोपहरी की धूप मे कदम-कदम चलना कठिन था । अपनी कसी हुई वर्दियो मे सैनिक पसीने से लथ-पथ हो गए थे । ज्योही सडक के मोड को पार कर अंग्रेजी सेना आगे बढी, उसने अकस्मात अपने को क्रातिकारियो से घिरा पाया । क्रातिकारी सेना के सेनानायक बरकत अहमद ने वडी योग्यता से व्यूह रचना की थी । उसने अपनी सेना को आम के पेडो के पीछे इस भॉति छिपाया था कि न तो अंग्रेजो के स्काउट ही उनका पता लगा सकते थे और न राहगीर ही उनको देख सकते थे । अंग्रेजो को क्रातिकारी सेना के अस्तित्व का तब पता चला, जब वह बुरी तरह से घिर गई। अपने आपको ऐसी स्थिति मे पडा देख अंग्रेजी सेना निरुत्साहित हो गई, और उसमे बुरी तरह से भगदड मच गई । घिरी हुई सेना के पास बस एक ही चारा था कि वह भाग कर अपनी जान बचाए ।

वरकत यह भली भॉति जानता था कि अंग्रेजी सेना भागकर कुकरेल के पुल से ही लौटेगी । उसके लिए उसने पहले से ही घुडसवार सेना तैनात कर रखी थी, जो समय आते ही अंग्रेजी सेना को पुल पर घेर लेती । परतु अंग्रेजो के स्वय-सेवक घुडसवारो ने प्रबल आक्रमण किया जिससे पुल का रास्ता साफ हो गया और अंग्रेजी सेना वापस लौटने मे सफल हो गई । जिस सुदरता के साथ बरकत अहमद ने

अंग्रेज़ी सेना बुरी तरह घिर गई

चिनहट युद्ध की योजना वनाई थी, यदि उसी दक्षता से वह कार्यान्वित हो जाती तो एक भी अंग्रेज सैनिक उस दिन बचकर रेजीडेन्सी न लौट पाता।

क्रांतिकारियो ने भागती हुई अंग्रेजी सेना का पीछा किया और उन पर गोलो की मार जारी रखी। जगह-जगह अंग्रेज़ सैनिकों की लाशे विखर गई थी। उनके हथियार और साज-सामान सब विखरे पडे थे। कुछ गोली लगने से

गिर पड़े थे तो कुछ विना गोली के ही जून की तपती धूप से विलबिलाकर गिर पडे थे । कई सैनिक प्यास और लू लगने से ही मर गए । कई स्थानो पर मार्ग मे इन थके-माँदे, भागते हुए प्यासे सैनिको को ग्रामीण महिलाओ ने पानी पिलाया जिससे उनमे कुछ जान आई और वे रेजीडेन्सी की ओर भाग सके ।

परतु अग्रेजी सेना का पीछा करते हुए क्रातिकारी गोमती पर बने पत्थर और लोहे के पुल को पार न कर सके ।

क्रातिकारियो ने भागती हुई सेना का पीछा किया

रेजीडेन्सी से लोहे के पुल पर भयकर गोलाबारी की गई थी, और मच्छी भवन से पत्थर के पुल पर। मच्छी भवन उस स्थान पर था, जहाँ आज लखनऊ मेडिकल कालेज है।

क्रातिकारी पुलो को तो पार न कर सके किंतु उन्होने गोमती नदी को विभिन्न स्थानो से पार कर लिया और शाम होने तक उन्होने रेजीडेन्सी को पूरी तरह से घेर लिया। निकटस्थ स्थानो मे पहुँच कर उन्होने रेजीडेन्सी मे रहने वालो पर गोलाबारी प्रारभ कर दी।

अग्रेजो की हार, उनका पीछा किया जाना और रेजीडेन्सी का घेरा इस तेजी से हुआ कि कुछ समय के लिए अंग्रेज अपनी सुध-बुध खो बैठे। उनकी समझ मे न आया कि यह क्या हो गया है और उनको अब क्या करना है। रेजीडेन्सी के रहने वालो मे हारी हुई क्षत-विक्षत सेना के लौटने से भय और निराशा फैल गई। एक अग्रेज महिला लेडी इगलिस ने लिखा है—

"तुम समझ सकते हो कि सेना के हारे हुए व्यक्तियो के आने से किस सीमा तक निराशा हुई होगी। मैने उनका लौटना ध्यानपूर्वक देखा था। वह दु ख देने वाला दृश्य था। वे किसी व्यवस्थित ढग मे नही लौट रहे थे। वे गिरते-पडते आ रहे थे। कोई घोडे पर सवार था, तो कोई पैदल आ रहा था और कोई-कोई अन्य व्यक्तियो

का सहारा लेकर आ रहा था। कुछ घायल तोपो पर चढे आ रहे थे, और कुछ रेजीडेन्सी पहुँचते-पहुँचते थकान और घावो के कारण हमारी चौकी से आध मील की दूरी पर ही गिर पडे थे। मै नदी के पार क्रातिकारियो और उनकी वदूको का धुआँ स्पष्टतया देख पा रही थी। चिनहट की पराजय ने रेजीडेन्सी का घेरा समय से पूर्व करवा दिया था, जवकि उसकी किलेबदी मे भी वहुत सुधार करने वाकी थे।''

यदि आक्रमणकारी उसी दिन रेजीडेन्सी पर धावा वोलते, तो यह सभव था कि वे खाइयो पर कब्जा कर लेते। लेकिन क्रातिकारी इस स्थिति का लाभ न उठा पाए।

चिनहट के युद्ध के फलस्वरूप क्रातिकारियो के हाथ पाँच छोटी तोपे व एक वडी होविट्जर तोप लगी, जिसे हाथी खीचता था। अग्रेजो के २८३ सैनिक मारे गए थे और ७८ सैनिक घायल हुए थे।

उस रात्रि सर हेनरी लारेन्स ने रेजीडेन्सी से कानपुर के अग्रेजी सेना के कमाडर हेवलाक को इस आशय का पत्र लिखा—

''आज सुवह हम शत्रु से लडने के लिए चिनहट गए और पराजित हुए। हमारी पाँच तोपे शत्रु के हाथ लगी। क्राति-कारियो ने हमारा पीछा किया और रेजीडेन्सी को पूर्णतया घेर लिया। क्रातिकारियो का उत्साह वहुत वढा हुआ है, और

कुछ अग्रेज हतोत्साहित है। कल के मुकावले आज हमारी स्थिति दस गुना खराव है। वास्तविकता यह है कि हमारी स्थिति शोचनीय है। यदि पद्रह-वीस दिन मे हमे सहायता नही मिलती है तो हमे वहुत-सा राशन छोडना पडेगा और बारूद को भी जलाना पडेगा। इससे अधिक समय हम क्रातिकारियो के सम्मुख टिक न पाएँगे।''

कर्नल इगलिस के समान अनुभवी सैनिक अधिकारी के रहते हुए भी, स्वय सर हेनरी लारेन्स ने चिनहट के युद्ध मे नेतृत्व किया था। ऐसा उन्होने क्यो किया कहा नही जा सकता। सभवत· हेनरी लारेन्स मे इगलिस की अपेक्षा आत्मविश्वास अधिक था। वह क्रातिकारियो को युद्ध मे हराने के लिए लालायित था और उनको सवक सिखाना चाहता था। रणनीति के अनुसार भी सबसे अच्छा बचाव पहले शत्रु पर चोट करना था। शत्रु को करारी हार देने के दो अन्य लाभ थे। क्रातिकारियो का मनोवल टूट जाता और अग्रेजो के पक्ष मे लोगो का हौसला बढ जाता। वे लोग जो निश्चय नही कर पा रहे थे कि किसका साथ दे, अब विजयी पक्ष का साथ देने के लिए वाध्य हो जाते। क्राति-कारियो को हराकर वह आसपास के क्षेत्र मे अग्रेजी शक्ति का प्रदर्शन कर सकता था, और ब्रिटिश शक्ति की धाक जमा सकता था। लेकिन पासा उल्टा पडा। वह बुरी तरह हारा। इस हार का समाचार बहुत तेजी से सारे अवध मे

जगल की आग की तरह फैल गया ।

परिणाम यह हुआ कि दोनो दल भावी युद्ध की तैयारियाँ करने लगे । अग्रेज अपने बचाव के लिए चितित थे और क्रातिकारियो का उत्साह इतना वढ गया था कि वे अग्रेजो को देश से निकाल कर ही मानेगे । लखनऊ रेजीडेन्सी अवध की जनक्राति का केद्र-बिदु वन गई ।

उतिस

युद्ध की तैयारी

क्राति से आठ माह पूर्व ही सर हेनरी लारेन्स सजग और सचेष्ट हो गया था। उसे भावी सकट का आभास हो चला था। अवधवासी अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध होने लगे थे। उसने चुपके-चुपके लबे युद्ध की तैयारी प्रारभ कर दी थी। लारेन्स अवध मे अपनी सीमित शक्ति से भी भली भाँति परिचित था। यह असभव था कि वह क्रातिकारियो से खुलकर युद्ध करता। उसे तो रेजीडेन्सी मे रहकर ही रक्षा करनी थी।

लखनऊ मे कोई दुर्ग नही था जहाँ अग्रेजी सेना, असैनिक अग्रेज अधिकारी और उनके परिवार सुरक्षित रह पाते। लारेन्स के सामने सबसे बडी समस्या ऐसे स्थान को चुनना था, जो सामरिक दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त होता, और जिसकी सरलता से क़िलेबदी की जा सकती। उसे

सबसे उपयुक्त स्थान रेजीडेन्सी और मच्छी भवन प्रतीत हुए। ये दोनो स्थान गोमती नदी के दाएँ किनारे पर, एक मील के अतर पर ऊँचे टीलो पर बसे थे। मच्छी भवन अब नही रहा। उसके स्थान पर लखनऊ मेडिकल कालेज बन गया है। मच्छी भवन सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। उसके विषय मे कहा जाता था कि जिसका मच्छी भवन पर अधिकार है, उसका लखनऊ पर भी अधिकार है। रेजीडेन्सी और मच्छी भवन से नगर को जोडने वाले दोनो प्रमुख पुलो पर निगरानी रखी जा सकती थी, और शत्रुओ के आवागमन पर नियत्रण रखा जा सकता था। उसने निश्चय किया कि अग्रेज रेजीडेन्सी और मच्छी भवन से क्रातिकारियो का सामना करे, किंतु सुविधा, सुरक्षा और विस्तार की दृष्टि से रेजीडेन्सी अधिक उपयुक्त स्थान था। यहाँ कई भवन थे जिनमे सेना एव शरणार्थियो को रहने का स्थान मिल सकता था।

चिनहट की हार के पश्चात सर हेनरी लारेन्स ने अपने सीमित साधनो का विचार कर मच्छी भवन को खाली करने का निश्चय किया। क्रातिकारी उसका उपयोग न कर पाएँ इसलिए उस भवन को बारूद से उडा दिया गया। उसने अपनी समस्त शक्ति को रेजीडेन्सी मे सचित कर लिया था। वह अवध मे अग्रेजी सत्ता का प्रतीक थी और क्रातिकारियो की आँख की किरकिरी बन गई थी। रेजीडेन्सी में लबे

घेरे से वचने के लिए समस्त सुविधाएँ जुटा ली गई थी। यदि हेनरी लारेन्स ने दूरदर्शिता से काम न किया होता, तो यह सभव था कि घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को कुछ ही दिन पश्चात भुखमरी के कारण आत्मसमर्पण करना पडता।

रात्रि के अधकार मे कई माह तक अनाज, अस्त्र-शस्त्र, बारूद और लडाई का अन्य सामान जमा किया गया था। पशु भी पर्याप्त सख्या मे एकत्र किए गए थे, ताकि घेरे मे आए हुए व्यक्तियों को मास की कमी न पड़े। तीन माह के लिए पशुओ के लिए चारा भी इकट्ठा किया गया था। साथ-साथ रेजीडेन्सी की किलेबदी भी की गई थी। रेजीडेन्सी टीले पर थी, जिसके चारों ओर ढालू भूमि थी। टीले के ऊपरी मैदानी भाग की सीमा पर, जहाँ से ढालू भूमि प्रारभ होती है, किलेबदी की गई थी। जगह-जगह गहरी खाइयाँ खोदी गई थी। ऊँची-ऊँची दीवारे उठाई गई थी। पुरानी दीवालों की मरम्मत की गई और बुर्ज वनाए गए। रेजीडेन्सी के उत्तर और दक्षिण मे तोपो के लिए जगह वनाई गई। प्रति-रक्षा के लिए मिट्टी की दीवाले बनाई गई। तखतो पर कीले गाडी गई, और नुकीले भाग को ऊपर कर उन्हे ढालू जमीन मे ठोक दिया गया, ताकि घुडसवार सेना आक्रमण न कर सके। ढालू भूमि मे गड्ढे किए गए और उनमे नुकीले खूँटे गाड दिए गए। इन वचाव के साधनों से आक्रमण होने पर तोपचियो को समय मिल सकता था और वे तोपो को खीच

कर आक्रमण के स्थान पर ला सकते थे।

ढालू भूमि पर कुछ खडहर एव झोपडियाँ थी जिनमे क्रातिकारी शरण ले सकते थे। वे दीवालो पर छेद कर रेजीडेन्सी पर गोलावारी भी कर सकते थे, और यहाँ से रेजीडेन्सी के अदर सुरगे वना सकते थे। अत तीन हजार मजदूरो को वारूद और गैती-फावडा देकर इनको साफ करने मे लगा दिया गया। कुछ वृक्ष भी निर्दयतापूर्वक काट दिए गए। सब से अधिक खतरा गोमती के किनारे के विस्तृत मैदान से था, जहाँ बडी सख्या मे क्रातिकारी आक्रमण के लिए एकत्र हो सकते थे। इसलिए इस तरफ सात फुट ऊँची मिट्टी की दीवाल वना दी गई थी, जिसको मजबूत करने के लिए दीवाल के अदर लकडियाँ गाड दी गई थी। झब्बो मे मिट्टी भरकर उन्हे पुश्तो के अदर कर दिया गया था।

बगाल सेना के अवधी सैनिको की पलटने लखनऊ मे ही थी। वे भी अवध के व्यापक क्षोभ से प्रभावित थी। अत हेनरी लारेन्स ने सितबर १८५६ को अधिकारियो को लिखा कि लखनऊ से अवधी सैनिको की पलटने सिख सैनिको से वदल दी जाएँ। इसका परिणाम यह हुआ कि सिख सैनिको ने अग्रेजो का साथ अत तक दिया।

अवध के विभिन्न भागो से अग्रेज अधिकारी एव उनकी स्त्रियाँ और बच्चे रेजीडेन्सी मे आश्रय लेने के लिए आ गए

थे । लखनऊ के ला मार्टिनियर कालेज के पद्रह छात्र भी यहाँ आए थे । प्रात काल सब स्वस्थ असैनिक व्यक्तियो को कवायद कराई जाने लगी, और उन्हें शस्त्रो के प्रयोग की दीक्षा भी दी गई । ला मार्टिनियर कालेज के विद्यार्थी रेजीडेन्सी के दक्षिण-पूर्वी भाग की चौकी मे तैनात किए गए थे । स्थिति विगडने पर वे भी युद्ध मे हाथ बॅटाते थे । उनका काम विशेषत रेजीडेन्सी के विभिन्न भागो मे समाचार लेकर जाना था । युदध काल मे केवल दो विद्यार्थी घायल हुए थे ।

अग्रेजो को कुशल नेतृत्व प्राप्त था । देश के विभिन्न भागों में लडे सैनिक अधिकारी एक दूसरे की गतिविधि और कठिनाइयों से परिचित थे । समय आने पर वे एक दूसरे की सहायता के लिए आ जाते थे ।

क्रातिकारी दल मे आत्मविश्वास अधिक था । जनता अग्रेजी शासन से छुटकारा पाने के लिए दृढ सकल्प थी । अवध के विभिन्न वर्ग के लोगो मे विदेशी शासन के प्रति घोर असतोष व्याप्त था ।

क्रातिकारियो को एक झडे और एक नेता के नाम की आवश्यकता थी । अवध का अतिम नवाव वाजिद अली शाह कलकत्ते मे नजरबद था । अत सैनिक समिति ने वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल के पुत्र ब्रिजिस कद्र को

सिहासन पर बैठाया। ब्रिजिस कद्र की आयु केवल ग्यारह वर्ष की थी। अत राजकाज हजरत महल की देखरेख मे होने लगा। ब्रिजिस कद्र ५ जुलाई '५७ को सिहासनारूढ

बेगम हजरत महल

हुआ। रेजीडेन्सी का घेरा डालने वाले क्रातिकारियो ने अग्रेजो का साथ देने वाले हिदुस्तानी सिपाहियो को सदेश भेजा—

"हमने अपने राजा को ताज पहना दिया है। फिरगियो का

पेतिस

शासन अव समाप्त हो गया है। हम जल्दी ही आपके बेली गार्ड मे पहुँचेगे।''

इस सदेश का क्या प्रभाव हुआ, कहा नही जा सकता। यह अवश्य है कि अवध के समस्त असतुष्ट व्यक्ति नवावी झडे के नीचे आ गए थे। अवध का असतोष कपनी के अवधी सैनिको मे तो फैल ही चुका था। सैनिक स्वय भी सैनिक प्रशासन से असतुष्ट थे। कई प्रचारक असतोष को और अधिक भडका रहे थे। कपनी के अवधी सैनिक लगभग डेढ लाख थे। इस सख्या की वृद्धि नवाबी सेना के निकाले हुए सैनिको ने की जो पचास हजार के लगभग थे और जिनकी रोजी नए शासन ने छीन ली थी। समय आने पर अवधी

अपने अगरक्षको के साथ बिरजिस कद्र

सैनिको ने विद्रोह किया और उनमे से अधिकाश लखनऊ के युद्ध मे शामिल होने के लिए चले आए। वे अपने साथ सेना मे से अस्त्र-शस्त्र, तोप, गोले और बारूद भी लेते आए।

अग्रेजो के प्रशिक्षित सैनिक, उनके ही अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद और उनके द्वारा ही उत्पन्न असतोष जब गहरे असतोष मे परिवर्तित हुआ तो भारतीय प्रचारकों ने इसको विद्रोह के रूप मे परिणत कर दिया। इसमे मौलवी अहमद उल्लाह शाह का प्रयास उल्लेखनीय है। अवध की जन-जागृति मे उनका विशेष हाथ था।

अवध मे जमीदारो की सख्या काफी थी। वे स्वय अपने निजी सैनिक रखते थे और अपनी जमीदारी मे पूरा रौब और किसानो पर अधिकार रखते थे। नए बदोवस्त के कारण कई जमीदारो के गॉव छिन गए थे। उनके अधिकारो मे कमी आ गई थी। उन्होने भी क्रातिकारियो का साथ दिया। उनके पास तीर चलाने वाले पासी थे जो सुरग लगाने मे भी प्रवीण थे।

लखनऊ रेजीडेन्सी मे अवध की जनक्राति का केद्र बन गया था। जगह-जगह से अग्रेजों के शत्रु खिच-खिच कर यहाँ आने लगे थे। घिराव करने वाले इन लोगो का जमघट आधा लाख तक पहुँच गया था।

अवध की क्राति को दवाने के लिए कानपुर की तरफ से ही अंग्रेजी सेना आ सकती थी। अत कानपुर और लखनऊ के मध्य क्रातिकारियों ने लगभग बारह चौकियाँ स्थापित कर रखी थी।

क्रातिकारियो की एक बहुत वडी कमी थी। वे दूरदर्शी नही थे। निकटस्थ क्षेत्र के क्रातिकारियो से भी उनकी कोई सह-योजना न थी और न ही उनमे किसी प्रकार का आपसी समझौता था। कठिन स्थिति के आने पर उन्होने एक दूसरे की सहायता भी नही की। जिसका परिणाम यह हुआ कि किसी केंद्रीय व्यवस्था के न होने के कारण वे एक-एक करके अलग-अलग पराजित हुए।

रेजीडेन्सी के घेरे में जीवन

चिनहट के युद्ध के पश्चात रेजीडेन्सी चारों ओर से घिर गई थी। वह अवधवासियो की आशा का केद्र, और घेरे मे आए हुए अंग्रेजों के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गई थी। रेजीडेन्सी के घेरे मे लगभग दो हजार व्यक्ति थे जिनमें लगभग ६२७ अग्रेज सैनिक, ७०० भारतीय सिपाही, ७०० कुली और ६०० औरतें और बच्चे थे। सैनिक एव वयस्क व्यक्तियो को कठिन सैनिक कार्य-भार सँभालना पड़ता था। कभी-कभी तो उन्हें सोलह घटे तक लगातार ड्यूटी करनी पडती थी। वे बदूक को बगल मे रखकर वर्दी पहने ही सो जाया करते थे। स्थिति ही इतनी विकट थी। जरा सी ढील देने पर क्रातिकारी रेजीडेन्सी पर कब्जा कर लेते और घेराव मे आए हुए व्यक्तियो को मौत के घाट उतार देते। बचाव करने वाले व्यक्तियो की सख्या सीमित थी। प्रत्येक व्यक्ति को हर समय ड्यूटी के लिए लैस रहना पडता था।

्ष विभिन्न चौकियो मे सुरक्षा कार्य मे सलग्न रहते थे और अपने वाल-वच्चों को यदा कदा ही मिल सकते थे। औरतो और वच्चो को गोलो की मार से सुरक्षित रखने के लिए, उन्हे रेजीडेन्सी के तहखाने में स्थान दे दिया गया था। तहखाने मे सूर्य का प्रकाश कठिनता से प्रवेश पा सकता था, और हवा के प्रवाह के लिए भी कोई साधन नही था। यहाँ औरते और बच्चे खचाखच भरे हुए थे। रेजीडेन्सी के क्षेत्र मे स्थान के अभाव के कारण कोई और प्रबध भी नही किया जा सकता था। यह भी सभव नही था कि सक्रामक रोगो के फैलने पर वीमारों को अलग स्थान दिया जा सके।

क्रातिकारी दिन और रात रेजीडेन्सी पर गोलावारी कर रहे थे। विभिन्न भवनो की दीवालो पर गोलो की मार के वने निशान इतने अधिक और पास-पास थे कि उनकी तुलना चेचक से पीडित व्यक्ति के शरीर के दागों से की जा सकती थी। कब, कौन और किस समय गोली का शिकार हो जाए—यह घबराहट सदा वनी रहती थी। प्रतिदिन कई व्यक्ति गोली के शिकार होते थे। डायरी लिखने वालों को प्रतिदिन एक न एक दोस्त की मौत दर्ज करनी पड़ती थी। सात जुलाई को इतिहासकार रीज ने लिखा कि आज तक हमारे बहुत से लोग मारे गए। प्रतिदिन पद्रह से वीस व्यक्ति तक मारे गए है। अधिकाश रायफल और बदूको की गोलियो के शिकार हुए है। वहुत से व्यक्तियो की मृत्यु एक अफ्रीकी

की गोलियों से हुई है। उसका निशाना शायद ही कभी खाली जाता हो। यह अफ्रीकी नवाब वाजिद अली शाह की सेवा मे था, और अपने अचूक निशाने के कारण रेजीडेन्सी के निवासियों द्वारा 'अचूक निशाने वाला बौब' ! कहा जाने लगा था।

वास्तविकता यह थी कि रेजीडेन्सी के ऊपर मौत हर समय मॅडरा रही थी। वह कब किसको उठा ले जाए ! अस्पताल मे भी सुविधाएँ इतनी कम थी कि घायल व्यक्ति के अच्छे होने की कोई आशा नही की जा सकती थी। ब्रिगेड मैस को अस्पताल बना दिया गया था। अस्पताल मे बिछावन के लिए तबुओ को काट कर कपडे बनाए गए थे। घायल के आने पर उसकी कमीज को फाडकर ही पट्टियाँ बना दी जाती थी। क्लोरोफार्म के खतम हो जाने के कारण शल्य चिकित्सा के समय घायल व्यक्ति बुरी तरह चीखता और चिल्लाता था। कुछ व्यक्ति उसके सिर, हाथ, पैर और शरीर को दबाए रखते थे। दवा की कमी के कारण खुले घावो मे कीडे उगने लगते थे। रेजीडेन्सी मे जितने घायल व्यक्तियो के अग काटने पडे, उनमे से एक भी न जी पाया। उस समय तक कीटाणु नाशक शल्य औषधि का आविष्कार भी नही हुआ था।

गोलाबारी इतनी भयकर थी कि कब्रिस्तान मे भी मृतक आसानी से दफनाए नही जा सकते थे। क्रातिकारियो की

गोलियाँ वहाँ भी सक्रिय रहती थी। रात्रि के अधकार मे जल्दी-जल्दी, शत्रुओ से बचकर मृतको की अत्येष्टि क्रिया की जा सकती थी। कब्रो को गहरा नही खोदा जा सकता था। छिछली कब्रो मे मरे हुए व्यक्ति गाड दिए जाते थे। कब्रिस्तान मे चारो ओर दुर्गध ही दुर्गध फैल गई थी। वहाँ खडा रहना कठिन था। स्थिति दिन पर दिन विगडती गई।

हेनरी लारेन्स की मृत्यु के कारण रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो का नेता चल वसा था। इससे घिरे हुए व्यक्तियो का मनोवल कम हो गया था। हेनरी लारेन्स मरते समय बुदबुदाया था कि मैने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की है। रेजीडेन्सी के कब्रिस्तान मे उसकी कब्र बनी है जिस पर लिखा है—

यहाँ चिर निद्रा मे लेटा है सर हेनरी लारेन्स,
जिसने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की थी।

रेजीडेन्सी का घेरा अभेद्य हो गया था। इसलिए रेजीडेन्सी के लोगो का वाह्य ससार से कोई सबध नही रह गया था। उन्हे उसी सामान और सुविधाओ पर जीवन बसर करना था, जिन्हे सर हेनरी लारेन्स ने एकत्र कर रखा था। ताजी तरकारियों का अभाव विशेष रूप से खटकने लगा था। रेजीडेन्सी मे सूखे रोग से इतने अधिक व्यक्ति पीडित हुए थे कि उसे लखनऊ रेजीडेन्सी की वीमारी कहा जाने

लगा था। कई बच्चे दूध की कमी के कारण असमय ही काल के मुँह मे चले गए थे। जुलाई २२ से बच्चो को जौ का दलिया दिया जाने लगा था। राशन मे क्रमश कटौती की जाने लगी थी। नमक का मिलना भी कठिन हो गया था। वस्त्रो के अभाव मे मरे हुए व्यक्तियो के कपड़े पहने जाने लगे थे। तवाकू मिलना कठिन था। विभिन्न प्रकार की पत्तियो का प्रयोग तवाकू के रूप मे होने लगा था।

युद्ध और लबे घेरे की अनिश्चितता से घवरा कर रेजीडेन्सी के नौकर भाग निकले थे। इस काल मे अग्रेज नवाबो की भाँति रहने लगे थे। प्रत्येक अधिकारी के पास बीस से लेकर तीस तक नौकर थे। उनकी स्त्रियाँ काम करने की आदी नही रही थी। नौकरो के अभाव मे औरतो को विशेष कष्ट का सामना करना पडा। अव उन्हे सव काम स्वय ही करना पडता था।

क्रातिकारी घेरे को क्रमश दृढ करते गए। ज्यो-ज्यो दिन बीतते गए क्रातिकारियो की सख्या भी बढती गई। कुछ स्थानो पर घेरा डालने वाले सिपाही रक्षा पक्ति के भीतर के सैनिको के इतने समीप आ गए थे कि वे आपस में बात-चीत कर लिया करते थे। क्रातिकारी सैनिक अग्रेजो का साथ देने वाले भारतीयो को 'धर्म त्यागी' कहकर उलाहने देने लगे थे।

भोजन की कमी घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को दिन पर दिन

खटकने लगी थी। अन्य सुविधाएँ भी क्रमश कम होती गई। अन्न जीवन के लिए आवश्यक था, किंतु उन लोगो के लिए जीवन तभी सभव हो सकता था जबकि घेरे से कोई उनको उबारता। घेरे के अदर सब लोग इस समाचार के लिए लालायित थे कि कानपुर स्थित सेना का अध्यक्ष हेवलाक उनकी सहायता के लिए कब पहुँचे और घेरे की यातना ओर अनिश्चितता से छुटकारा दिलाए। हेवलाक भी भली भाँति जानता था कि रेजीडेन्सी के त्रस्त लोगो की आँखे उस पर लगी है। वह सोचता, क्या वह इस गुरुतर भार को उठा सकेगा ? हेवलाक के साधन सीमित थे, और कार्य कठिन था। लेकिन फल कुछ भी हो, उसे तो कर्म करना ही था। उसे बार-बार रेजीडेन्सी से सहायता के लिए प्रार्थना आ रही थी। रेजीडेन्सी के निवासियो का बाह्य ससार से किसी प्रकार का संपर्क नही रह गया था। न बाहर की खबर अदर आ सकती थी और न अदर की खबर बाहर ही जा सकती थी। समाचार लाने और ले जाने का काम दो भारतीय जासूस अगद तिवारी और मिसिर कनौजी लाल करते थे। अगद को प्रति फेरे का पाँच सौ पौड धन दिया जाता था। उसी के द्वारा हैवलाक से पत्राचार सभव था। अगद को कानपुर मे नाना साहब की गतिविधि पर निगरानी रखने के लिए भेजा गया था। वहाँ से लौटकर उसने समाचार दिया कि हेवलाक गगा नदी को पार करने की तैय्यारी मे है। वहाँ से चलकर वह रेजीडेन्सी की सहायता

के लिए जरूर आएगा। २२ जुलाई को रेजीडेन्सी के कमाडर इगलिस ने अगद को निम्नलिखित समाचार लेकर हेवलाक के पास भेजा

"· ···· मै आपको सूचित करता हूँ कि क्रातिकारी हमारी किलेबदी की दीवालो तक आ गए है, और दिन-रात निरतर हम पर गोलाबारी कर रहे है। मै विश्वास करता हूँ कि आप शीघ्र से शीघ्र हमारी सहायता के लिए आएँगे।"

यह सदेश अग्रेजी मे लिखा गया था। उसका कुछ भाग ग्रीक भाषा मे था। यदि क्रातिकारियो के हाथ यह सदेश पड भी जाता तो भी वे उसे समझ न सकते थे। अगद इस सदेश को हुक्के की नली मे छिपा कर ले गया था। इस पत्र को पढने से मालूम होता है कि रेजीडेन्सी का कमांडर इगलिस चितित था परतु उसे किसी प्रकार की घबराहट न थी। उसे आशा थी कि निकट भविष्य में मदद मिल जाएगी। तीन दिन पश्चात २५ जुलाई को अगद हेवलाक का यह सदेश लेकर लौटा था "हमारी दो-तिहाई सेना गगा नदी के पार आ गई है। आठ तोपे भी नदी को पार कर चुकी है। हमारे पास उन सबको नष्ट करने के लिए पर्याप्त सेना है, जो हमारा विरोध कर रहे है। पॉच या छ दिन मे हम तुमसे आ मिलेगे।"

इस समाचार से रेजीडेन्सी मे नई आशा का सचार हुआ।

वे सोचने लगे कि घेरे के कष्ट से छुटकारा मिलने ही वाला है। कह नही सकते कि हेवलाक ने आत्म विश्वास से परिपूर्ण यह पत्र किस आधार पर लिखा था। रेजीडेन्सी के निवासियो की आशा तो मृग-तृष्णा मात्र थी। वह दिवस तो अभी बहुत दूर था। उन्हे कई माह के पश्चात छुटकारा मिला। एक दिन विश्राम करने के पश्चात २७ जुलाई को अगद फिर हेवलाक के लिए एक सदेश एव लखनऊ क्षेत्र का विस्तृत मानचित्र लेकर चला। यह लखनऊ नगर, एव रेजीडेन्सी तक पहुँचने का नक्शा था, जिसका प्रयोग हेवलाक रेजीडेन्सी तक पहुँचने मे कर सकता था। ब्रिगेडियर इगलिस का सदेश इस प्रकार था

''रेजीडेन्सी नगर की सीमा से लगभग डेढ़ मील दूर है। हम आपके आने वाले मार्ग की दाई एव बाई तरफ स्थित क्रातिकारियो की मजबूत चौकियो पर अपने स्थान से पद्रह सौ गज की दूरी तक गोलाबारी कर सकते है। आपके मार्ग के दोनो तरफ मकान हैं और इस सडक से भारी तोपो को ले जाने मे कठिनता होगी।''

तत्पश्चात प्रत्येक रात्रि को आठ बजे रेजीडेन्सी के लोग दक्षिण आकाश की ओर आशा भरी दृष्टि से देखते थे। हेवलाक ने सूचित किया था कि नगर मे घुसने से पहली रात्रि को आकाश में राकेट छोड कर वह अपने आने और रेजीडेन्सी पर तथाकथित आक्रमण की सूचना देगा। वह

आशा करता था कि अगले दिन रेजीडेन्सी से क्रातिकारियो की सशक्त चौकियो पर गोलावारी की जाएगी। ताकि क्रातिकारियो का ध्यान हेवलाक की सेना से हट जाए।

दक्षिण आकाश की तरफ देखते-देखते लोगो की आँखे पथरा गई, लेकिन राकेट न दिखे। रीज ने इन शब्दो मे रेजीडेन्सी के निवासियो की निराशा को प्रतिविवित किया है .

''सत्ताइस तारीख भी चली गई। कोई सेना न आई। अट्ठाइस भी चली गई और कोई सहायता नही मिली। उतिस, तीस और इकतिस तारीख भी निकल गई और हमारी सहायता के लिए आने वाली किसी सेना का कोई पता नही। हम आशा लगाए बैठे थे कि हमारे मित्र शीघ्र ही आएँगे और विद्रोहियो को मार भगाएँगे। परतु यह सब नही हुआ। हमारे दिल बैठने लगे। लोगों मे उदासी छा गई। जीवन के प्रति वे निराश हो चुके थे, और मारे जाने से पूर्व केवल मारने की उन्हे इच्छा थी। उनका जीवन उनके लिए भार स्वरूप हो गया था।''

अगस्त १५ को हेवलाक का लिखा हुआ सदेश इगलिस को मिला। यह ग्यारह दिन पूर्व ही लिखा जा चुका था। हेवलाक ने लिखा था :

''हम कल सुबह लखनऊ के लिए रवाना होगे। हमारे सैनिको की सख्या वढ गई है। तुम तक पहुँचने मे हमे

अधिक मे अधिक चार दिन लगेगे। तुम्हे हमारी हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए। यदि हम रेजीडेन्सी मे घुस न सके, तो तुम्हे दुश्मनो के घेरे को काट कर हम से आ मिलना चाहिए।''

इस सदेश को पढकर ब्रिगेडियर इगलिस को ऐसा प्रतीत हुआ कि हेवलाक उसकी कठिन परिस्थिति को समझ नही रहा है। उसने हेवलाक को लिखा

''यह असभव है कि मैं अपनी कमजोर और क्षत-विक्षत सेना के सहारे रेजीडेन्सी की किलेबदी को छोड सकूँ। आपको यह ध्यान मे रखना चाहिए कि मै किस कठिनाई मे पडा हूँ। मेरे पास १२० के ऊपर बीमार और घायल है, २२० स्त्रियाँ तथा २३० बच्चे है। किसी भी प्रकार की गाडी नही है। तीस तोपो को और तेईस लाख के खजाने को छोड़ना पडेगा। फिलहाल सेना का राशन आधा कर दिया जाएगा। इस कटौती के कारण हमारी भोजन सामग्री दस सितंबर तक चल जाएगी। यदि आप इस सेना को बचाना चाहते है तो बिना समय नष्ट किए, आगे बढिए। शत्रु प्रति-रक्षा पक्ति से कुछ ही गज की दूरी पर है और प्रतिदिन आक्रमण करता रहता है। शत्रु की सुरगो ने हमारी चौकी को पहले से ही असुरक्षित कर दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी वे सुरगे लगाते रहेगे।

''करीब पच्चीस दिन पूर्व हमारी देशी सेना को यह विश्वास

दिलाया गया था कि आप जल्दी पहुँच रहे है। यह सेना अब विश्वास खो रही है। यदि ये चले जाएँगे तो हम नही जानते कि रक्षा के लिए आदमी कहाँ से आएँगे।''

रेजीडेन्सी को घेरे मे आए हुए लगभग पेतालिस दिन हो गए थे। एक माह से उनके पास कई आश्वासन आ गए थे कि कुछ ही दिनो मे छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन यह मुक्ति दिवस मृग-तृष्णा की भाँति दूर ही हटता गया। आशा · निराशा और आशा सतत रेजीडेन्सी के निवासियो को वारी-वारी से हर्षित और चिंतित करते रहे। कभी जीवन की आशा बँध जाती थी और कभी मौत की झलक दीखने लगती थी। हेवलाक के आने मे जितनी ही अधिक देर हो रही थी, उतनी ही घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की कठिनाइयाँ भी वढती जा रही थी। यह उनके लिए मृत्यु एव जीवन का प्रश्न था।

बारह दिन के पश्चात अर्ध रात्रि मे, २८ अगस्त को अगद एक सदेश हेवलाक से लाया। उसमे हेवलाक ने उन्हे राजपूतों की भाँति केसरिया वाना पहनकर अतिम समय तक लडते हुए मर मिटने की सलाह दी थी—

''मुझे तुम्हारा सोलह अगस्त का पत्र मिला है। मै तुम्हे यही राय दे सकता हूँ कि क्रातिकारियो से समझौता मत करो। यदि आवश्यकता हो तो तलवार लेकर क्रातिकारियो का सामना करते हुए जीवन वलिदान कर दो। वीस या

पच्चीस दिन मे मुझे और सैनिक मिल जाएँगे, और मै यथा-शक्ति लखनऊ पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।"

इस पत्र को पाकर रेजीडेन्सी मे और निराशा छा गई। लोग सोचने लगे थे कि सहायता कभी न आएगी। जब घेरे-बदी को पूरे साठ दिन हो गए थे, तो हेवलाक, जिसे वे अपना तारनहार समझ रहे थे, उन्हे पच्चीस दिवस की और यातना भोगने के लिए कह रहा था। कौन कह सकता था कि पच्चीस दिन मे सहायता मिल ही जाएगी। क्या इससे पूर्व भी सहायता के कई सदेश न आ चुके थे ? लखनऊ के घेरे मे आए हुए व्यक्तियों को विश्वास नही हो पा रहा था, कि लखनऊ और कानपुर की ५३ मील की दूरी को पार करने के लिए हेवलाक को पूरे नौ सप्ताह चाहिए।

रेजीडेन्सी मे राशन आधा कर दिया गया था और इधर क्रातिकारी दिन पर दिन सशक्त होते जा रहे थे।

हेवलाक की भी स्वय अपनी कठिनाइयाँ थी। उसके पास केवल पद्रह सौ सैनिक थे और दस छोटी तोपें थी। कानपुर और लखनऊ के बीच क्रांतिकारियो की लगभग बारह चौकियाँ थी और लखनऊ का युद्ध भी लडना था। हेवलाक ने लखनऊ से आए मानचित्र का अध्ययन किया। वह हाथ मल कर रह गया। उसने कहा—"सभवत दस हजार व्यक्ति लखनऊ ले सकते है, इससे कम नही।"

लखनऊ रेजीडेन्सी की घेरेबदी को ८८ दिन हो गए थे। ब्रिगेडियर इगलिस हतोत्साहित हो गया था। उसने क्राति-कारियो से समझौता करने का प्रयत्न किया, लेकिन क्राति-कारी समझौते के लिए तैयार नही हुए। सैनिको की सख्या घट कर १७२० से ९७९ हो गई थी। क्या सहायता कभी आ भी पाएगी ? इससे पूर्व उन्हे निम्नलिखित आश्वासन मिले थे—

जुलाई २५, पाँच या छ दिन मे हम तुम से आ मिलेगे।

अगस्त १५, अधिक से अधिक हमे तुम तक पहुँचने मे चार दिन लगेगे।

अगस्त २८, वीस या पच्चीस दिन मे मुझे और सैनिक मिल जाएँगे, और मै यथाशक्ति लखनऊ पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।

२५ सितबर को हेवलाक का कोई आशावादी सदेश तो नही मिला, कितु तोप के गोलो की आवाज ने रेजी-डेन्सी के निवासियो मे आशा का सचार किया। उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ कि तोपे कह रही है कि हम तुम्हारी मदद के लिए आ रहे है।

रेजीडेन्सी का मुक्ति प्रयास

रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो से हेवलाक को कई सदेश मिल चुके थे कि 'जान बचाओ' और 'भूखे मरने से बचाओ'। हेवलाक कानपुर क्षेत्र का कमाडर था। कानपुर लखनऊ से सबसे निकटस्थ सैनिक केंद्र था। दोनो नगरो के बीच केवल ५३ मील की दूरी थी। हेवलाक भी अपनी ज़िम्मेदारी को भली भाँति समझता था। उसे रेजीडेन्सी की सहायता के लिए पहुँचना ही था। रेजीडेन्सी के नेता सर हेनरी लारेन्स की मृत्यु के कारण रेजीडेन्सी के निवासी और अधिक असहाय हो गए थे। लारेन्स की मृत्यु से हेवलाक का सकल्प और अधिक दृढ हुआ कि उसे रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को हर हालत मे बचाना ही चाहिए। वह रेजीडेन्सी के उद्धारक होने का श्रेय लेना चाहता था।

हेवलाक भली भाँति जानता था कि यदि वह समय पर रेजीडेन्सी की मदद के लिए नही आ पाया, तो वहाँ के

निवासियो के भाग्य का निपटारा दो ही प्रकार से होगा। या तो वे क्रातिकारियो द्वारा मौत के घाट उतार दिए जाएँगे, या वे भूखे मर जाएँगे।

लखनऊ रेजीडेन्सी सामरिक एक राजनैतिक दृष्टि से क्रातिकारियो और अग्रेजो के लिए समान महत्व रखती थी। वह अवध की क्राति का केद्र-विदु थी। अग्रेजो द्वारा रेजीडेन्सी के घेरे का अत कर दिए जाने पर क्रातिकारियो के अवध के मोर्चे का अत हो जाता, और अग्रेजो का प्रभाव पुन स्थापित हो जाता। दोनों दलो के लिए रेजीडेन्सी पर अधिकार महत्वपूर्ण था।

कई अग्रेज सैनिकों ने बाद मे सर हेनरी लारेन्स की आलोचना की थी कि उसे अवध छोड़ देना चाहिए था। रेजीडेन्सी को खाली कर उसे अपनी सेना सहित कानपुर आ जाना चाहिए था। इससे दो लाभ होते। कानपुर और लखनऊ की सम्मिलित सेना कानपुर-काल्पी-झाँसी क्षेत्र मे अधिक सक्रिय होती। रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्ति भी घेरे की यातना से बच जाते। इस विचार के विरुद्ध यही कहा जा सकता है कि लखनऊ को छोड देने पर अग्रेजी सत्ता को अवध मे भारी धक्का लगता।

वे क्रातिकारियो की दृष्टि में भगोड़े साबित होते। क्रांतिकारियो का हौसला और अधिक बढता। दिल्ली अग्रेजों के हाथ से पहले ही निकल चुकी थी। लखनऊ छोड

देने पर, अवध के ऐसे व्यक्ति जो निश्चय नही कर पा रहे थे कि किस पक्ष का साथ दे, अब क्रातिकारियो के पक्ष मे आ जाते। लखनऊ न छोडने का निश्चय सामरिक दृष्टि से उचित ही था।

हेवलाक लखनऊ के मुक्ति प्रयास की कठिनता भली भॉति समझता था। सपूर्ण अवधवासी अग्रेजो के विरुद्ध थे। स्थानीय जनता से उसे किसी भी प्रकार की सहायता नही मिल सकती थी। कानपुर और लखनऊ की दूरी अधिक तो नही थी, लेकिन इन दो नगरो के मध्य क्रातिकारियो की सशक्त चौकियाँ थी। हेवलाक के पास पर्याप्त सेना भी नही थी, और न उसे भावी युद्ध मे आहत सैनिको की पूर्ति की ही आशा थी। इन कठिनाइयो के होते हुए भी उसे लखनऊ की ओर बढना ही था। वह भली भॉति जानता था कि लखनऊ रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्ति उसे अपना बचाने वाला समझ रहे है। उनकी ऑखे उस पर लगी है। वह उनकी आशाओ पर तुषारापात नही कर सकता था।

कानपुर गगा नदी के किनारे बसा है। लखनऊ की ओर प्रस्थान करने के लिए उसे सर्वप्रथम गगा नदी को पार करना था। उसने नावो का पुल बनाना प्रारभ किया। सामरिक दृष्टि से इस पुल का महत्व था। इसके द्वारा कानपुर से लखनऊ की ओर यातायात सभव हुआ। पुल के बनने मे कई दिन लगे। एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि

क्रातिकारी इस समय क्या कर रहे थे ? न तो कानपुर के क्रातिकारियो ने इस पुल के वनने मे वाधा दी, और न लखनऊ के क्रातिकारियो ने इसके बनने मे रुकावट डाली। क्या लखनऊ के क्रातिकारी यह नही समझते थे कि पुल के वनने से अग्रेजो को अनवरत सहायता मिल सकेगी, और अवध मे दुर्घटना होने पर वे इस पुल के द्वारा जान वचा कर भाग सकते थे ? स्पष्ट है कि लखनऊ और कानपुर के क्रातिकारियो मे किसी भी प्रकार की पारस्परिक सुनियोजित योजना नही थी।

क्रातिकारियो को हर दशा मे इस पुल को वनने नही देना चाहिए था। वास्तव मे गगा के पुल का युद्ध अवध के युद्ध का प्रथम मोर्चा हो सकता था।

२५ जुलाई को हेवलाक ने पद्रह सौ सैनिको के साथ गगा को पार किया। कानपुर से पॉच मील की दूरी पर मगरवारा मे उसने एक अग्रिम चौकी स्थापित की। मगरवारा एक ऊँचे स्थान पर बसा था। इस चौकी से गगा मे आने-जाने वाली नावो पर नियत्रण रखा जा सकता था, और पुल से आने-जाने वाली फौजो को भी सरक्षण दिया जा सकता था। शत्रु की सेना को पुल पार करने से भी रोका जा सकता था। मगरवारा मे हेवलाक स्थिति के विगडने पर आश्रय लेने के लिए आ सकता था, और अपने घायल

एव बीमार सिपाहियो को भी इलाज के लिए भेज सकता था।

मगरवारा मे वह तीन दिन रसद और यातायात के साधनो के लिए रुका। २८ जुलाई को उसने प्रधान सेनापति को एक पत्र लिखा, जिसमे उसने अपनी कठिनाइयो का वर्णन किया, और अपनी सीमित शक्ति के कारण कुछ कर सकने मे अपनी असमर्थता ही दिखलाई। उसके पत्र का आशय इस प्रकार था—

"यदि यह मान भी लिया जाए कि लखनऊ रेजीडेन्सी के सैनिक घेरा काटकर मुझसे आ मिलते है, तब भी मेरे गगा पार कर कानपुर वापस लौटने के प्रयास में भारी क्षति की संभावना है। मेरी लौटती हुई सेना पर क्रातिकारी पीछे से वार करेगे। उसी प्रकार मेरा रेजीडेन्सी के घिराव मे आए हुए व्यक्तियो को मुक्ति देना भी कठिन है। क्राति-कारी रेजीडेन्सी के घेरे को क्रमश. दृढ करते जा रहे है। ज्यों-ज्यो समय बीतता जा रहा है, क्रातिकारियो की सख्या भी क्रमश वढती जा रही है।

"लखनऊ की ओर वढने मे कठिनाइयाँ अधिक है। मार्ग में सई नदी के ऊपर 'वनी' नामक स्थान मे पुल है। नदी की प्राकृतिक रुकावट का लाभ उठाकर क्रांतिकारियो ने यहाँ प्रबल मोर्चा वना रखा है। उन्होंने पुल को बारूद से

उडाने का प्रबध भी कर रखा है। यह भी सभव है कि 'वनी' पर सीधा आक्रमण करने मे मुझे एक-तिहाई सेना से हाथ धोना पडे।

"आज सुबह मुझे रेजीडेन्सी के इजीनियर से लखनऊ क्षेत्र का मानचित्र मिला। उसमे उन्होने मुझे रेजीडेन्सी तक पहुँचने का मार्ग दर्शाया है, और अन्य लाभदायक सूचना भी दी है। जासूसो के द्वारा लाई गई सूचना के आधार पर मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि रेजीडेन्सी के घेराव मे आए हुए व्यक्तियो को किसी प्रकार की सहायता पहुँचा सकना अति कठिन है। इस प्रयास मे हमे हानि भी अधिक उठानी पडेगी। लेकिन मै हर प्रकार का खतरा उठा कर भी लखनऊ पहुँचने का प्रयास करूँगा। हैजा के कारण हमारी सेना की सख्या दिन प्रति दिन कम होती जा रही है। मेरी सेना मे पद्रह सौ सैनिक है, जिनमे बारह सौ अग्रेज है, और दस तोपे है।"

प्रधान सेनापति को लिखे हुए इस पत्र के अनुसार हेवलाक की स्थिति निराशाजनक प्रतीत होती है। लेकिन वह निष्क्रिय भी नही रह सकता था। अत २९ जुलाई को उसने उन्नाव की ओर प्रस्थान किया। उन्नाव मे उसका मार्ग क्रांतिकारियो ने रोक रखा था। क्रातिकारियो की सेना का अगला भाग बगीचे की एक चहार दिवारी के पीछे सुरक्षित था। उसका दायॉ भाग दलदल के पीछे फैला

हुआ था, जिस पर सीधा आक्रमण नही किया जा सकता था। क्रातिकारियो की बाकी सेना मकानों के पीछे और मकानो के अदर इकट्ठी थी, जिनकी दीवालो पर गोली चलाने के लिए छेद कर दिए गए थे। युद्ध के फलस्वरूप हेवलाक ने क्रातिकारियो की तोपो पर कब्जा कर लिया।

इस समय उसे समाचार मिला कि लखनऊ से क्रातिकारियो की सहायता के लिए तोपखाने के साथ एक सेना आ रही है और वह उन्नाव पहुँचने ही वाली है। यह महत्वपूर्ण था कि नवागतुक सेना का नगर मे घुसने के पूर्व ही सामना कर लिया जाता। अत हेवलाक तेजी से आगे बढा और नगर को पार कर उसने अपना मोर्चा ऐसे स्थान पर लगाया जो चारो ओर दलदल से घिरा था। इस स्थान से, लखनऊ से आने वाली सडक पर गोलाबारी की जा सकती थी। क्रातिकारी जाल मे फँस गए। अकस्मात अग्रेजो की तोप और गोलियों की मार उन पर पडी। मार से बचने के लिए क्रातिकारी सेना दाएँ और बाएँ फैली, किंतु उनकी तोपे दल दल मे फँस गई। तीन सौ क्रांतिकारी मारे गए और पद्रह तोपे अग्रेजों के हाथ लगी। हेवलाक ने उनका पीछा कुछ दूरी तक किया, ओर तीन घटे विश्राम करने के बाद, वह ६ मील आगे बशीरतगज पहुँचा।

बशीरतगज छोटा कस्बा था। उसके चारो ओर चहार दिवारी थी। क्रांतिकारी मकान और चहार दिवारी की

आड मे मोर्चो पर डटे थे। पीछे की तरफ से उन्हे पानी के एक लगभग सात फुट गहरे तालाब से सरक्षण मिलता था, जिसके ऊपर एक पुलिया से सड़क जाती थी। हेवलाक ने सामने से आक्रमण नही किया, जैसा कि क्रातिकारी सोचते होगे। उसने नगर के दाएँ बाएँ ओर से आक्रमण किया। क्रातिकारी विस्मित रह गए। कुछ देर सामना करने के बाद वे रणक्षेत्र से भाग गए।

इन दो युद्धो के फलस्वरूप जिनमे हेवलाक को सफलता मिली थी, उसके अट्ठासी सैनिक मर चुके थे। अब उसकी सेना मे केवल आठ सौ पचास सैनिक बचे थे। जितनी भी गाडियाँ उपलब्ध थी, वे सब घायलों से भरी थी। वह केवल लखनऊ की एक-तिहाई दूरी को पार कर सका था। गुप्तचरो द्वारा सूचना मिली थी कि लखनऊ से आगे मार्ग मे क्रातिकारी कई स्थानो पर उसका सामना करने के लिए इकट्ठे है। हेवलाक ने निश्चय किया कि उसे मगरवारा लौट जाना चाहिए। वहाँ घायलो की सुचारु रूप से चिकित्सा हो सकेगी, और उसके सैनिक आराम कर सकेंगे। पुन अधिक सैनिक प्राप्त होने पर ही उसे लखनऊ की ओर बढना चाहिए, इस निर्णय से कई सैनिको को निराशा हुई। वे सोचते थे कि सीमित साधनो के होते हुए भी, उनका लखनऊ पहुँचना सभव था।

मगरवारा पहुँचने पर हेवलाक ने ३१ जुलाई को कानपुर के

कमाडर नील को एक पत्र लिखा। (नील आगे चलकर 'कानपुर का कमाई' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने क्राति-कारियो एव जनसाधारण पर अकथनीय अत्याचार किए)। पत्र मे लिखा था कि मै लखनऊ की ओर बढ सकता हूँ, यदि मुझे कुछ तोपे और एक हजार सैनिक मिले।

नील ने हेवलाक के वापस लौटने को अच्छा नही समझा। उसका विचार था कि इससे ब्रिटिश प्रतिष्ठा को धक्का लगा है। अब तक भारतीय ब्रिटिश सैन्य शक्ति से प्रभावित थे। हेवलाक के लौटने से वे यही समझेगे कि अब अग्रेजो की शक्ति क्षीण हो गई है। नील ने हेवलाक को एक अभद्र पत्र भेजा—

"मुझे दु ख है कि आप पीछे हटे है, इससे हमारी प्रतिष्ठा पर बुरा प्रभाव पडा है। कानपुर में अनेक खबरे फैली हुई है, जिनमे एक यह है कि आप जितनी तोपे ले गए थे, उनको खो चुके है। आप अधिक तोपो को लेने के लिए पीछे हटे हैं। सबका यह विश्वास है कि आप पराजित हुए है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि शत्रुओ से छीनी हुई तोपे आप अपने साथ नही लाए। आपके पीछे हटने का निश्चय हमारे उद्देश्य के लिए बहुत हानिकर हुआ है। आपको फिर आगे बढना चाहिए, और तब तक नहीं रुकना चाहिए, जब तक कि आप रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियों को बचा न ले।"

50225

अपने अधीनस्थ अधिकारी की कटु आलोचना से हेवलाक तिलमिला उठा। उसने नील को मुहतोड जवाब दिया कि, "तुम्हे यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि यदि यह राजकाज मे बाधक नही होता तो मै तुम्हे गिरफ्तार करवा देता। तुम्हारा इस प्रकार का पत्र-व्यवहार अशोभनीय है।"

हेवलाक को केवल २५७ सैनिको की और सहायता मिल सकी थी। उन्होने केवल मरे हुए सैनिको के रिक्त स्थानो की पूर्ति की। उससे सैनिक सख्या मे कोई वृद्धि न हो सकी, और न स्थिति मे ही कोई सुधार हुआ। फिर भी उसने दूसरी बार लखनऊ की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया। बशीरत-गज मे क्रातिकारी फिर आ गए थे, और उन्होने हेवलाक से युद्ध करने की सब तैयारियाँ कर रखी थी। हेवलाक ने क्रातिकारियो को हराया, लेकिन वह उनका पीछा न कर पाया। उसके पास घुडसवार सेना बहुत कम थी। क्राति-कारी अपनी तोपो को भी साथ ले जाने मे सफल हुए। हेवलाक को स्पष्टतया आभास हुआ कि वह लखनऊ को सहायता पहुँचाने के लिए शक्तिशाली नही है।

इस समय उसे ग्वालियर सेना के विद्रोह का भी समाचार मिला, जिसके कारण काल्पी और कानपुर मे गभीर स्थिति पैदा होने की सभावना बढ गई थी। उसके सम्मुख दो समस्याएँ थी वह लखनऊ की ओर बढे, या गगा पार कर काल्पी तथा कानपुर क्षेत्र की बिगडती हुई स्थिति का सामना

करने के लिए तत्पर रहे। हेवलाक ने सोचा कि यदि वह लखनऊ की ओर वढता है तो उसे एक-तिहाई सेना से हाथ धोना पडेगा। लखनऊ के युद्ध के लिए उसके पास केवल सात सौ व्यक्ति बचेगे। प्रतिदिन उसकी सेना मे हैजा से मृत्यु हो रही थी। यह असभव था कि सात सौ सैनिको की सहायना से वह रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो की किसी भी प्रकार की मदद कर पाता। यह भी सभव था कि इस प्रयास मे उसकी पूरी सेना ही नष्ट हो जाती। उसने निश्चय किया कि वह मगरवारा लौट जाएगा।

उसे रेजीडेन्सी से 'जान बचाओ' सदेश मिल रहे थे। लेकिन वह कर ही क्या सकता था। अब तो वह इस स्थिति मे भी न था कि उनको आशा का सदेश भी दे पाता। कटु वास्तविकता का विचार कर उसने इगलिस को राय दी कि जो कुछ बन पड़े स्वय ही करो। कही से भी किसी प्रकार की मदद की आशा छोड दो। यदि सभव हो तो घेरे को काटकर कानपुर चले आओ। यह एक ऐसी राय थी जिसका पालन करना इगलिस के लिए असभव था। लेकिन कानपुर मे क्रांतिकारियो की वढती हुई शक्ति के कारण हेवलाक को गगा पार कर अवध को छोड़ना पडा।

हेवलाक अवध को छोड कर कानपुर नही जाना चाहता था। उसका विश्वास था कि इसका दुष्परिणाम होगा। सर्वसाधारण इसका यही अर्थ लगाएँगे कि अंग्रेज पीछे हट रहे हैं। क्रातिकारियो के पक्ष की वृद्धि होगी।

हेवलाक का अवध छोड़ना

कानपुर मे क्रातिकारियो का नेता नाना साहव था। वह पदच्युत पेशवा का दत्तक पुत्न था। जव अग्रेजो ने उसकी पेशन बद कर दी तो वह अग्रेजो का शत्नु वन गया। सन '५७ की क्राति मे वह बिठूर-कानपुर क्षेत्न मे सक्रिय रहा।

लखनऊ की अपेक्षा कानपुर मे क्रातिकारियों को अधिक सफलता मिली। मगरवारा मे हेवलाक को समाचार मिला कि विठूर मे क्रातिकारी सक्रिय हो रहे है। यह अग्रेजों के लिए नया खतरा पैदा हो गया था। यदि कानपुर क्षेत्र मे क्रांतिकारी और अधिक सशक्त वनने दिए जाते तो हेवलाक को पीछे की ओर से भी आक्रमण की आशका वनी रहती, अत उसने बिठूर की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया।

लखनऊ की स्थिति तो शोचनीय थी ही। इस प्रकार

हेवलाक लखनऊ और कानपुर के क्रातिकारियो के मध्य चक्की के दो पाटो के बीच आए हुए अनाज की तरह पिस सकता था, यदि दोनों नगरो के क्रातिकारियो ने मिल कर उस पर दोनो तरफ से साथ-साथ हमला कर दिया होता।

कानपुर का सामरिक दृष्टि से अपना महत्व था। यदि कानपुर क्रातिकारियो के अधिकार में पूर्णतया आ जाता, तो इलाहाबाद से आने-जाने के साधनो पर रोक लग जाती। उत्तर भारत के अग्रेजो को सहायता कलकत्ता से होते हुए गगा के मार्ग से ही मिल सकती थी। अत हेवलाक को

हाथी पर सवार नाना साहब

कानपुर मे अंग्रेजी सत्ता को बनाए रखना आवश्यक प्रतीत हुआ।

कानपुर का कमाडर नील अपनी बची-खुची सेना के साथ एक चौकी बना कर रक्षात्मक युद्ध लड रहा था। उसकी स्थिति स्वय निर्बल थी। नील ने हेवलाक को लिखा कि, "बिठूर मे एक हजार क्रातिकारी पॉच तोपो के साथ आ डटे है। यदि मुझे सहायता नही मिल पाती है तो मै इस सिलसिले मे कुछ नही कर सकता हूॅ। मै केवल अपनी और चौकी किले-बदी की रक्षा कर सकता हूॅ।"

हेवलाक ने निश्चय किया कि सामरिक दृष्टि से उसका बिठूर जाना उचित ही होगा। उसने अपना कुछ सामान गगा पार भेज भी दिया था, जब उसे समाचार मिला कि बशीरतगज मे चार हजार क्रातिकारी फिर एकत्र हो गए है। नदी पार करते समय उसे डर बना रहता कि कही उस पर पीछे से आक्रमण न हो जाए। अत उसने तय किया कि पहले बशीरतगज मे एकत्र क्रातिकारियो से निपटा जाए।

भारी वर्षा हो रही थी। वह बशीरतगज की ओर बढा। बशीरतगज मे तीसरी बार उसने क्रातिकारियो से युद्ध किया। वे पराजित हुए, और रणक्षेत्र छोड कर भाग गए।

मगरवारा लौट कर हेवलाक ने गगा नदी को पार किया।

तत्पश्चात पुल को तोड कर उसने बिठूर की ओर प्रस्थान किया । उसने पुल को तोडना आवश्यक समझा । पुल के वने रहने पर उसे अवध के क्रातिकारियो से डर वना रहता । वे उस पर पीछे से आक्रमण भी कर सकते थे और कानपुर के क्रातिकारियो की सहायता के लिए भी आ सकते थे ।

बिठूर मे क्रातिकारियों ने विस्तृत मैदान मे जहाँ गन्ने की खेती हो रही थी, युद्ध के लिए व्यूह रचना की थी । उन्होने अपनी सेना और तोपो को पौधो के पीछे छिपा रखा था । हेवलाक अपने सशक्त तोपखाने को लेकर युद्ध के लिए वढा । दोनो तरफ से गोलाबारी हुई । युद्ध के परिणामस्वरूप क्रातिकारियो की पैदल सेना तो टिक न सकी, किंतु छिपी हुई तोपों से अग्रेजो पर भीषण अग्नि वर्षा हुई । हेवलाक ने स्वय इस तथ्य को स्वीकार किया कि क्रातिकारी उसके सशक्त तोपखाने के विरुद्ध वीरता से लड़े । विजय अग्रेजों की हुई । हेवलाक कानपुर लौट आया ।

लखनऊ की बिगडती हुई स्थिति के कारण उसे चिता हो रही थी । उसका लखनऊ का मुक्तिदाता बनने का स्वप्न अपूर्ण ही रह गया था । अब तक वह क्रातिकारियों पर छुट-पुट विजय ही प्राप्त कर सका था, लेकिन क्रातिकारियो का उत्साह किसी प्रकार कम नही हुआ था । वे पुन युद्ध के लिए एकत्र हो जाते थे ।

छ सप्ताह पश्चात उसे कलकत्ता से सहायता मिल।। कलकत्ता से उटरम इतनी सेना लेकर आया कि उनकी सम्मिलित सेना मिलकर लखनऊ के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की सहायता के लिए वढ सकती थी । उधर अवध की क्राति ने हेवलाक के अवध छोडने पर जन क्राति का रूप ले लिया था । अवध के विभिन्न वर्ग के लोगो ने अग्रेजो के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे । लखनऊ रेजीडेन्सी के घेरे को सशक्त करने के लिए, अवध से विभिन्न भागो से सैनिक खिचे आ रहे थे ।

मददगार स्वयं घेरे के अंदर

बिठूर की विजय के पश्चात जब हेवलाक १७ अगस्त को कानपुर पहुँचा तो उसे कलकत्ता गजट की एक प्रति मिली। उसे ज्ञात हुआ कि उसके पद को सर जेम्स उटरम को दे दिया गया है। उसे अब उटरम के अधीन रहकर कार्य करना होगा, इस समाचार से उसे निराशा हुई। उसने सीमित साधनो के होते हुए भी रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को बचाने का गुरुतर भार उठाने का भरसक प्रयत्न किया था। वह असभव को तो सभव नही कर सकता था ! और उसे यह पुरस्कार मिला कि वह पदच्युत कर दिया गया। अब नेता न रहकर वह अधीनस्थ हो कर कार्य करेगा। कोई अन्य सैनिक होता तो इस स्थिति में उसकी आत्मा विद्रोह करती, किंतु हेवलाक एक अनुभवी और सुलझा व्यक्ति था। अनुशासन का पालन करना सैनिक के लिए सर्वोपरि था।

वह लखनऊ लेने के लिए तैयारी करता रहा। हैजा के कारण उसके सैनिक मरते जा रहे थे। उसकी सेना मे केवल सात सौ सैनिक रह गए थे। हेवलाक उत्कठापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जव सर जेम्स उटरम अपने सैन्य दल के साथ आएगा, और उनकी सम्मिलित सेना लखनऊ की ओर कूच करेगी।

उटरम के आने पर सम्मिलित सेना मे ३,१७० सैनिक हो गए थे, जिनमे २,३८८ अग्रेज सैनिक थे। घुडसवारों की सख्या केवल १६८ थी।

उटरम रेजीडेन्सी लेने वाली सेना का अधिनायक वना कर भेजा गया था। उसने निश्चय किया कि हेवलाक ही इस सेना का सचालन करेगा। वह एक असैनिक स्वय सेवक की भाँति उसके साथ रहेगा। उसका विचार था कि रेजीडेन्सी को लेने का श्रेय हेवलाक को ही मिलना चाहिए, जो सीमित साधनों के होते हुए भी रेजीडेन्सी तक पहुँचने का सतत प्रयत्न करता रहा।

कानपुर से हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना ने लखनऊ की ओर प्रस्थान किया। पहले कहा जा चुका है कि विठूर जाते समय हेवलाक ने गगा के पुल को तोड दिया था। यह निश्चय किया गया कि पुराने पुल के स्थान पर फिर नावो का पुल बनाया जाए।

हेवलाक के हटने पर क्रातिकारियो ने मगरवारा पर अधिकार कर लिया था। वहाँ आठ तोपो के साथ आठ हजार क्रातिकारी जमे हुए थे। पुल वनने लगा, और वनता गया, लेकिन क्रातिकारियो ने उसके वनने मे किसी प्रकार की वाधा नही दी। सामरिक दृष्टि से क्रातिकारियो के लिए यह अति महत्वपूर्ण था कि गगा मे पुल न वनने पाता। पुल वनने से हेवलाक और उटरम को निरतर सहायता मिल सकती थी। मगरवारा मे क्रातिकारियो की सख्या इतनी काफी थी कि वे पुल के वनने मे रुकावट डाल सकते थे। उन्हे रुकावट डालनी चाहिए थी, किंतु वे केवल दर्शक मात्र ही रहे। अग्रेजी सेना के पुल पार करते समय भी उन्होने किसी प्रकार की वाधा नही डाली। क्रातिकारियो ने एक अच्छे अवसर को हाथ से निकाल दिया। वास्तव मे रेजीडेन्सी की लडाई का यह पहला मोर्चा था।

१६ सितवर को हेवलाक ने गगा को पार किया। उसी दिन उसे रेजीन्डेसी से इगलिस का सदेश मिला। अगद समाचार लाया था कि रेजीडेन्सी मे क्रातिकारी लगातार आक्रमण कर रहे थे, और खाद्य पदार्थ की कमी से चिता-जनक स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

मगरवारा मे युद्ध हुआ। क्रातिकारी टिक न सके, और वे बशीरतगज की ओर भाग निकले। उनके १२० सैनिक मरे और दो तोपे अग्रेजों के अधिकार मे आई। उस रात्रि को

हेवलाक की सेना ने वशीरतगज मे विश्राम किया। क्राति-कारी वशीरतगज के मोर्चे को छोडकर पहले ही चल दिए थे। अगले दिन २२ सितवर को मूसलाधार वर्षा में हेवलाक की सेना सई नदी के किनारे आ पहुँची। क्राति-कारियो ने इस मोर्चे को छोड़ते समय पुल को न तोड कर विश्राम किया। अव वे लखनऊ से लगभग सोलह मील की दूरी पर थे। यहाँ उन्होने तोपों के गोले इस आशय से छोडे कि तोपो की आवाज रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्ति सुन ले, और उनमे नई आशा का सचार हो जाए। किन्तु तोपो की आवाज घेरे मे आए हुए व्यक्ति सुन न पाए।

अगले दिन वर्षा रुक गई, किंतु घुटन और उमस थी। हवा भी रुकी हुई थी। क्रातिकारियो की तोपे जो रेजीडेन्सी पर लगातार गोलावारी कर रही थी, प्रात काल से ही शात थी। ऐसा प्रतीत होता था कि आगामी युद्ध की सभावना का विचार कर तोपे नगर की रक्षा के लिए नए स्थानो को ले जाई जा रही थी। लखनऊ के क्रातिकारी हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना का सामना करने के लिए अपनी शक्ति सँजो रहे थे।

क्रातिकारी आलमवाग मे मोर्चा वनाए डटे थे। आलमवाग लखनऊ कानपुर मार्ग पर लखनऊ से पॉच मील की दूरी पर स्थित है। इसे अवध के अतिम नवाव वाजिद अली शाह ने अपनी बेगमो के रहने के लिए वनवाया था

वर्षा के कारण सर्वत्र जल ही जल दीखता था। क्रातिकारियो ने अपनी व्यूह-रचना मे बारह सौ सैनिको को सडक के आर-पार फैलाया था। बाएँ पक्ष को आलमबाग और दाएँ पक्ष को दलदल के पीछे सुरक्षित रखा था। क्रातिकारियो ने अग्रेजो के पहुँचते ही तोपो से गोले बरसाने शुरू किए।

प्रत्युत्तर मे हेवलाक ने भी अपने तोपखाने को सामने किया और क्रातिकारियो पर गोलाबारी प्रारभ की। अग्रेजो का तोपखाना भारतीय तोपखाने की अपेक्षा अधिक सशक्त था, और अग्रेजो के पास तोपे भी सख्या मे अधिक थी।

तोप के गोलो और बदूक की गोलियो की बौछार से कुछ हद तक सुरक्षा पाकर अग्रेज पैदल सेना आक्रमण के लिए आगे बढी।

आलमबाग

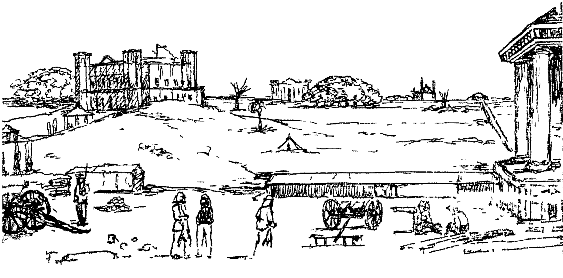

क्रातिकारी यह आशा नही करते थे कि अग्रेज दलदल को पार कर उन पर आक्रमण करेगे। किनु हेवलाक ने क्राति-कारियो को आश्चर्य मे डाल दिया। उसके सैनिक दलदल को पार कर आक्रमण कर बैठे। जिस दलदल को वे दुर्भेद्य समझे बैठे थे, वह आसानी मे पार कर लिया गया। अग्रेज सिपाही सीने तक गहरे पानी को पार कर आक्रमण कर बैठे। क्रातिकारियो के मध्य भाग मे भी उसी समय साथ-साथ आक्रमण किया गया। अग्रेजो के सशक्त तोपखाने

आलमबाग का मुख्य द्वार

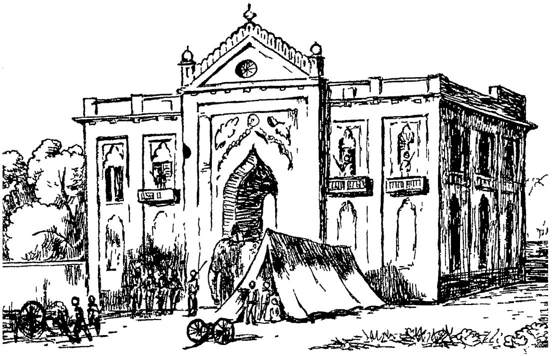

ने क्रांतिकारियों की तोपो की मार को शात कर दिया। क्रातिकारियो की पैदल सेना ने आगे बढकर अग्रेजो का सामना करने का प्रयास किया, किंतु तोपो की मार से बचने के लिए उन्हे भी लौटना पडा। आलमवाग की दीवालो का सहारा लेकर उन्होने युद्ध किया, किंतु अत मे क्रातिकारियो को आलमवाग छोडना पडा।

अग्रेजो की घुडसवार सेना ने क्रातिकारियो का पीछा नहर के ऊपर चारवाग के पुल तक किया। इस नहर को नवाव गाजीउद्दीन हैदर ने वनवाया था। उसकी योजना यह थी कि गगा के अतिरिक्त जल को गोमती नदी मे इस नहर के द्वारा पहुँचाया जाए। तराई के एक तालाव से निकलने वाली गोमती नदी मे वहुत कम जल रहता है। वह उसके जल की वृद्धि करना चाहता था किंतु नहर कुछ ही मील बन पाई। नगर के लिए कुछ सीमा तक वह सुरक्षा का साधन अवश्य वन गई। पुल पर क्रातिकारियो ने डट कर सामना किया। हेवलाक वापस लौट आया, और उस रात्रि को अग्रेजो ने आलमवाग मे विश्राम किया।

अव अग्रेजी सेना लखनऊ के सम्मुख थी। इसी समय समाचार मिला कि अग्रेजो ने दिल्ली ले ली है। इस समाचार से अग्रेजी सेना का मनोवल वढा और उन्होने दृढ संकल्प किया कि लखनऊ को ले लेना चाहिए। वाद मे पता चला कि इस समाचार का कोई आधार नही था।

हेवलाक के सामने यह समस्या थी कि वह किस मार्ग का चयन करे कि कम-से-कम समय मे रेजीडेन्सी पहुँच जाए, और उसकी सेना को न्यूनतम क्षति पहुँचे। जासूसो से उसे समाचार मिला कि सिकदरवाग, शाहनजफ और मोतीमहल खाली है। ये तीनो स्थान चहार दीवारी से घिरे थे और किले की भाँति सुरक्षित थे। क्रातिकारियो ने नगर के बचाव के लिए यहाँ मोर्चे नही वनाए थे। केवल कैसरवाग मे उन्होने तैयारी कर रखी थी।

उटरम जो सन सत्तावन की क्राति के पूर्व अवध का रेजीडेट एव चीफ कमिश्नर रह चुका था, लखनऊ और

गोमती नदी के दक्षिण ओर स्थित महत्वपूर्ण भवनो का एक विहगम दृश्य—शाहनजफ, मोतीमहल और छतरमजिल आदि।

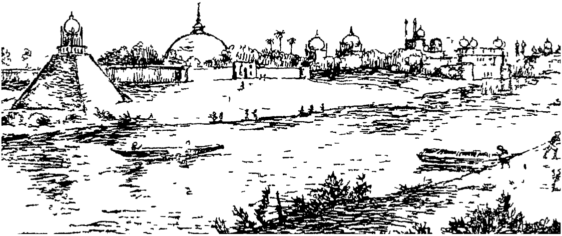

उसके निकटस्थ क्षेत्र से भली भाँति परिचित था। उसने राय दी कि सबसे उचित मार्ग यह होगा कि चारवाग के पुल को पार कर, नहर के बाएँ किनारे बढते हुए रेजीडेन्सी के पूर्व मे स्थित महलो तक पहुँचा जाए।

२५ सितवर को प्रात काल अग्रेजी सेना आलमवाग से आगे वढी। सेना के अग्रिम दल का नेतृत्व उटरम तोपखाने के साथ कर रहा था। हेवलाक सेना के पिछले भाग के साथ था। वर्षा ऋतु के कारण मार्ग के दोनो तरफ लवी घास उग आई थी। क्रातिकारियो न अपनी तोपे घास के अदर छिपा रखी थी। ज्यो ही अग्रेजी सेना आगे वढी उस पर तोप के गोलो की मार पडी। दीवालो से घिरे वगीचो एव मकानो से गोलावारी जारी रही, लेकिन अग्रेजी सेना आगे वढती रही और पुल तक पहुँच गई।

क्रातिकारियो ने निश्चय किया कि पुल पर अग्रेजो का जम कर सामना किया जाए। वहाँ उन्होने ६ तोपे लगा रखी थी, और निकटस्थ मकानो से भी गोलावारी करने का प्रवध कर रखा था। उन्होने चारवाग की चहार दिवारी के पीछे भी कई तोपे लगा रखी थी। इस सम्मिलित मार से अग्रेजी फौज आगे न वढ सकी। वह रुक गई। उटरम ने एक टोली को लेकर चारवाग के अहाते से आक्रमण-कारियो को हटा दिया। इसी समय नील ने पुल पर स्थित क्रातिकारियो की छ तोपो पर कब्जा कर लिया। अब

अग्रेजो को तोप के गोलो की मार से छुटकारा मिल गया, और उन्होने पुल को पार किया।

नहर के किनारे-किनारे बाई ओर बिना किसी विशेष रुकावट के बढती हुई अग्रेज सेना मोतीमहल पहुँची। मोतीमहल और रेजीडेन्सी की छ फर्लाग की दूरी मे कई महल एव भवन थे। बेगम कोठी और अस्तबल पर अग्रेजो को रोकने का प्रयास किया गया, किंतु अग्रेजो के तोपखाने की मार के सामने वे टिक न पाए।

अब अग्रेजो की सेना रेजीडेन्सी से केवल पाँच सौ गज की दूरी पर थी, और फरहतबख्श महल पर आ पहुँची थी। अँधेरा होने लगा था। रेजीडेन्सी की ऊँचाई से घेरे मे आए हुए व्यक्ति आगे बढती हुई सेना को देख रहे थे। वे अति

मोतीमहल

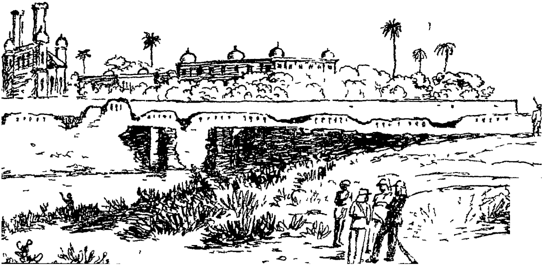

प्रसन्न थे कि घेरे के जीवन के अभावो से उनको छुटकारा मिल जाएगा। कुछ ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रार्थना करने लगे थे। मुक्तिदायिनी सेना के स्वागत के लिए सब उत्कठित थे।

उटरम इस पक्ष मे नही था कि रात्रि को ही रेजीडेन्सी पहुँचा जाए। वह चाहता था कि रात्रि को सैनिक छतर-मजिल में विश्राम करे। कितु हेवलाक ने निश्चय किया कि विश्राम करना उचित न होगा। तुरत रेजीडेन्सी पहुँचना चाहिए। उसने उस मार्ग का चयन किया, जिसके दोनो तरफ मकान थे। मकान की दीवालो मे बने छेदो से उन पर लगातार गोलाबारी हुई। कदम-कदम पर सैनिक गिरने लगे। बचाव का कोई साधन न था। सडको मे क्रातिकारियों ने गहरी खाइयाँ खोद रखी थी। इसी समय कानपुर के हत्यारे नील के एक गोली लगी और वह मर गया।

अँधेरे मे हेवलाक, उटरम और उसकी सेना रेजीडेन्सी पहुँची। ८८ दिन के पश्चात रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो को सहायता मिली, लेकिन आक्रमणकारियों की एक-चौथाई सेना मारी गई या घायल हुई। घनी आबादी से आक्रमण करना विवेकपूर्ण कार्य नही था। प्रत्येक घर से उन पर लगातार गोलियो की बौछार होती रही।

रेजीडेन्सी मे खुशियाँ मनाई गई और ईश्वर को धन्यवाद

दिया गया कि आखिर सहायता आ ही गई, लेकिन यह सहायता भी कैसी सहायता थी। घेरे मे आए हुए व्यक्ति पूर्वत घेरे मे ही रहे। उद्धारक स्वय घेरे मे आ गए थे।

अव रेजीडेन्सी मे उटरम और हेवलाक की सम्मिलित सेना के आने के कारण सैनिको की सख्या बढ गई थी। अत रेजीडेन्सी के वचाव की पुनर्व्यवस्था की गई। रेजीडेन्सी का पुराना क्षेत्र ब्रिगेडियर इगलिस के अधिकार मे बना रहा।

हेवलाक उस विस्तृत क्षेत्र का सचालक बना जिसके अदर कई महल आते थे, और जिन्हे क्रमश क्रातिकारियो से रेजीडेन्सी की सुरक्षा के हेतु सामरिक दृष्टि से छीन लिया गया था। नए सैनिक फरहतबख्श महल और छतर मजिल मे रहने लगे थे। (छतर मजिल में आजकल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट है।) ये दोनो महल रेजीडेन्सी से करीव-करीब मिले थे, और इनके चारों तरफ मजबूत चहार दीवारी वनी थी। नवावों ने अपनी बेगमो के रहने के लिए छतर मजिल वनाई थी। फरहतवख्श महल क्लौड मार्टिन का महल था। उसने उसे नवाब सआदत अली खान को पचास हजार रुपए मे बेच दिया था।

रेजीडेन्सी की सेना और आलमवाग की सेना का एक-दूसरे से किसी प्रकार का सबध नही रह गया था। २ अक्तूवर को उटरम ने लिखा कि मै नगर के एक भी व्यक्ति से किसी प्रकार का पत्राचार नही कर पाया हूँ। उटरम अवध राज्य

मे रेजीडेंट रह चुका था और तत्पश्चात अवध का चीफ कमिश्नर भी रहा था। अत. उसके लखनऊ एव अवध के गण्यमान्य व्यक्तियो से व्यक्तिगत सबध थे। उसे आशा थी कि वह उन्हे प्रभावित कर पाएगा लेकिन क्रातिकारियो ने नगर निवासियो को इतना आतकित कर रखा था कि 'किसी की हिम्मत मुझ से पत्र-व्यवहार करने की नही हुई।' उसकी यह आशा कि उसके लखनऊ पहुँचने पर अवध की जनता मे किसी प्रकार की प्रतिक्रिया होगी केवल निराशा मात्र ही रही।

रेजीडेन्सी से घुडसवार सेना ने प्रयास किया कि घेरे को काटकर कानपुर निकल जाएँ, किंतु यह सभव नही हो पाया। भविष्य मे घेरे को काटकर बाहर निकलने के प्रयास त्याग दिए गए। हेवलाक और उटरम जो रेजीडेन्सी के मुक्तिदाता होकर आए थे, स्वय घेरे मे फँस गए। उन्होने अपनी शक्ति को इस योग्य नही समझा कि वे घेरे को तोड कर बाहर निकल सकते।

रेजीडेन्सी का सफल मुक्ति प्रयास

हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना के रेजीडेन्सी के घेरे मे आने पर स्थित पहले जैसी ही रही। अतर इतना ही था कि घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की सख्या वढ कर तिगुनी हो गई थी। सम्मिलित सेना घेरे से वाहर आ पाने मे अपने को असमर्थ पा रही थी। वह स्वय सकट में फँस गई थी।

भारत मे अग्रेजो का नया सेनापति कोलिन केंपवेल आ गया था। वह एक योग्य सैनिक था, और क्रीमिया के युद्ध मे प्रसिद्धि पा चुका था। उसने निश्चय किया कि वह स्वय रेजीडेन्सी के घेरे मे आई हुई सेना को मुक्ति प्रदान करेगा और अवध क्षेत्र को क्रातिकारियो से विमुक्त करेगा। वह स्कॉटलैंड का रहने वाला था और उसके साथ कई स्कॉटलैंड के हाइलेंडर्स (पहाडियो) की सेनाएँ थी, जो

अपनी वीरता के लिए आज भी प्रसिद्ध है। नेपाल के राणा जग वहादुर क्राति के कुछ वर्ष पूर्व विलायत गए थे। उन्हे हाइलैडर्स की एक सेना ने, जो अव लखनऊ मे थी, सलामी दी थी। वे इन छ फुट लबे जवानो की सेना से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्हे खरीदने की इच्छा प्रकट की थी। उन्हे वताया गया था कि यह सेना स्वयसेवको की है, और उसे बेचा नही जा सकता। इनकी वर्दी मे स्कर्ट होती है, जिसके कारण इन्हे भारतवासी घघरिया पल्टन भी कहते थे। एक तत्कालीन अवधवासी ने एक हाइलैडर्स से प्रश्न किया था कि क्या वे विलायत की रानी की हिजडा पल्टन के सैनिक है। मुस्लिम युग मे हिजडे सैनिक विशेष रूप से हरमो की सुरक्षा के लिए रखे जाते थे। अचूक निशाने वाला वौव, जिसने रेजीडेन्सी के युद्ध मे प्रसिद्धि पाई थी, स्वय एक अफ्रीकी हिजडा था।

सर कोलिन केपवेल भी कानपुर से होता हुआ लखनऊ की ओर वढा। उसकी सेना मे एक भी ऐसा व्यक्ति नही था जो कि लखनऊ एव उसके निकटस्थ क्षेत्र से परिचित हो। अवध को अग्रेजी राज्य मे मिले केवल एक वर्ष हुआ था। अवध क्षेत्र के नक्शे न वन पाए थे। पथ-प्रदर्शक के अभाव मे आक्रमणकारी सेना का आगे वढ़ना खतरनाक हो सकता था। भाग्यवश अग्रेजो को ऐसा व्यक्ति मिल गया। केबेने रेजीडेसी मे लिपिक का कार्य करता था। वह लखनऊ एव

उसके निकटस्थ क्षेत्र से भली भाँति परिचित था। उसन अपनी सेवा को पथ-प्रदर्शक के रूप मे अर्पित किया। एक रात्रि को वह भारतीय भेष मे रेजीडेन्सी से निकला, और कोलिन केपवेल के पडाव मे जा पहुँचा। इस अभियान मे केबेने सदैव सेनापति के साथ रहा और निरतर पथ-प्रदर्शन करता रहा।

दस नववर १८५७ को केबेने सेनापति से मिला। सेनापति ने उसे अपनी आक्रमण योजना वताई। एक वात उसने निश्चयपूर्वक कही कि हेवलाक के मार्ग चयन की गलती फिर दुहराई नही जानी चाहिए। उन्हे ऐसा मार्ग चुनना चाहिए जहाँ आवादी न हो। लखनऊ का प्रत्येक मकान क्रातिकारियो से भरा था। केपवेल ने अपने अभियान को तीन भागो मे विभाजित किया।

सर्वप्रथम उन्हे आलमवाग पहुँचना था, जहाँ कि अग्रेजी सेना की चौकी थी, और रेजीडेन्सी से वे सकेतो द्वारा वातचीत कर सकते थे। सेनापति का विचार था कि आलमवाग मे तबू तथा भारी सामान छोड दिया जाए, ताकि सेना तेजी से आगे वढ सके।

इसके पश्चात वह आलमवाग से नगर के वाहर एक लवा चक्कर लगाकर दिलकुशा पहुँचेगा। दिलकुशा मे वह अपनी गाडियाँ और सामान ले जाने वाले पशुओ को छोड

देगा। अब वह लखनऊ नगर की सीमा पर होगा। रेजीडेन्सी यहाँ से लगभग तीन मील की दूरी पर है। दिलकुशा से ला मार्टिनियर कालेज, सिकदरबाग और शाहनजफ होता हुआ वह रेजीडेन्सी पहुँचेगा।

अभियान का तीसरा और अतिम भाग रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को सही सलामत दिलकुशा पहुँचा देना था।

सर कोलिन केपबेल का पहला पड़ाव ऊँची दीवार से घिरे

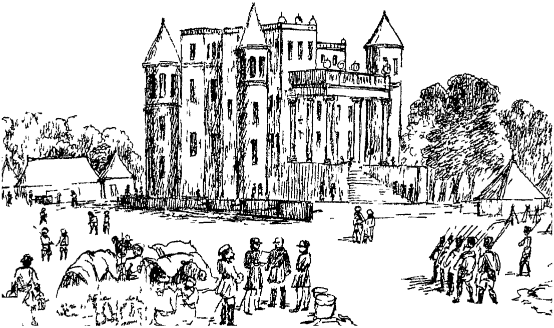

दिलकुशा महल

आलमबाग मे था, जहॉ अंग्रेजी सेना के ग्यारह सौ व्यक्ति उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। १३ नवबर की रात्रि को रेजीडेन्सी की छत पर कोलतार के एक पीपे मे आग लगाई गई। उसकी ऊँची उठती हुई लपटो के माध्यम से आलमबाग मे एकत्र सेना को सूचना दी गई थी कि रेजीडेन्सी के सैनिक आने वाली लडाई के लिए तैयार है, और अपना कर्तव्य निबाहेगे। उसके उत्तर मे आलमबाग से भी नीली रोशनी दिखाई गई। इसने रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो मे नई आशा का सचार किया था।

आलमबाग से केंपबेल की सेना नगर के बाहर लबा चक्कर लगाकर दिलकुशा पहुँची। दिलकुशा शब्द के अर्थ है 'चित्त को प्रसन्न करने वाला'। दिलकुशा का निर्माण तीन वर्ग मील विस्तृत जगल के मध्य किया गया था। यहाँ नवाब शिकार खेलने के लिए आते थे। मार्ग मे उन्हे किसी प्रकार की रुकावट नही मिली। दिलकुशा पर क्रातिकारियो का अधिकार था, लेकिन वे सीमित सख्या मे ही वहाँ थे।

जब अंग्रेजो की सेना दिलकुशा के समीप पहुँची, तो क्राति-कारियो ने अपनी छ छिपी हुई तोपो से उन पर गोलाबारी की। अंग्रेजो ने भी गोलाबारी की, और एक घटे के अदर दिलकुशा ले लिया। क्रातिकारियो ने ढालू भूमि को पार कर ला मार्टिनियर कालेज मे जाकर शरण ली। दिलकुशा की सुरक्षा के लिए केंपबेल ने बारह सौ सैनिको को वहाँ

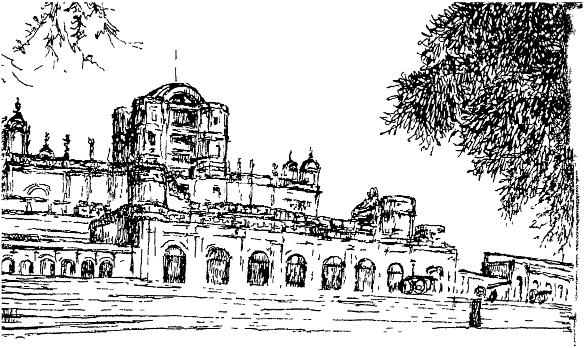

ला मार्टिनियर कालेज

चोकसी रखने के लिए छोडा ।

अग्रेजो ने क्रातिकारियो का पीछा किया और उनको ला मार्टिनियर कालेज से हटा दिया । यह भवन कालेज वनने के पूर्व फ्रासिसी 'क्लौड मार्टिन' का निवास स्थान था । मरते समय उसने इस भवन और अपनी सपत्ति का एक ट्रस्ट वनाया, जो इस कालेज को चलाता है । पूर्व योजना के अनुसार सव तबू एव भारी सामान दिलकुशा मे छोड

दिया गया था, अत उस रात्रि को सैनिक अपने ओवर कोटो को पहने हुए, हथियार बगल मे दबाए हुए, जमीन पर ही सो गए। रात्रि को रेजीडेन्सी के निवासियो ने नीली रोशनी को अधिक निकट देखा। आज वह ला मार्टिनियर कालेज की छत से टिमटिमा रही थी। पास ही केबेने छत के ऊपर आग जला रहा था। सकेतो द्वारा यह तय हो गया था कि यदि आग जलने का सकेत मिले, तो समझ लेना चाहिए कि अगले दिन प्रात: काल रेजीडेन्सी की सेना को घेरे से निकल कर मार्ग के मकानो को ले लेना है। इस प्रकार रेजीडेन्सी के व्यक्ति अधिक से अधिक सुरक्षापूर्वक रेजीडेन्सी खाली कर दिलकुशा पहुँच सकते थे।

अगले दिन प्रात: काल सैनिको को चाय के साथ तीन दिन का राशन दिया गया। इसके यह अर्थ थे कि अगले तीन दिन बहुत ही अनिश्चित होगे, भोजन की व्यवस्था की भी सभावना कठिनता से ही होगी, और युद्ध भी कितने समय तक चलेगा और कैसा रूप ले लेगा, यह भी नही कहा जा सकता था। हर समय सैनिक को युद्ध के लिए तैयार रहना था। सैनिको को सचेत किया गया कि चूँकि लडाई घिरे हुए स्थानो मे होगी अत बारूद का प्रयोग कम से कम किया जाए। पास की लडाई मे जिसमे हाथापाई की अधिक सभावना थी, शत्रु एव मित्र, दोनो पक्ष समान रूप से घायल हो सकते थे। सर कोलिन केपवेल ने सिपाहियो को यह आदेश दिया—

''सिपाहियो ! तुम्हे कठिन कार्य करना है। जहॉ तक सभव हो तीन-तीन सैनिक साथ-साथ रहे । घिरे हुए स्थानो मे पहुँचते ही सगीनो का प्रयोग करो । मध्यवर्ती सैनिक को सगीन से आक्रमण करना चाहिए, और उसके दाएँ वाएँ वाले सैनिकों को उसकी सहायता करनी चाहिए । किलेबदी के अदर बदूक की गोलियॉ न चलाई जाएँ, क्योकि उससे अपने पक्ष के लोग भी घायल हो सकते है ।''

नहर को पार कर गोमती नदी के दाएँ किनारे एक मील चलकर अग्रेजी सेना वाई ओर घूम कर सिकदरवाग पहुँची । सुवह के नौ वजे थे । नदी के किनारे कुहरा छाया हुआ था । अग्रेजो को मार्ग मे किसी प्रकार की रुकावट नही मिली । सँकरे मार्ग के दोनो तरफ मिट्टी की दीवालें थी, जो आम के वगीचो की घेरेबदी थी । यह अग्रेजी सेना का भाग्य ही था कि मार्ग के किनारे की दीवालो के पीछे क्रातिकारियो ने किसी प्रकार का प्रबध नही किया था । सिकदरबाग के चारो तरफ एक बीस फुट ऊँची मजबूत दीवाल थी, और उसका क्षेत्रफल १५० वर्ग गज था । कैपवेल की सेना और रेजीडेन्सी के मध्य यह क्रातिकारियो की एक महत्वपूर्ण चौकी थी ।

सिकदरवाग मे दो हजार चुने हुए वीर क्रातिकारी एकत्र थे । उसकी दीवालो मे प्रति गज की दूरी पर छेद थे, जहॉ से आक्रमणकारियो पर गोलावारी की जा सकती थी । घेरे

के अदर कुछ दुमजिले मकान थे, जहाँ से शत्रु पर दूर-दूर तक मार की जा सकती थी। क्रातिकारियो ने निश्चय किया था कि वे अत समय तक लडते रहेगे। मर भले ही जाएँ किन्तु भागेगे नही।

जब क्रातिकारियो ने अग्रेज फौज देखी तो उन्होने उस पर तोप और बदूको से गोलाबारी की। अग्रेज सिपाही यत्र तत्र गिरने लगे, अत उनको लेटने की आज्ञा दी गई। अग्रेजो की तोपो से भी सिकदरबाग की दीवालो को तोडने के लिए गोलाबारी की गई, लेकिन उस पर कोई विशेष असर नही हुआ। अकस्मात एक अग्रेज सिपाही को दीवाल मे प्रवेश करने योग्य एक दरार दिखाई दी। अग्रेज सेना उससे प्रवेश कर गई। अब क्रातिकारियो और अग्रेज सैनिको मे सगीन और तलवार का भयकर युद्ध हुआ। न दया की भीख माँगी गई और न किसी को उसकी आशा ही थी। प्रत्येक क्रातिकारी अपने स्थान पर लडता हुआ मारा गया। घायल और धराशायी क्रातिकारियो मे इतना जोश था कि उन्होने अग्रेज सैनिको से कहा कि यदि हम उठ पाते तो तुम्हे मार डालते। क्रातिकारियो की लाशे इस प्रकार पट गई थी कि एक के ऊपर एक, उनकी ऊँचाई चार फुट तक हो गई थी। अवध क्षेत्र की यह सबसे भयकर लडाई थी, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति अपने स्थान पर लडता हुआ मारा गया। जहाँ पर वह था वही डटा रहा, हटा नही।

सिकदरबाग के बीच में पीपल का एक घना वृक्ष था। उसके नीचे पानी से भरे मिट्टी के कई मटके रखे थे। मार-काट के पश्चात अग्रेज सैनिक अपनी प्यास बुझाने के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे आए। वहाँ उन्हे ठडा जल और ठडी छॉह दोनो मिले। कैप्टन डौसन ने देखा कि पेड के नीचे कई मृत अग्रेज सैनिक पडे है। उनके घावो का निरीक्षण कर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा, कि वे सब किसी ऊँचे स्थान से गोली चलाकर मारे गए थे। उसको सदेह हुआ कि पीपल के पेड पर छिप कर कोई व्यक्ति गोली चला रहा था। उसने उस वृक्ष का निरीक्षण करवाया। एक व्यक्ति वहाँ छिपा बैठा था। उस पर निशाना लगाया गया, और वह वृक्ष से लुढक पडा। वह एक वीरांगना थी जो लाल जैकेट और गुलाबी पैजामा पहने हुए थी। उसके पास दो पिस्तौले थी। उसने आधा दर्जन से अधिक अग्रेज सैनिको को मार डाला था।

सिकदरबाग से रेजीडेन्सी की ओर केवल पॉच सौ गज को दूरी पर शाह नजफ है। यह नवाव गाजी उद्दीन हैदर का मकबरा है। उसके चारो तरफ एक मजबूत दीवाल थी। दीवाल के चारों तरफ मिट्टी के कच्चे मकान थे। दोपहर का समय था। केंपवेल की यह इच्छा थी कि गोधूलि वेला तक शाह नजफ को भी ले लिया जाए। अग्रेजो ने शाह नजफ की दीवार पर गोलाबारी प्रारंभ की। गोमती नदी

के पार से क्रातिकारियो ने भी अग्रेज आक्रमणकारियो पर गोलाबारी शुरू की ।

शाह नजफ की रक्षा करने वालो मे कुछ तीरदाज भी थे, जो धनुष और वाण का प्रयोग कर रहे थे । यह देखकर विस्मय होता है कि जिस युग मे इनफील्ड रायफल का प्रयोग होता था, उस युग मे तीर और कमान का भी प्रयोग हो रहा था । उनके तीर वडे वेग एव शक्ति से सही निशाने पर बैठते थे। एक सिपाही ने अपना आँखो देखा हाल इस प्रकार लिखा है—उसके समीप एक सिपाही के सिर को भेदता हुआ तीर सिर के पीछे एक फुट वाहर निकल गया। दूसरे सिपाही के दिल को छेदता हुआ तीर छ गज पीछे जमीन पर गिर पडा । सिपाही तडपा और तुरत मर गया ।

अग्रेजो पर शाह नजफ और नदी के पार से गोलाबारी हो रही थी । तीन घटे की गोलाबारी का भी शाह नजफ की मजबूत दीवालो पर कोई असर नही पडा था । दीवाल के चारो तरफ की झोपडियो को जला दिया गया था । अग्रेजी सेना ने दीवाल पर चढकर आक्रमण करने की सोची, लेकिन क्रातिकारियो ने उन पर ईट, खौलता पानी, तेल मे भीगे हुए जलते कपडे डालकर वार किया और अदर नही आन दिया । केपवेल ने सिपाहियो को इन शब्दों मे ललकारा—

"सैनिको, याद रखो । रेजीडेन्सी के अदर औरत और बच्चो का जीवन सकट मे है । उनको वचाना आवश्यक है। प्रश्न यह नही उठता है कि तुम रेजीडेन्सी को ले सकते हो

या नही । उसे तुम्हे हर हालत मे लेना है ।''

अकस्मात शाह नजफ मे बिगुल बजा । उसका अर्थ था कि स्थान छोड़ कर कूच कर दो । अग्रेज सशय मे पड गए कि इसका क्या अर्थ है । इसमे कोई चाल तो नही है ? शाह नजफ की किलेबदी के अदर सुरक्षित सेना क्यो कर वहाँ से हटने लगी । लेकिन कुछ समय पश्चात गोलाबारी भी बद हो गई । इससे अंग्रेजो को विश्वास हो गया कि बिगुल का बजना कोई चाल न थी, वरन वास्तविकता थी । बात यह थी कि शाह नजफ मे क्रातिकारियो ने पर्याप्त मात्रा मे बारूद एकत्र कर रखा था, और उन्हे भय हो गया था कि तोप के गोलो के लगातार आक्रमण से यदि बारूद मे आग लग गई, तो वे भी उसमे भुन जाएँगे ।

प्रश्न यह उठता है कि क्यो क्रातिकारी बारूद के ढेर को छोड कर चले गए, यदि एक क्रातिकारी वहाँ रुक जाता, और अग्रेज सेना के अदर आने पर विस्फोट कर देता तो सैकड़ो अग्रेज सैनिक मर जाते ।

१७ नवबर को रेजीडेन्सी मे यह सदेश प्रसारित किया गया—

''कल रात्रि १८ नवबर को प्रत्येक व्यक्ति को रेजीडेन्सी छोडना है । अपने साथ उतना ही सामान ले जा सकते है, जितना कि स्वय ले जा सके ।''

जिस समय कोलिन केपबेल सिकंदरबाग मे लड रहा था,

उस समय हेवलाक रेजीडेन्सी और शाह नजफ के मध्य की क्रातिकारी चौकियो पर कब्जा कर रहा था। अब रेजीडेन्सी खाली करने वालो के लिए रेजीडेन्सी से दिलकुशा तक सुरक्षित मार्ग बन गया था। मार्ग को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए सब प्रकार की सावधानियाँ बरती गई थी। खुले हुए स्थानो को कनातो से ढक दिया गया था, ताकि निशाने वालो से रेजीडेन्सी छोडने वाले बच सके। ऊँची सडको मे खाइयाँ खोद दी गई थी। स्त्रियो को डोलियो से उतरकर, खाइयो को पैदल पार करना पडा था। यह तय किया गया था कि पहले महिलाएँ, बच्चे और घायल दिलकुशा पहुँचा दिए जाएँगे। इसके पश्चात रेजीडेन्सी की पुरानी सेना ब्रिगेडियर इगलिस के साथ रवाना होगी। नदी के किनारे के स्थानो से हेवलाक की सेना इगलिस की सेना से आ मिलेगी। वे मोतीमहल की अग्रिम चौकी को पार कर शाह नजफ मे रुक जाएँगे। केंप-बेल सिकदरबाग मे अपने तोपखाने और पैदल सेना के साथ तैयार रहेगा। यदि क्रातिकारियो ने रेजीडेन्सो से निकलने वालो का पीछा किया तो वह उनके प्रयास को विफल करेगा, और तब तक चौकसी करेगा, जब तक कि आखिरी आदमी सही सलामत दिलकुशा न पहुँच जाए।

२२ नवबर को रेजीडेन्सी की पुरानी सेना ने अर्धरात्रि को रेजीडेन्सी से प्रस्थान किया। क्रातिकारियो को सशय न हो कि रेजीडेन्सी खाली की जा रही है, इसीलिए सब मकानों

मे मोमबत्ती एव लालटेने जलती हुई छोड दी गई थी।
इगलिस रेजीडेन्सी की पुरानी सेना का कमाडर था। उसने इसे अपना विशेषाधिकार समझा कि उसे ही सबसे बाद रेजीडेन्सी को छोडने का श्रेय मिलना चाहिए। कहा जाता है कि उटरम ने मुस्करा कर अपना हाथ इगलिस की ओर बढाया और कहा—"हम साथ-साथ निकले।"
इस पर इगलिस ने कहा—"श्रीमान, आप मुझे अपने मकान के दरवाजे को बद करने की आज्ञा देगे।"
लेकिन रेजीडेन्सी से सबसे बाद मे निकलने वाला व्यक्ति इगलिस नही कैप्टन वाटरमैन था। जब रेजीडेन्सी खाली की जा रही थी, तो वह सोता रह गया था। नीद खुलने पर वह अपना होश-हवास खो बैठा। लेकिन भाग्यवश कुछ दूरी पर उसे आखिरी टोली के व्यक्ति जाते दीखे, दौड कर वह उनके साथ हो लिया।

यह कहा जाता है कि रेजीडेन्सी से भूखे लोग जब दिलकुशा पहुँचे थे तो उन्होंने एक ही दिन मे बीस दिन का राशन चट कर दिया था।

रेजीडेन्सी पर ३० जून को घेरा डाला गया था और २२ नवबर को पॉच माह पश्चात घेरे मे आए हुए व्यक्तियों को छुटकारा मिल पाया था। लेकिन अभी लखनऊ नगर और अवध का क्षेत्र क्रातिकारियो के पूर्ण अधिकार मे था। सर कलिन केपबेल को अभी बहुत कुछ करना बाकी था।

सिंहावलोकन

हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना, २२ नवबर को रेजीडेन्सी से बाहर निकलने मे सफल हुई थी। इसके दो माह पूर्व अग्रेजो ने दिल्ली भी ले लिया था। इन दो घटनाओ ने सन '५७ की क्राति को नया मोड़ दिया। अव तक क्रातिकारी अग्रेजो की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली थे, कितु अव अग्रेजो का पलडा भारी पडने लगा। उनको निरतर विलायत से सैनिक सहायता मिलने लगो।

अवध के क्रातिकारी निश्चय ही चिनहट के युद्ध के पश्चात रेजीडेन्सी को ले सकते थे, लेकिन वे समय के महत्व को समझ न पाए। क्रातिकारी युद्ध को खीचते रहे। उनको इस बात का आभास नही हो पाया कि युद्ध जितनी जल्दी खतम हो जाएगा उनकी विजय की उतनी ही अधिक सभावना होगी। वे यह समझ नही पाए कि जितना ही

अधिक समय खिचता जाएगा उतनी ही अधिक अग्रेजो की शक्ति भी बढती जाएगी ।

यदि अवध के क्रातिकारी नेता दूरदर्शी होते और उनका दृष्टिकोण अखिल भारतीय होता तो रेजीडेन्सी के पश्चात उनको कानपुर के क्रातिकारियो को सहयोग देना चाहिए था । लेकिन अवध के क्रातिकारियो को लखनऊ के अतिरिक्त न कुछ दिखा और न कुछ सूझा । कानपुर से ही तो उनको दवाने के लिए अग्रेजी फौज आती । यदि कानपुर और लखनऊ के क्रातिकारियो की सहयोजना होती तो वे हेवलाक को चक्की के दो पाटो के वीच के दानो की भॉति कभी भी पीस सकते थे । उनको केवल एक साथ हेवलाक पर दोनो तरफ से आक्रमण करना था—कानपुर के क्राति-कारियो को पीछे से और लखनऊ के क्रातिकारियों को आगे से ।

सर कोलिन केपवेल रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को छुटकारा दिलाने मे सफल हुआ था । घेरे से निकाल कर उसने उन्हे आलमबाग पहुँचा दिया था। यहॉ लगभग चार हजार सैनिकों की छावनी थी । इस समय केपवेल को कानपुर से समाचार मिला कि तॉतिया टोपे के नेतृत्व मे ग्वालियर की सेना सक्रिय हो रही है। वह उटरम को आलमवाग छोड़कर कानपुर की ओर रवाना हुआ ।

इस समय आलमबाग की अवध मे लगभग वही स्थिति हो

गई थी, जो पहले रेजोडेन्सी की थी। रेजीडेन्सी के घेरे से अग्रेज वाहर निकल आए थे । किंतु आलमवाग मे भी वे पूर्णतया सुरक्षित नही थे। आलमवाग मे क्रातिकारियो ने कई आक्रमण किए थे। स्वयं हजरत महल ने भी एक वार अपने नेतृत्व मे उस पर आक्रमण किया था। मौलवी अहमदउल्लाह शाह ने भी उसको लेने के कई प्रयत्न किए थे, लेकिन विफल रहा था । क्राति-कारियो के लिए यह गहत्वपूर्ण था कि कोलिन केपवेल के लौटने से पूर्व ही आलमवाग की सेना को नष्ट कर दिया जाए। उसके पहुँचने पर अग्रेजो की शक्ति दुगनी हो जाती किंतु क्रातिकारी आलमवाग को लेने मे सफल नही हुए।

आलमवाग की चौकी कोलिन केपवेल की अग्रिम चौकी का महत्व रखने लगी थी। तॉतिया टोपे से निपट कर उसे पुन. लखनऊ वापस लौटना था। अभी नगर क्रातिकारियों के हाथ मे था, और सपूर्ण अवध मे यत्र तत्र क्रातिकारियों का जमघट था।

दिसबर के प्रारभ में कोलिन केपवेल लखनऊ की ओर रवाना हुआ। जग वहादुर की गोरखा सेना भी उसकी मदद के लिए आ पहुँची थी। हेनरी लारेन्स के भाई जौन लारेन्स ने पजाव से भी सेना भेज दी थी। पजाव को अग्रेजी शासन में आए केवल छ वर्ष हुए थे, लेकिन जौन लारेन्स ने वहाँ ऐसा जनप्रिय शासन स्थापित किया था कि सिख अग्रेजो

लखनऊ नगर पर अंग्रेजो का कब्जा हो जाने के बाद लगभग ६००० क्रातिकारियो ने बेगम हजरतमहल और फैजाबाद के मौलवी के नेतृत्व मे मूसाबाग की मोर्चेबदी की थी। सर जेम्स उटरम इस पर १६ मार्च १८५८ के पहले कब्जा न जमा सका। और कब्जा करने पर उसके हाथ केवल इमारत आई, क्रातिकारी नही।

के परम मित्र बन गए थे। अब अंग्रेजी सेना मे सैनिको की कमी न रह गई थी। केपबेल पहली मार्च '५८ तक लखनऊ नगर पर पूर्ण अधिकार करने मे सफल हुआ था। अवध मे

लडाई चलती रही, क्योकि क्रातिकारियों की टोलियाँ जगह-जगह बिखरी लडती रही।

लखनऊ-विजय के पश्चात लूट मार प्रारभ हुई। प्रत्येक विजित नगरी की भॉति लखनऊ भी श्रीविहीन हो गई थी। अधिकाश सपन्न लोग तो पहले ही नगर छोड कर चले गए थे। अग्रेज, सिख और गोरखे सिपाहियो ने तो उसे लूटा ही, साथ ही नगर के लुच्चे और लफगो ने भी लूट मे पूरा भाग लिया। नगर मे नाटकीय दृश्य होने लगे थे। जिसकी समझ मे जो आया उसने वही किया। मनुष्यो मे किसी प्रकार का नियत्रण नही रह गया।

युद्ध काल मे कई घरो से दरवाजा बद करके लोग लडे थे। इन घरो मे बारूद की बोरियो को दियासलाई दिखाकर अदर फेक दिया जाता था। भुनी और जली हुई लाशें वही सडती रही थी। नगर मे भयकर दुर्गंध फैल गई थी। कई सहस्त्र व्यक्ति नगर की सफाई करने एव घरो से मुर्दे निकालने मे लगाए गए थे। लखनऊ नगर एव उसके समीप के क्षेत्र मे मनुष्य, घोडो, गधों आदि की लाशे सड़ती रही, और मक्खियो के कारण जीना कठिन हो गया।

युद्ध का अत हो गया था, लेकिन युद्धजनित घृणा एव अत्याचारो के प्रतिफल बदला लेने का दूसरा दौर प्रारभ हो गया था। अग्रेज विजयी हो गए थे। उनके हाथ मे शक्ति

थी। उन्होने दोषी एव निर्दोष व्यक्तियो मे किसी प्रकार का अतर नही रक्खा। जो मिला उसे फॉसी पर लटका दिया। गॉव के गॉव जला दिए गए। न स्त्री, न पुरुष और न बच्चो का ही विचार किया गया। इन अत्याचारो के फलस्वरूप भारतवासियो एव अग्रेजो मे स्थायी वैमनस्य हो गया। दोनो जातियो ने एक दूसरे का विश्वास छोड दिया। उनमे कटुता बनी रही। इसका अत तभी हुआ जब भारत स्वतत्र हो गया।

कई जमीदार नवाबी व्यवस्था मे स्वय छोटे-मोटे नवाब के सदृश्य थे। अपनी रय्यत पर उनका अपरिमित प्रभाव था। क्राति मे भाग लेने के फलस्वरूप वे राजा से रक हो गए थे। उनकी जमींदारियॉ छीन ली गई थी, और उन लोगो को दे दी गई थी जिन्होने अग्रेजों का साथ दिया था। इस प्रकार अवध में अग्रेजो के पिट्ठू एक नए जमीदार वर्ग का सृजन हुआ।

अवध की क्राति का वास्तविक नेता एव सेनानी मौलवी अहमदउल्लाह शाह था। अवध में वह अग्रेजो से निरतर लडता रहा, और जब अग्रेजो ने अवध पर अधिकार जमा लिया, तो वह रूहेलखड जा पहुँचा। वहॉ भी उसने स्वतत्रता सग्राम का सगठन किया। अवध के वीर सेनानी अहमदउल्लाह शाह का विश्वासघात पूर्वक वध कर दिया गया। चिनहट के युद्ध मे बरकत अहमद ने सर हेनरी

लारेन्स को बुरी तरह हराया था। लेकिन यह आश्चर्य का विषय है कि आगे चलकर वरकत अहमद के सदृश्य सुयोग्य एव दक्ष सैनिक को किसी महत्वपूर्ण सैनिक अभियान का सचालन करने का अवसर नही दिया गया। बेगम हजरत महल ने नेपाल मे जाकर शरण ली।

अंग्रेजी पक्ष के उल्लेखनीय सेनानायक हेवलाक, उटरम, सर हेनरी लारेन्स एव सर कोलिन केपवेल थे। हेवलाक की कब्र आलमवाग और सर हेनरी लारेन्स की कब्र रेजीडेन्सी मे है। हेवलाक युद्धजनित परिश्रम एव बीमारी से मरा। सर हेनरी लारेन्स गोले की मार से वीर गति को प्राप्त हुआ था। 'कानपुर का कसाई' नील भी रेजीडेन्सी मे घुसते समय एक गोली का शिकार हुआ। हडसन, जिसने बहादुर शाह के दो लडकों को गोली से मारा था लखनऊ मे मारा गया। केबेने ने सर कोलिन केपवेल के अभियान में पथ-प्रदर्शक का कार्य किया था। उसे वीरता के सबसे बड़े पदक विक्टोरिया क्रॉस से विभूषित किया गया, और युद्ध के पश्चात वह सिविल जज बना दिया गया।

कपनी के शासन का अत हुआ। १ नवबर १८५८ को ब्रिटेन की सम्राज्ञी ने भारत का शासन अपने हाथ मे लिया। यह जौन कपनी का मृत्यु दिवस था। स्वयं ब्रिटेन की पार्ल्यामेंट के सीधे सरक्षण मे भारत का शासन प्रारंभ हुआ।

यूदध के फलस्वरूप लखनऊ रेजीडेन्सी खडहर हो गई थी।

यह तब से उसी दशा मे है, और सन '५७ की क्रांति की याद दिलाती है। यह भारत सरकार की एक सरक्षित इमारत है, और अपना ऐतिहासिक महत्व रखती है।

जब भी तुम्हे अवसर मिले, तुम लखनऊ जाओ और वहाँ की इस प्रसिद्ध इमारत को अवश्य देखो। रेजीडेन्सी मे तुम्हे सन सत्तावन की क्राति से सबधित अनेक चित्र, फोटो, नक्शे आदि मिलेगे। उनकी सहायता से तुम्हें उस इतिहास को समझने मे मदद मिलेगी जो तुमने इस पुस्तक मे अभी पढा।

रेजीडेन्सी के खडहरो से यदि तुम दोस्ती कर सको तो वहाँ की एक-एक ईट तुम्हे अपनी कहानी बताएगी। दिखाएगी तुम्हे वह तस्वीर जो उसने अपनी आँखो से देखी थी। सुनाएगी तुम्हे वह दास्तान जो वीरता, बर्बरता और देशप्रेम से पगी हुई है।

सन '५७ की क्राति के ठीक सौ वर्ष पश्चात् रेजीडेन्सी की निचली भूमि मे गोमती के किनारे, स्वतत्र भारत ने सगमरमर का एक स्तभ उन क्रातिकारियो की याद मे बनवाया है जिन्होने अपना जीवन भारत की स्वतत्रता के लिए अर्पित किया था। सगमरमर के स्तंभ पर आलेख है—

"सौ दो

"भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के
अज्ञात शहीदों की
पावन स्मृति मे
जिनका बलिदान हमे,
अनत काल तक प्रेरणा देगा ।"

प्रति वर्ष शहीद-दिवस को इस स्थान से लखनऊ निवासी गोमती नदी मे दीप-दान करते है। सैकडो दीपक एक के वाद एक तैरते हुए दूर तक चले जाते है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश के तारे ही शहीदो की पावन स्मृति मे आकाश दीप वन कर गोमती नदी मे उतर आए हो। ●

9541083 50225 8h 38L

This book was taken from the Library on the date Last stamped A fine of 10 paise will be charged for each day the book is kept over time

6 DEC 97 375 (9/6/97)

22 DEC 97 329 (9/2/97)

लखनऊ रेजीडेन्सी का घेरा

श्रीचरण काला

का
आत्म-
कर सकें,
मि देश-प्रेम की

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशि

प्रथम सस्करण

मार्च १९७२ · चैत्र १८९४

P U 2 T

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, १९७२

मूल्य : दो रुपए

ग मे, सैयद ऐनुल आबेदीन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और
राष्ट्रीय शिक्षा सस्थान भवन, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-१६
त तथा न्यू इडिया प्रिंटिग प्रेस, खुरजा मे मुद्रित।

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तको के अतिरिक्त, बालक की इच्छा कुछ और भी पढने की होती है। हमारे देश मे आजकल उसे जो कुछ पढने को मिलता है वह प्राय कोरी कल्पना तक ही सीमित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस कमी को अनुभव किया है और कुछ रोचक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई है जिनमे कि बालको का ज्ञानवर्धन हो सके और साथ ही उनमे स्वय पढने की प्रवृत्ति जाग्रत हो सके। यह कार्य सामाजिक विषय के क्षेत्र मे सामाजिक विज्ञान एव मानविकी विभाग कर रहा है।

बालक का भावात्मक विकास सयत एव सतुलित हो इस कार्य मे सहायक पुस्तके काफी योग दे सकती है क्योकि वे उसके जीवन, वातावरण, परिस्थितियो एव समाज और पदार्थों का एक ऐसा रूप उपस्थित कर सकती है जो सयत हो, वास्तविक हो, सच्चा एव सरल हो। जिसमे बालक स्वय को रख कर अपने को देख, समझ और परख सके।

आज की विषम परिस्थितियो मे ऐसी सहायक पुस्तको का महत्व और भी बढ गया है जो बालको मे आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान और अनुशासन की भावना जाग्रत एव विकसित कर सकें, जो उनमे राष्ट्रीय एकता के भाव भर सकें और उनमे देश-प्रेम की भावना जाग्रत कर सके।

इन कुछ सिद्धातो को सामने रख कर ये सहायक पुस्तकें तैयार की गई है। इनमे जो भी ज्ञान दिया गया है वह रुचिकर घटनाओ के माध्यम से सीधी, सरल एव प्रभावोत्पादक भाषा मे दिया गया है। बालको की आवश्यकताओ, पठन-रुचियो और भावनाओ का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है।

मुझे आशा है ये पुस्तके बालको की ज्ञान-वृद्धि मे सहायक होकर उचित भारतीय दृष्टिकोण का निर्माण करने मे उपयोगी सिद्ध होगी।

स० वि० चद्रशेखर अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद

अगस्त १९७१
नई दिल्ली

विषय-सूची

	पृष्ठ
लखनऊ रेजीडेन्सी	१
अवध का क्षुब्ध वातावरण	६
क्राति की चिनगारी	२०
युद्ध की तैयारी	३०
रेजीडेन्सी के घेरे मे जीवन	३६
रेजीडेन्सी का मुक्ति प्रयास	५२
हेवलाक का अवध छोडना	६३
मददगार स्वय घेरे के अदर	६८
रेजीडेन्सी का सफल मुक्ति प्रयास	८१
सिंहावलोकन	६५

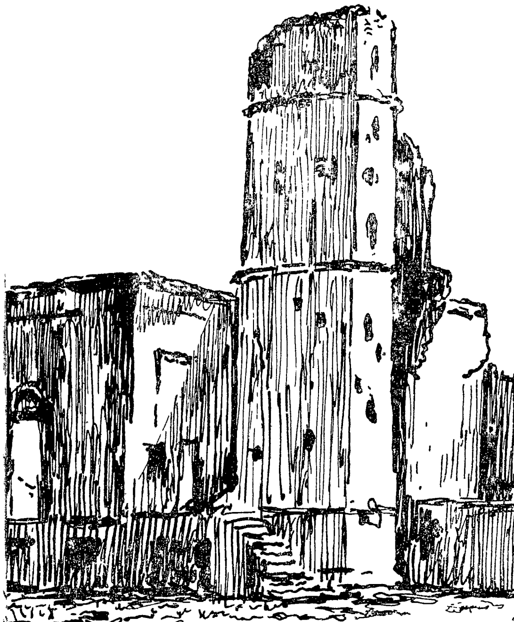

लखनऊ रेजीडेन्सी

लखनऊ रेजीडेन्सी ... सन १८५७ ... भारतीय स्वतत्रता युद्ध का प्रथम सग्राम !

अवध के क्रातिकारियो ने लखनऊ रेजीडेन्सी को घेर रखा था। उस पर दिन-रात गोलाबारी हो रही थी। रेजीडेन्सी की मीनार तोप के गोलो की मार से टूट गई थी। मकानो की छते गोलो के धमाकों से चकनाचूर हो गिर गई थी।

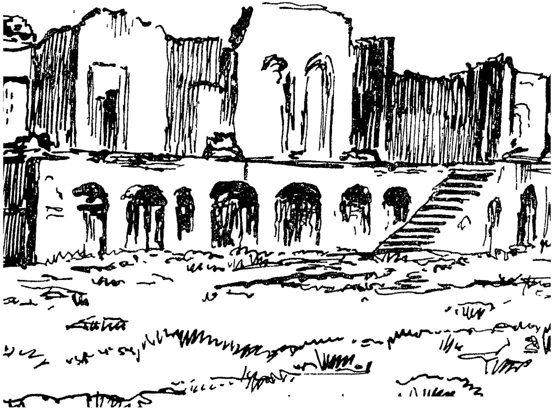

दीवाले जगह-जगह टूट गई थी और सर्वत्र उन पर गोलो के निशान बन गए थे। रेजीडेन्सी के तमाम भव्य भवन खडहर हो गए थे। आज भी वे खडहर उसी दशा मे विद्यमान है।

रेजीडेन्सी का यह घेरा पॉच महीने तक बना रहा और उस पर निरतर गोलाबारी होती रही थी।

(लखनऊ रेजीडेन्सी नगर का प्रमुख दर्शनीय स्थान है। वह गोमती नदी के दाएँ किनारे एक टीले पर स्थित है। उसकी स्थिति की तुलना हीरे की कनी से की गई है। यह तैंतिस एकड क्षेत्र मे फैला है, इसमे सोलह भवन थे। गोमती नदी के दाई ओर लगभग तीन सौ गज़ चौडा मैदान है, जो क्रमश: रेजीडेन्सी के मध्य मैदानी भाग तक लगभग एक हजार फुट की ऊँचाई तक उठता हुआ चला जाता है। नदी के किनारे से रेजीडेन्सी पहुँचने के लिए हल्की चढाई तय करनी पड़ती है।)

रेजीडेन्सी के समस्त भवन टीले के ऊपर चौरस मैदानी भाग मे बने थे जिसके चारो ओर फैला हुआ ढालू मैदान था। इस कारण रेजीडेन्सी की किलेबदी सरलता से की जा सकती थी। यदि मैदानी भाग की परिक्रमा की जाए तो हम देखेंगे कि ढालू भाग के प्रारंभ मे ही उस समय की रक्षा पक्ति थी, जो मुनारो के द्वारा दिखाई गई है। इस पक्ति में खाइयॉ खोदी गई थी, दीवाले उठाई गई थी, उपयुक्त

स्थानो मे तोपे लगाई गई थी और रक्षार्थ बचाव के अन्य उपाय किए गए थे। इस रक्षा पक्ति मे चार दिशाओ मे चार प्रशस्त तोपखाने भी थे। ये तोपखाने ऐसे स्थानो पर लगाए गए थे, जहाँ से दूर-दूर तक सामने और दाएँ-बाएँ मार की जा सकती थी। पूर्व दिशा मे गोमती की ओर रेडन का तोपखाना था। इससे नदी के किनारे के विस्तृत मैदान मे गोलाबारी की जा सकती थी। लोहे के पुल पर भी यहाँ की शक्तिशाली तोपो से गोलाबारी की गई थी। जब सर हेनरी लारेन्स जो उस समय अवध का चीफ कमिश्नर था, चिनहट के युद्ध मे क्रातिकारियो से हार कर रेजीडेन्सी मे शरण लेने के लिए भागकर आया था, तो क्रातिकारी उसका पीछा कर रहे थे।

रेडन तोपखाने की मार के कारण क्रातिकारी लोहे के पुल को पार नही कर पाए थे। रेजीडेन्सी के दक्षिण-पूर्व मे बेली गार्ड, रेजीडेन्सी का प्रमुख द्वार था। इसके दाई ओर बेली गार्ड तोपखाना था, जहाँ से उन पर मार की जा सकती थी, जो इस द्वार द्वारा अदर घुसना चाहते थे।

रेजीडेन्सी के निवासियों के सहायतार्थ जब हेवलाक कानपुर से आया था तो वह इसी द्वार से रेजीडेन्सी में घुसा था। रक्षा पक्ति के दक्षिण भाग मे कानपुर तोपखाना था। दक्षिण-पश्चिम मे गाबिन का तोपखाना था। इनके अतिरिक्त कई स्थानों पर तोपो का प्रबध किया गया था।

आवश्यकतानुसार आक्रमण होने पर ये तोपे हमले के स्थानों पर ले जाई जा सकती थी।

रेजीडेन्सी का प्रमुख भवन स्वय रेजीडेंट का तिमजिला निवास स्थान था। आज भी दूर से ही इसकी टूटी मीनार दिखाई देती है। यह मीनार मुख्य भवन से कुछ ही फुट अधिक ऊँची थी। इसमें दिन-रात सतरी तैनात रहते थे, जो दूर-दूर तक देख सकते थे कि कोई शत्रु तो निकट नही आ रहा है। यहाँ से शत्रु की गतिविधि पर देखरेख की जा सकती थी, यही कारण है कि मीनार पर सबसेप्रव ल गोलाबारी हुई थी। सबसे ऊँची मजिल तो करीब-करीव

बेलीगार्ड, रेजीडेन्सी का मुख्य द्वार

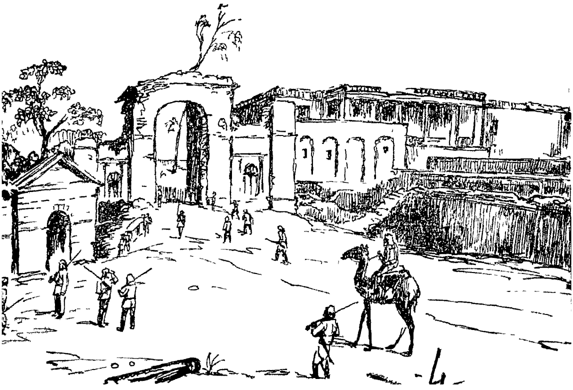

गिर ही गई थी। यहाँ से निशानेबाज भी चुन-चुन कर शत्रुओ को मार सकते थे। यह मीनार अब सुरक्षित नही है। वह दर्शको के लिए बद कर दी गई है।

इसी मीनार से अग्रेजो का राष्ट्रीय झडा यूनियन जैक फहराता था। विदेशी सत्ता का प्रतीक भला क्योकर फहराने दिया जाता! वह स्वदेश-प्रेमियो की आँख की किरकिरी बन गया था। गोलियो की मार से वह देखते ही देखते छलनी हो गया था। उसे विवश होकर उतारना पडा था। रेजीडेन्सी के घेरे के काल मे वह तहखाने मे लिपटा

रेजीडेन्सी का एक भाग अपने मूल रूप मे

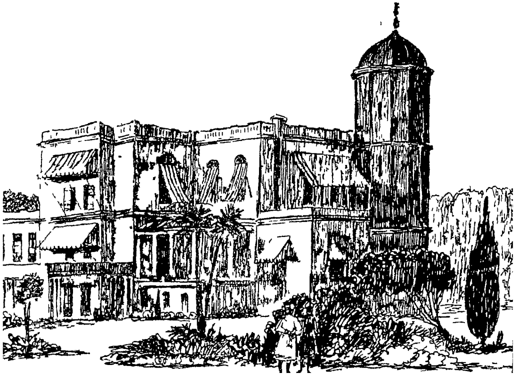

पड़ा रहा। यह वही झडा था जिसके विषय मे विलायत के राष्ट्र-कवि लार्ड टेनीसन ने लिखा था कि वह क्राति पर्यत रेजीडेन्सी के ऊपर फहराता रहा था और क्राति-कारियो को चुनौती देता रहा। लेकिन इस कथन को कवि की कल्पना ही मानना चाहिए।

रेजीडेट के निवास स्थान के नीचे एक तहखाना था, जिस मे घेरे के काल मे अग्रेज औरते और बच्चे सिमटे पड़े रहते थे जिससे वे ग्रीष्म काल की गर्मी और गोलो की मार से सुरक्षित रह सकें। लेकिन तहखाने की सीलन के कारण वे स्वस्थ न रह पाए। दिन के समय भी तहखाने मे इतना अँधेरा रहता था कि भोजन करते समय मोमबत्ती जलानी पड़ती थी।

तहखाने के ऊपर के कमरों मे अब सग्रहालय बना दिया गया है, इसमें एक मिट्टी का मॉडल बना है, जो सन १८५७ की रेजीडेन्सी को उसी रूप मे दर्शाता है। इसकी दीवालों पर तत्कालीन कलाकारो द्वारा बनाए हुए युद्ध के चित्र हैं।

इनको ध्यानपूर्वक देखने से हमें सन १८५७ की क्राति के युद्धों के विषय मे अनेक प्रकार की सूचनाएँ मिलती है। यहाँ वे अस्त्र-शस्त्र भी एकत्रित है जिनका प्रयोग इस युद्ध में हुआ था।

रेजीडेन्सी के मध्य भाग मे एक मस्जिद है जो अन्य भवनो की

अपेक्षा अच्छी दशा मे है। इसके दो कारण हो सकते है। एक तो वह स्वत ही रेजीडेन्सी क्षेत्र के मध्य भाग मे होने से गोलो की मार से बच गई हो। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि धार्मिक स्थल होने के कारण क्रांतिकारियो ने उसे किसी प्रकार की क्षति न पहुँचाई हो।

रक्षा पक्ति की दक्षिण दिशा मे मार्टिनियर की चौकी थी। इस चौकी का भार आशिक रूप से स्थानीय ला मार्टिनियर कालेज के छात्रो पर था जिन्होने अपने कर्तव्य का पालन वीरता से किया था। इस वीरता के कार्य के लिए बाद मे उन्हे एक झडा प्रदान किया गया था। यही पर ब्रिगेड मेस एव सिख स्क्वायर था जहाँ सिख सवार एव सिख पैदल सेना रहती थी। पूर्व की ओर भोजन करने का कमरा था जो युद्ध काल मे अस्पताल बना दिया गया था।

रेजीडेन्सी के क्षेत्र मे जगह-जगह स्मारक बने है। इन्हे सैनिको ने अपने उन साथियों की याद मे बनाया था जो वीर गति को प्राप्त हुए थे। इनमे सबसे दर्शनीय और कला की दृष्टि से उत्कृष्ट सर हेनरी लारेन्स का स्मारक बना है।

रेजीडेन्सी के कब्रिस्तान की चर्चा किए बिना रेजीडेन्सी के घेरे की कहानी अपूर्ण रह जाती है। यहाँ उन अग्रेज सैनिकों की कब्रे है जो क्रातिकाल मे युद्ध अथवा युद्धजनित अन्य

कारणों से मर गए थे। यहाँ उल्लेखनीय कब्र सर हेनरी लारेन्स की है जिसके उत्तम सगठन के ही कारण घेराव मे आए हुए व्यक्ति पॉच माह का समय काट पाए थे। वह घेराव के प्रारभिक काल मे ही एक गोले के लगने के कारण मर गया था। उसकी कब्र पर लिखा है—

यहाँ चिर निद्रा मे लेटा है सर हेनरी लारेन्स,
जिसने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की थी।

यदि ये खडहर बोल सकते तो न जाने कितनी रोचक बाते हमे बता सकते। पर न ये बोल सकते है और न आप बीती ही सुना सकते है। किंतु इनको देखकर सन १८५७ के युद्ध के विषय में हम बहुत कुछ जान सकते है। दीवालो पर इच-इच की दूरी पर गोलो के निशान बने है। ये हमे बताते है कि रेजीडेन्सी पर कितनी भयकर गोलाबारी हुई होगी।

रेजीडेन्सी के खडहर राष्ट्रीय निधि है। उनकी सुरक्षा का भार भारत सरकार पर है। भारतीय पुरातत्व विभाग पर देश के समस्त ऐतिहासिक भवनों की देखभाल एव रक्षा का दायित्व रहता है। वह समय-समय पर इनकी मरम्मत भी करता है और उनको सुरक्षित रखता है।

अवध का क्षुब्ध वातावरण

लार्ड वेलेजली ने अन्य राज्यो की तरह ही अवध के साथ भी सहायक सधि की थी। इससे अवध का भी वही हाल हुआ जो सहायक सधि मानने वाले अन्य राज्यो का हुआ था। अवध मे शासन व्यवस्था दिन पर दिन बिगडने लगी। अतिम नवाब वाजिदअली शाह नाच-गाने और भोग-विलास मे लिप्त रहने लगा। एक दिन उसे डलहौजी का पत्र मिला कि कुशासन के कारण उसका राज्य अग्रेजी राज्य मे मिला दिया जाता है। वाजिदअली शाह कर भी क्या सकता था। वह केवल हाथ मल कर रह गया।

और सन १८५७ की क्राति के पद्रह माह पूर्व अवध अग्रेजी राज्य मे मिला लिया गया। स्वाधीनता के खो जाने के कारण अवधवासी दु खी और असतुष्ट थे। यह असतोष और अधिक बढा, जब उन्हें नए शासन द्वारा सुविधाएँ कम और असुविधाएँ ही अधिक मिली। अग्रेजी शासन

मे दिन पर दिन सर्वसाधारण की कठिनाइयाँ बढती गई।

सर हेनरी लारेन्स को अवध का चीफ कमिश्नर बनाया गया था। उसमे मानवता थी। वह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था और नवाबी काल की कुव्यवस्था से परिचित था। उसने सिफारिश की कि अवधवासियो के साथ उदारता का व्यवहार होना चाहिए। 'नवाबी शासन की अपेक्षा हमे उन्हे अधिक सुविधाएँ देनी चाहिएँ। नए शासन से हमे आर्थिक लाभ नही उठाना चाहिए।' लेकिन लालची कपनी अवध से दो करोड रुपया कर पाने के लिए लालायित थी। उसमे यह दूरदर्शिता कहाँ थी कि अवध मे स्थायी अग्रेजी शासन स्थापित करने मे जनता का सहयोग लेती क्योकि जनता की सद्भावना पर ही स्थायी राज्य स्थापित हो सकता था। कपनी ने तो यही सोचा था कि अंग्रेजी सेना की सहायता से वह अवध को अपने अधिकार मे रख लेगी। अत. नया शासन अवध की सर्वसाधारण जनता की सद्भावनाएँ प्राप्त न कर सका। विदेशी शासन अप्रिय हो गया।

तत्कालीन इतिहासकार 'रीज' का भी यही मत है कि कपनी अपनी आमदनी बढाने के लिए इतनी आतुर हो गई थी कि उसने जनता के सुख की कुछ भी परवाह नही की। टिकटो, अर्जियों, मकान, खाद्य पदार्थ एव नौकाओ पर कर लगा दिए गए थे। अफीम, नमक, अनाज और स्पिरिट के ठेकेदार

नियुक्त कर दिए गए थे। अफीम पर लगाए गए कर से तो पूरे अवध मे बहुत असंतोष फैला। लखनऊ नगर मे यह असतोष सबसे अधिक था। इस नगर में चीनवासियों की भाँति लोग बहुत अफीम खाते थे। एकाएक अफीम पर कर लग जाने से गरीब लोग उसे खरीद न पाए। अफीम का दाम बढ गया। निराश होकर कई अफीमचियो ने अपना गला काट लिया। आदमियो की बात तो छोडिए, उस समय बुलबुलो तक को अफीम खिलाई जाती थी। बुलबुलो को लडाना उस समय का प्रमुख मनोरजन था। दैनिक आवश्यकता की प्रत्येक सामग्री पर कर लग जाने से, और बढती हुई मँहगाई के कारण अवध के लोगो मे असतोष बढता ही गया।

विदेशी शासन के प्रति असतोष अवधवासियो तक ही सीमित न रहा, वरन उसने अंग्रेजों द्वारा बनाई गई 'बगाल सेना' के अवधी सिपाहियों को भी प्रभावित किया। बगाल सेना मे अवध के डेढ़ लाख सिपाही थे। ये सैनिक स्वय भी अंग्रेजी सैनिक प्रशासन से सतुष्ट नही थे। अंग्रेज अधिकारियो के रवैये से उनको विश्वास हो गया था कि अंग्रेज सरकार उनका धर्म भ्रष्ट कर उन्हे क्रिस्तान बनाना चाहती है। कपनी के सैनिकों के लिए एक नया कानून बना था कि नए रगरूटों को समुद्र पार कही भी लडने के लिए भेजा जा सकता है। उस समय के धार्मिक विश्वास के

बंगाल सेना के सिपाही

अनुसार समुद्र पार जाने से धर्म नष्ट हो जाता था। इससे उनका विश्वास और अधिक पुष्ट हुआ कि सरकार उनका धर्म परिवर्तन करना चाहती है। जब सैनिको को बर्मा और अफगानिस्तान जाने की आज्ञा हुई तो बहुत से सिपाहियो ने छुट्टी ले ली और अनेक सेना छोड कर भाग गए। वे सिपाही जो युद्ध करने के लिए गए थे, लौटने पर जाति से बहिष्कृत कर दिए गए। वे अब अछूत समझे जाने लगे थे।

उनके सहधर्मी न तो उनसे बोलते, न मिलते और न ही किसी प्रकार का ससर्ग ही रखते थे। शुद्धि कराने मे उनकी कई वर्षो की गाढी कमाई स्वाहा हो जाती थी।

बगाल सेना के एक-तिहाई सैनिक अवध के उच्च जाति के हिदू थे। खान-पान, जाति-पॉति एव विदेश यात्रा के प्रति उन पर कई धार्मिक बधन लगे थे। सेना की नई व्यवस्था के अनुसार उनकी इन मान्यताओ पर आघात हुआ था।

ईसाई धर्म प्रचारक सार्वजनिक स्थानो मे ईसाई धर्म का प्रचार करते थे। यदि वे केवल ईसाई धर्म के सिद्धातों की ही चर्चा करते तो किसी को आपत्ति नहीं होती। लेकिन वे अपने प्रचार मे हिदू एवं मुस्लिम धर्म के प्रति कई अप्रिय एव कटु बाते कहा करते थे। सर्वसाधारण की यह भावना थी कि ईसाई प्रचारको पर कपनी धन व्यय करती है, और राज धर्म होने के कारण उसे विभिन्न अधिकारियो से कुछ न

कुछ सरक्षण अवश्य प्राप्त था। अब किसी को इसमे सशय नही रह गया था कि फिरगी उनका धर्म नष्ट करने पर तुले हुए है। चर्बी वाले कार्तूस ने इस असंतोष मे विस्फोट का काम किया। फील्ड मार्शल लार्ड रोबर्ट्स ने लिखा है कि कार्तूस वास्तव मे गाय और सूअर की चर्बी से बनाए जाते थे।

सिपाहियो की धार्मिक भावना का कुछ भी विचार नहीं किया गया था। यह विश्वास करना कठिन है कि कार्तूस बनाने

चर्बी वाले कार्तूस ने असतोष मे विस्फोट का काम किया

वालो से कोई भूल हुई हो । उस विषय मे एक तत्कालीन तुकबदी उल्लेखनीय है .

न ईरान ने किया, न शाह रूस ने,
अग्रेज को तबाह किया कार्तूस ने ।

अवध के चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेन्स ने उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड केनिग को ६ मई, १८५७ को एक पत्र लिखा—"पिछली रात्रि को अवध तोपखाने के एक जमादार के साथ मैने बातचीत की । मुझे उसके इस विश्वास पर आश्चर्य हुआ कि पिछले दस वर्ष से सरकार समस्त अवध-वासियो को जबरन या धोखा देकर धर्म-परिवर्तन के कार्य मे लगी हुई है । उसने हमारे किसी भी काम की सराहना नही की । वह बार-बार यही दुहराता रहा कि मै तुम से वही कह रहा हूँ, जो सब कहते है ।"

अग्रेजो के प्रति घृणा और असतोष की भावना ने बदला लेने की इच्छा को पुष्ट किया । सेना मे इस समय अग्रेज और भारतीय सिपाहियो का अनुपात एक और छ का था जो सेना मे अनुशासन बनाए रखने की दृष्टि से ठीक नही था । इस विषय मे एक गवर्नर जनरल ने शासन को चेतावनी दी थी कि भारत मे अग्रेज और भारतीय सैनिको का अनुपात एक और तीन का अवश्य रहना चाहिए । सिपाहियो मे यह भावना घर कर गई थी कि उन्होने ही अग्रेजो के लिए सपूर्ण

भारत को जीता है । फिर क्या उनमे अब वही शक्ति नही थी कि वे विदेशी सत्ता को उखाड फेके, और अपने धर्म की रक्षा करे ।

इस सकल्प को पूरा करने के लिए इस भविष्यवाणी ने भी योग दिया कि प्लासी के युद्ध के सौ वर्ष वाद भारतवर्ष मे अग्रेजी शासन का अत हो जाएगा । अधविश्वासियो को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब भारतवर्ष मे अग्रेजो के इने-गिने दिन ही रह गए है ।

अग्रेजो ने नवाबी सेना के साठ हजार सैनिको की छँटनी कर दी थी । उनमे से वहुत कम सैनिको को सशस्त्र पुलिस मे नौकरी मिल पाई थी । नवावी सेना से निकाले हुए ये सैनिक बेरोजगार हो गए थे । वे अपने गॉवो को लौट गए थे और अपने साथ अग्रेजो के प्रति घृणा एव दुर्भावना लेते हुए गए थे । अवध के प्रत्येक ग्राम मे ऐसे व्यक्ति मिल सकते थे, जो विदेशी सत्ता के शत्रु थे, और जिन्हे व्यक्तिगत रूप से विदेशी शासन द्वारा हानि पहुँची थी । वे विदेशी राज्य के प्रति जहर उगला करते थे, और अपने सीमित क्षेत्र मे विदेशी सत्ता के विरुद्ध प्रचार करते थे । बस समय आने पर उन्होने अवध की जनता को सगठित किया, और सक्रिय रूप से अग्रेजों के विरुद्ध हो गए ।

जनता मे असतोष बढने के कई और कारण भी थे । नई

शासन व्यवस्था मे समस्त ऊँचे पद अग्रेजो के लिए सुरक्षित हो गए थे। भारतीयो को केवल निम्न पद ही दिए जाते थे। इससे योग्य भारतीयो मे विदेशी शासन के प्रति असतोष फैला।

नवाबी सरक्षण मे कारीगरो की रोजी अच्छी चलती थी परतु विदेशी शासको की रुचि भिन्न थी जिससे कारीगर बेकार हो गए और भूखो मरने लगे। उनकी बनाई हुई वस्तुओ के लिए खरीदार न रहे। नए शासन ने उनकी किसी भी प्रकार से सहायता नही की।

नवाबी शासन व्यवस्था मे जमीदारो का अपना विशिष्ट स्थान था। वे राज्य के लिए भूमि कर वसूल करते थे, और अपने क्षेत्र मे सुव्यवस्था भी बनाए रखते थे। अग्रेजो ने अवध मे, जब भूमि का बदोबस्त शुरू किया तो वे यह मान कर चले कि भूमि का असली मालिक किसान था और जमीदारो ने जालसाजी से उनके अधिकारो को ले लिया था। इस कारण जमीदारो के कई गाँव छिन गए जिससे वे अग्रेजो के कट्टर शत्रु बन गए।

मौलवी अहमदउल्लाह शाह क्रातिकारियो के प्रमुख नायक थे। वह दक्षिण के रहने वाले थे लेकिन क्राति के समय वे अवध मे प्रचार कार्य करते थे। उन्होने अवध मे घूम-घूम कर अग्रेजो के विरुद्ध क्राति कराने के लिए हिदुओ एव

मुसलमानो को ललकारा था। उन्होने चेतावनी दी थी कि समय आ गया है जब वे अपनी दासता की बेडियो को काट डाले या हमेशा के लिए दास बने रहे। वे ओजस्वी वक्ता थे। अवध के जनजागरण मे उनका प्रमुख हाथ था। उनकी धारणा थी कि सशस्त्र विद्रोह की सफलता के लिए सेना से अधिक जनता के सहयोग की आवश्यकता है। वे फिरगियो के विरुद्ध धर्म युद्ध की घोषणा करते फिरते थे।

सन १८५७ का मई मास था। अवधवासी अग्रेजो द्वारा स्थापित व्यवस्था से खिन्न एव दुखी थे। ऐसा कोई भी वर्ग नही था जो उनसे सतुष्ट हो। सर्वत्र असतोष व्याप्त था। असतुष्ट व्यक्ति प्रचार कर रहे थे। जनमत का सगठन हो रहा था। तरह-तरह की अफवाहे फैल रही थी। नगर मे हिदी, उर्दू और फारसी मे पोस्टर लगाए गए थे जिनमे हिदुओ और मुसलमानो को ललकारा गया था कि समय आ गया है कि फिरंगियों का विनाश कर दिया जाए। नगर के कई भागो मे गुड्डो को विलायती कपडे पहनाकर सार्वजनिक स्थलों मे तलवार से उनका सिर काट दिया गया था। इससे लोगों मे नया जोश पैदा हो जाता था और वे अग्रेजों को मारने के लिए लालायित रहते थे।

मई २१ को सर हेनरी लारेन्स ने लिखा कि नगर मे शाति है, लेकिन जनता मे असतोष है। यदि दिल्ली को तुरत विद्रोहियों से वापस न ले लिया गया तो लखनऊ मे अधिक

समय तक शाति बनाए रखना कठिन होगा ।

कपनी के कर्मचारी भी भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने लगे थे । उनमे वह योग्यता नही थी जो क्लाइव के समय मे थी, जब क्लर्क एक हाथ मे कलम और दूसरे हाथ मे तलवार लेकर फैक्ट्री की रक्षा करता था । इस समय के अग्रेजो मे यह योग्यता नही रह गई थी कि वे क्रांति का सामना कर पाते । बिगडती हुई स्थिति को वे सही प्रकार से न तो समझ पाए और न ही समय आने पर उसका सामना कर पाए ।

इस प्रकार अवध की क्रांति ने जन-आदोलन का रूप लिया और अवधवासियो की आशा और सघर्ष का केद्र लखनऊ रेजीडेन्सी बनी ।

वातावरण क्षुब्ध हो गया था । जनता मे गहरा .असतोष फैला था । अग्रेजी राज्य को उखाडने के लिए वे दृढ संकल्प थे । स्थिति बिगड़ गई थी । बस, आवश्यकता थी केवल··· एक चिनगारी की ।

क्रांति की चिनगारी

अवध की क्रांति को प्रारभ करने के लिए प्रभावोत्पादक घटना का होना आवश्यक था। ऐसी घटना जो सर्वसाधारण का ध्यान अपनी ओर खीच ले, और अवध की विस्फोटक स्थिति को चिनगारी प्रदान कर सके। ऐसी घटना चिनहट का युद्ध था जिसमें क्रातिकारियो ने अग्रेजो को बुरी तरह से हराया था।

जून की विषम गर्मी थी। दिन भर गर्म लू चलती थी। रात की दम घुटाने वाली गर्मी मे सोना कठिन हो गया था। जगह-जगह तरह-तरह की अफवाहे फैल रही थी। वातावरण मे बेचैनी थी—कोई नही कह सकता था कि कब क्या हो जाए। आखिर वह दिन आ ही गया — ३० जून १८५७, जब क्रातिकारी और अग्रेज एक-दूसरे से लड ही बैठे।

अवध के चीफ कमिश्नर सर हेनरी लारेन्स को युद्धकालीन

परिस्थिति मे ब्रिगेडियर का सैनिक पद भी दे दिया गया था। इस प्रकार वह अवध क्षेत्र का सर्वोच्च सैनिक एव असैनिक अधिकारी था, और विषम स्थिति का सामना करने के लिए स्वतत्रतापूर्वक निर्णय ले सकता था। हेनरी लारेन्स स्वय योग्य व्यवस्थापक और दूरदर्शी व्यक्ति था, किंतु उसका सैनिक अनुभव कम था। रेजीडेन्सी की रक्षा के लिए वह स्वय वहाँ आकर रहने लगा था।

जून २९, लारेन्स को समाचार मिला कि चिनहट मे क्राति-कारियो की सेना एकत्र हो गई है। उस सेना मे ५०० सैनिक, ५० घुडसवार और एक छोटी तोप थी। लारेन्स ने भी एक सेना एकत्र की, जिसमे ३०० अग्रेज सैनिक, १७० भारतीय पैदल सैनिक, ८४ भारतीय घुडसवार सैनिक, ३६ स्वयसेवक घुडसवार, दस छोटी तोपे और एक बडी तोप थी, जिसे एक हाथी खीचता था।

सर हेनरी लारेन्स के लिए यह एक सुनहरा अवसर था। यदि वह क्रातिकारियो को हराने मे सफल हो गया, तो प्रारभ मे ही क्रातिकारियो का हौसला पस्त हो जाएगा, और अग्रेजी शक्ति की अजेयता का डका बज उठेगा। अत यह निश्चय किया गया कि तीस जून को प्रात-काल, पौ फटते ही अग्रेज फौज चिनहट की ओर प्रस्थान करेगी।

लेकिन कुव्यवस्था के कारण सेना तब रवाना हो सकी जब

सूर्य काफी चढ चुका था। सिपाहियो को सुबह नाश्ता भी न मिल पाया था। तीन मील चलकर सेना कुकरेल नदी के पुल पर पहुँची। सैनिको की एक टोली को शत्रु की गतिविधि का परिचय पाने के लिए आगे भेजा गया, किंतु वे क्रातिकारियो के बारे मे कोई सूचना न दे पाए। कुछ राहगीरो ने भी यही समाचार दिया कि चिनहट मे कोई क्रातिकारी नही है। ऐसी स्थिति मे लारेन्स को लौट जाना चाहिए था। फिर भी वह आगे बढा। सभवतः वह चिनहट की जनता को अग्रेजी शक्ति से प्रभावित करना चाहता था।

बडी तोप जिसे हाथी खीचता था

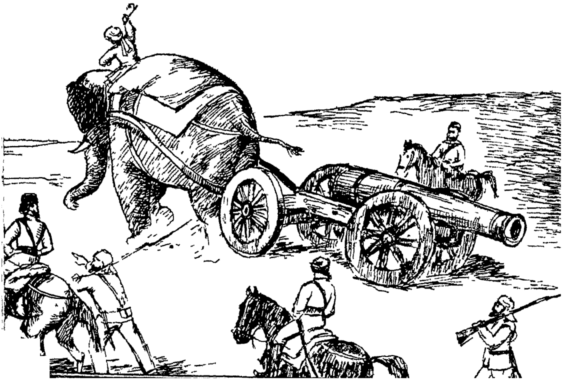

दिन काफी चढ चुका था। सूर्य सिर पर आ गया था। जून की विकट धूप थी। दोपहरी की धूप मे कदम-कदम चलना कठिन था। अपनी कसी हुई वर्दियों मे सैनिक पसीने से लथ-पथ हो गए थे। ज्योही सडक के मोड को पार कर अग्रेजी सेना आगे बढी, उसने अकस्मात अपने को क्रातिकारियो से घिरा पाया। क्रातिकारी सेना के सेनानायक बरकत अहमद ने बडी योग्यता से व्यूह रचना की थी। उसने अपनी सेना को आम के पेड़ों के पीछे इस भाँति छिपाया था कि न तो अग्रेजों के स्काउट ही उनका पता लगा सकते थे और न राहगीर ही उनको देख सकते थे। अग्रेजो को क्रातिकारी सेना के अस्तित्व का तब पता चला, जब वह बुरी तरह से घिर गई। अपने आपको ऐसी स्थिति मे पडा देख अग्रेजी सेना निरुत्साहित हो गई, और उसमे बुरी तरह से भगदड मच गई। घिरी हुई सेना के पास बस एक ही चारा था कि वह भाग कर अपनी जान बचाए।

बरकत यह भली भाँति जानता था कि अग्रेजी सेना भागकर कुकरेल के पुल से ही लौटेगी। उसके लिए उसने पहले से ही घुडसवार सेना तैनात कर रखी थी, जो समय आते ही अग्रेजी सेना को पुल पर घेर लेती। परतु अग्रेजो के स्वय-सेवक घुड़सवारों ने प्रबल आक्रमण किया जिससे पुल का रास्ता 'साफ हो गया और अग्रेजी सेना वापस लौटने मे सफल हो गई। जिस सुंदरता के साथ बरकत अहमद ने

अंग्रेजी सेना बुरी तरह घिर गई

चिनहट युद्ध की योजना बनाई थी, यदि उसी दक्षता से वह कार्यान्वित हो जाती तो एक भी अंग्रेज सैनिक उस दिन बचकर रेजीडेन्सी न लौट पाता।

क्रांतिकारियो ने भागती हुई अंग्रेजी सेना का पीछा किया और उन पर गोलो की मार जारी रखी। जगह-जगह अंग्रेज सैनिको की लाशे बिखर गई थी। उनके हथियार और साज-सामान सब बिखरे पडे थे। कुछ गोली लगने से

गिर पडे थे तो कुछ विना गोली के ही जून की तपती धूप से बिलबिलाकर गिर पडे थे। कई सैनिक प्यास और लू लगने से ही मर गए। कई स्थानो पर मार्ग मे इन थके-माँदे, भागते हुए प्यासे सैनिको को ग्रामीण महिलाओ ने पानी पिलाया जिससे उनमे कुछ जान आई और वे रेजीडेन्सी की ओर भाग सके।

परतु अग्रेजी सेना का पीछा करते हुए क्रातिकारी गोमती पर वने पत्थर और लोहे के पुल को पार न कर सके।

क्रातिकारियो ने भागती हुई सेना का पीछा किया

रेजीडेन्सी से लोहे के पुल पर भयकर गोलावारी की गई थी, और मच्छी भवन से पत्थर के पुल पर। मच्छी भवन उस स्थान पर था, जहा आज लखनऊ मेडिकल कालेज है।

क्रातिकारी पुलो को तो पार न कर सके किंतु उन्होने गोमती नदी को विभिन्न स्थानो से पार कर लिया और शाम होने तक उन्होने रेजीडेन्सी को पूरी तरह से घेर लिया। निकटस्थ स्थानो मे पहुँच कर उन्होने रेजीडेन्सी मे रहने वालो पर गोलावारी प्रारभ कर दी।

अग्रेजो की हार, उनका पीछा किया जाना और रेजीडेन्मी का घेरा इस तेजी से हुआ कि कुछ समय के लिए अग्रेज अपनी सुध-बुध खो बैठे। उनकी समझ मे न आया कि यह क्या हो गया है और उनको अब क्या करना है। रेजीडेन्सी के रहने वालो मे हारी हुई क्षत-विक्षत सेना के लौटने से भय और निराशा फैल गई। एक अग्रेज महिला लेडी इगलिस ने लिखा है—

"तुम समझ सकते हो कि सेना के हारे हुए व्यक्तियो के आने से किस सीमा तक निराशा हुई होगी। मैंने उनका लौटना ध्यानपूर्वक देखा था। वह दु.ख देने वाला दृश्य था। वे किसी व्यवस्थित ढग मे नही लौट रहे थे। वे गिरते-पडते आ रहे थे। कोई घोडे पर सवार था, तो कोई पैदल आ रहा था और कोई-कोई अन्य व्यक्तियो

का सहारा लेकर आ रहा था। कुछ घायल तोपो पर चढे आ रहे थे, और कुछ रेजीडेन्सी पहुँचते-पहुँचते थकान और घावो के कारण हमारी चौकी से आध मील की दूरी पर ही गिर पडे थे। मै नदी के पार क्रातिकारियो और उनकी बदूको का धुआँ स्पष्टतया देख पा रही थी। चिनहट की पराजय ने रेजीडेन्सी का घेरा समय से पूर्व करवा दिया था, जबकि उसकी किलेबदी मे भी बहुत सुधार करने बाकी थे।''

यदि आक्रमणकारी उसी दिन रेजीडेन्सी पर धावा बोलते, तो यह सभव था कि वे खाइयो पर कब्जा कर लेते। लेकिन क्रातिकारी इस स्थिति का लाभ न उठा पाए।

चिनहट के युद्ध के फलस्वरूप क्रातिकारियो के हाथ पाँच छोटी तोपे व एक बडी होविट्जर तोप लगी, जिसे हाथी खीचता था। अग्रेजो के २९३ सैनिक मारे गए थे और ७८ सैनिक घायल हुए थे।

उस रात्रि सर हेनरी लारेन्स ने रेजीडेन्सी से कानपुर के अग्रेजी सेना के कमाडर हेवलाक को इस आशय का पत्र लिखा—

''आज सुबह हम शत्रु से लडने के लिए चिनहट गए और पराजित हुए। हमारी पाँच तोपे शत्रु के हाथ लगी। क्राति-कारियो ने हमारा पीछा किया और रेजीडेन्सी को पूर्णतया घेर लिया। क्रातिकारियो का उत्साह बहुत बढा हुआ है, और

कुछ अग्रेज हतोत्साहित हैं। कल के मुकावले आज हमारी स्थिति दस गुना खराव है। वास्तविकता यह है कि हमारी स्थिति शोचनीय है। यदि पन्द्रह-वीस दिन मे हमे सहायता नही मिलती है तो हमे वहुत-सा राशन छोडना पडेगा और बारूद को भी जलाना पडेगा। इससे अधिक समय हम क्रातिकारियो के सम्मुख टिक न पाएँगे।''

कर्नल इगलिस के समान अनुभवी सैनिक अधिकारी के रहते हुए भी, स्वय सर हेनरी लारेन्स ने चिनहट के युद्ध मे नेतृत्व किया था। ऐसा उन्होंने क्यो किया कहा नही जा सकता। सभवत हेनरी लारेन्स मे इगलिस की अपेक्षा आत्मविश्वास अधिक था। वह क्रातिकारियो को युद्ध मे हराने के लिए लालायित था और उनको सबक सिखाना चाहता था। रणनीति के अनुसार भी सबसे अच्छा बचाव पहले शत्रु पर चोट करना था। शत्रु को करारी हार देने के दो अन्य लाभ थे। क्रातिकारियो का मनोवल टूट जाता और अग्रेजो के पक्ष मे लोगों का हौसला वढ जाता। वे लोग जो निश्चय नही कर पा रहे थे कि किसका साथ दे, अब विजयी पक्ष का साथ देने के लिए वाध्य हो जाते। क्राति-कारियो को हराकर वह आसपास के क्षेत्र मे अग्रेजी शक्ति का प्रदर्शन कर सकता था, और ब्रिटिश शक्ति की धाक जमा सकता था। लेकिन पासा उल्टा पडा। वह बुरी तरह हारा। इस हार का समाचार वहुत तेजी से सारे अवध मे

जगल की आग की तरह फैल गया।

परिणाम यह हुआ कि दोनो दल भावी युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। अग्रेज अपने बचाव के लिए चिंतित थे और क्रांतिकारियो का उत्साह इतना बढ गया था कि वे अग्रेजो को देश से निकाल कर ही मानेगे। लखनऊ रेजीडेन्सी अवध की जनक्राति का केद्र-विदु वन गई।

उतिस

युद्ध की तैयारी

क्राति से आठ माह पूर्व ही सर हेनरी लारेन्स सजग और सचेष्ट हो गया था। उसे भावी सकट का आभास हो चला था। अवधवासी अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध होने लगे थे। उसने चुपके-चुपके लबे युद्ध की तैयारी प्रारभ कर दी थी। लारेन्स अवध मे अपनी सीमित शक्ति से भी भली भाँति परिचित था। यह असभव था कि वह क्रातिकारियो से खुलकर युद्ध करता। उसे तो रेजीडेन्सी मे रहकर ही रक्षा करनी थी।

लखनऊ मे कोई दुर्ग नही था जहाँ अग्रेजी सेना, असैनिक अग्रेज अधिकारी और उनके परिवार सुरक्षित रह पाते। लारेन्स के सामने सबसे बड़ी समस्या ऐसे स्थान को चुनना था, जो सामरिक दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त होता, और जिसकी सरलता से किलेबदी की जा सकती। उसे

सबसे उपयुक्त स्थान रेजीडेन्सी और मच्छी भवन प्रतीत हुए। ये दोनो स्थान गोमती नदी के दाएँ किनारे पर, एक मील के अतर पर ऊँचे टीलो पर बसे थे। मच्छी भवन अब नही रहा। उसके स्थान पर लखनऊ मेडिकल कालेज बन गया है। मच्छी भवन सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। उसके विषय मे कहा जाता था कि जिसका मच्छी भवन पर अधिकार है, उसका लखनऊ पर भी अधिकार है। रेजीडेन्सी और मच्छी भवन से नगर को जोडने वाले दोनो प्रमुख पुलो पर निगरानी रखी जा सकती थी, और शत्रुओ के आवागमन पर नियत्रण रखा जा सकता था। उसने निश्चय किया कि अग्रेज रेजीडेन्सी और मच्छी भवन से क्रातिकारियो का सामना करे, किंतु सुविधा, सुरक्षा और विस्तार की दृष्टि से रेजीडेन्सी अधिक उपयुक्त स्थान था। यहाँ कई भवन थे जिनमे सेना एव शरणार्थियो को रहने का स्थान मिल सकता था।

चिनहट की हार के पश्चात सर हेनरी लारेन्स ने अपने सीमित साधनो का विचार कर मच्छी भवन को खाली करने का निश्चय किया। क्रातिकारी उसका उपयोग न कर पाएँ इसलिए उस भवन को बारूद से उडा दिया गया।,उसने अपनी समस्त शक्ति को रेजीडेन्सी मे सचित कर लिया था। वह अवध मे अग्रेजी सत्ता का प्रतीक थी और क्रातिकारियो की आँख की किरकिरी बन गई थी। रेजीडेन्सी मे लबे

घेरे से बचने के लिए समस्त सुविधाएँ जुटा ली गई थी। यदि हेनरी लारेन्स ने दूरदर्शिता से काम न किया होता, तो यह सभव था कि घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को कुछ ही दिन पश्चात भुखमरी के कारण आत्मसमर्पण करना पडता।

रात्रि के अधकार मे कई माह तक अनाज, अस्त्र-शस्त्र, बारूद और लडाई का अन्य सामान जमा किया गया था। पशु भी पर्याप्त सख्या मे एकत्र किए गए थे, ताकि घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को मास की कमी न पड़े। तीन माह के लिए पशुओं के लिए चारा भी इकट्ठा किया गया था। साथ-साथ रेजीडेन्सी की किलेबदी भी की गई थी। रेजीडेन्सी टीले पर थी, जिसके चारो ओर ढालू भूमि थी। टीले के ऊपरी मैदानी भाग की सीमा पर, जहाँ से ढालू भूमि प्रारभ होती है, किलेबदी की गई थी। जगह-जगह गहरी खाइयाँ खोदी गई थी। ऊँची-ऊँची दीवारे उठाई गई थी। पुरानी दीवालों की मरम्मत की गई और बुर्ज बनाए गए। रेजीडेन्सी के उत्तर और दक्षिण मे तोपो के लिए जगह बनाई गई। प्रति-रक्षा के लिए मिट्टी की दीवाले बनाई गई। तख्तो पर कीले गाड़ी गई, और नुकीले भाग को ऊपर कर उन्हे ढालू जमीन मे ठोक दिया गया, ताकि घुडसवार सेना आक्रमण न कर सके। ढालू भूमि में गड्ढे किए गए और उनमे नुकीले खूँटे गाड दिए गए। इन बचाव के साधनो से आक्रमण होने पर तोपचियो को समय मिल सकता था और वे तोपो को खीच

कर आक्रमण के स्थान पर ला सकते थे ।

ढालू भूमि पर कुछ खडहर एव झोपडियाँ थी जिनमे क्राति-कारी शरण ले सकते थे। वे दीवालो पर छेद कर रेजीडेन्सी पर गोलाबारी भी कर सकते थे, और यहाँ से रेजीडेन्सी के अदर सुरगे बना सकते थे। अत तीन हजार मजदूरो को बारूद और गेती-फावडा देकर इनको साफ करने मे लगा दिया गया। कुछ वृक्ष भी निर्दयतापूर्वक काट दिए गए। सब से अधिक खतरा गोमती के किनारे के विस्तृत मैदान से था, जहाँ बडी सख्या मे क्रातिकारी आक्रमण के लिए एकत्र हो सकते थे। इसलिए इस तरफ सात फुट ऊँची मिट्टी की दीवाल बना दी गई थी, जिसको मजबूत करने के लिए दीवाल के अदर लकडियाँ गाड दी गई थी। झब्बो मे मिट्टी भरकर उन्हे पुश्तो के अदर कर दिया गया था।

बगाल सेना के अवधी सैनिको की पलटने लखनऊ मे ही थी। वे भी अवध के व्यापक क्षोभ से प्रभावित थी। अत हेनरी लारेन्स ने सितबर १८५६ को अधिकारियो को लिखा कि लखनऊ से अवधी सैनिको की पलटने सिख सैनिको से बदल दी जाएँ। इसका परिणाम यह हुआ कि सिख सैनिको ने अग्रेजो का साथ अत तक दिया।

अवध के विभिन्न भागो से अग्रेज अधिकारी एव उनकी स्त्रियाँ और बच्चे रेजीडेन्सी मे आश्रय लेने के लिए आ गए

थे। लखनऊ के ला मार्टिनियर कालेज के पद्रह छात्र भी यहाँ आए थे। प्रात काल सब स्वस्थ असैनिक व्यक्तियो को कवायद कराई जाने लगी, और उन्हे शस्त्रों के प्रयोग की दीक्षा भी दी गई। ला मार्टिनियर कालेज के विद्यार्थी रेजीडेन्सी के दक्षिण-पूर्वी भाग की चौकी मे तैनात किए गए थे। स्थिति बिगडने पर वे भी युद्ध मे हाथ बँटाते थे। उनका काम विशेषत रेजीडेन्सी के विभिन्न भागो मे समाचार लेकर जाना था। युदध काल मे केवल दो विद्यार्थी घायल हुए थे।

अग्रेजो को कुशल नेतृत्व प्राप्त था। देश के विभिन्न भागो मे लडे सैनिक अधिकारी एक दूसरे की गतिविधि और कठिनाइयो से परिचित थे। समय आने पर वे एक दूसरे की सहायता के लिए आ जाते थे।

क्रातिकारी दल मे आत्मविश्वास अधिक था। जनता अग्रेजी शासन से छुटकारा पाने के लिए दृढ सकल्प थी। अवध के विभिन्न वर्ग के लोगो मे विदेशी शासन के प्रति घोर असतोष व्याप्त था।

क्रातिकारियों को एक झडे और एक नेता के नाम की आवश्यकता थी। अवध का अतिम नवाब वाजिद अली शाह कलकत्ते मे नजरबद था। अत. सैनिक समिति ने वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल के पुत्र ब्रिजिस कद्र को

सिहासन पर बैठाया। ब्रिजिस कद्र की आयु केवल ग्यारह वर्ष की थी। अत राजकाज हजरत महल की देखरेख मे होने लगा। ब्रिजिस कद्र ५ जुलाई '५७ को सिहासनारूढ

बेगम हजरत महल

हुआ। रेजीडेन्सी का घेरा डालने वाले क्रातिकारियो ने अग्रेजो का साथ देने वाले हिदुस्तानी सिपाहियो को सदेश भेजा—

''हमने अपने राजा को ताज पहना दिया है। फिरगियो का

शासन अव समाप्त हो गया है। हम जल्दी ही आपके बेली गार्ड मे पहुँचेगे।''

इस सदेश का क्या प्रभाव हुआ, कहा नही जा सकता। यह अवश्य है कि अवध के समस्त असतुष्ट व्यक्ति नवावी झडे के नीचे आ गए थे। अवध का असतोष कपनी के अवधी सैनिको मे तो फैल ही चुका था। सैनिक स्वय भी सैनिक प्रशासन से असतुष्ट थे। कई प्रचारक असतोष को और अधिक भडका रहे थे। कपनी के अवधी सैनिक लगभग डेढ लाख थे। इस सख्या की वृद्धि नवावी सेना के निकाले हुए सैनिको ने की जो पचास हजार के लगभग थे और जिनकी रोजी नए शासन ने छीन ली थी। समय आने पर अवधी

अपने अगरक्षको के साथ ब्रिजिस कद्र

सैनिको ने विद्रोह किया और उनमे से अधिकाश लखनऊ के युद्ध मे शामिल होने के लिए चले आए। वे अपने साथ सेना मे से अस्त्र-शस्त्र, तोप, गोले और बारूद भी लेते आए।

अग्रेजों के प्रशिक्षित सैनिक, उनके ही अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद और उनके द्वारा ही उत्पन्न असतोष जब गहरे असतोष मे परिवर्तित हुआ तो भारतीय प्रचारको ने इसको विद्रोह के रूप मे परिणत कर दिया। इसमे मौलवी अहमद उल्लाह शाह का प्रयास उल्लेखनीय है। अवध की जन-जागृति मे उनका विशेष हाथ था।

अवध मे जमीदारो की सख्या काफी थी। वे स्वय अपने निजी सैनिक रखते थे और अपनी जमीदारी मे पूरा रौब और किसानो पर अधिकार रखते थे। नए बदोबस्त के कारण कई जमीदारो के गॉव छिन गए थे। उनके अधिकारो मे कमी आ गई थी। उन्होने भी क्रातिकारियो का साथ दिया। उनके पास तीर चलाने वाले पासी थे जो सुरग लगाने मे भी प्रवीण थे।

लखनऊ रेजीडेन्सी मे अवध की जनक्राति का केद्र बन गया था। जगह-जगह से अग्रेजो के शत्रु खिच-खिच कर यहॉ आने लगे थे। घिराव करने वाले इन लोगो का जमघट आधा लाख तक पहुँच गया था।

अवध की क्राति को दवाने के लिए कानपुर की तरफ से ही अग्रेजी सेना आ सकती थी। अत कानपुर और लखनऊ के मध्य क्रातिकारियो ने लगभग वारह चौकियाँ स्थापित कर रखी थी।

क्रातिकारियो की एक वहुत वडी कमी थी। वे दूरदर्शी नही थे। निकटस्थ क्षेत्र के क्रातिकारियो से भी उनकी कोई सह-योजना न थी और न ही उनमे किसी प्रकार का आपसी समझौता था। कठिन स्थिति के आने पर उन्होने एक दूसरे की सहायता भी नही की। जिसका परिणाम यह हुआ कि किसी केंद्रीय व्यवस्था के न होने के कारण वे एक-एक करके अलग-अलग पराजित हुए।

रेजीडेन्सी के घेरे में जीवन

चिनहट के युद्ध के पश्चात रेजीडेन्सी चारो ओर से घिर गई थी। वह अवधवासियो की आशा का केंद्र, और घेरे मे आए हुए अग्रेजो के लिए जीवन-मरण का प्रश्न वन गई थी। रेजीडेन्सी के घेरे मे लगभग दो हजार व्यक्ति थे जिनमे लगभग ९२७ अग्रेज सैनिक, ७०० भारतीय सिपाही, ७०० कुली और ६०० औरते और वच्चे थे। सैनिक एव वयस्क व्यक्तियो को कठिन सैनिक कार्य-भार सॅभालना पडता था। कभी-कभी तो उन्हे सोलह घटे तक लगातार ड्यूटी करनी पडती थी। वे वदूक को वगल मे रखकर वर्दी पहने ही सो जाया करते थे। स्थिति ही इतनी विकट थी। जरा सी ढील देने पर क्रातिकारी रेजीडेन्सी पर कब्जा कर लेते और घेराव मे आए हुए व्यक्तियो को मौत के घाट उतार देते। वचाव करने वाले व्यक्तियो की सख्या सीमित थी। प्रत्येक व्यक्ति को हर समय ड्यूटी के लिए लैस रहना पडता था।

पुरुष विभिन्न चौकियो मे सुरक्षा कार्य मे सलग्न रहते थे और अपने वाल-वच्चो को यदा कदा ही मिल सकते थे। औरतो और वच्चो को गोलो की मार से सुरक्षित रखने के लिए, उन्हे रेजीडेन्सी के तहखाने मे स्थान दे दिया गया था। तहखाने मे सूर्य का प्रकाश कठिनता से प्रवेश पा सकता था, और हवा के प्रवाह के लिए भी कोई साधन नही था। यहाँ औरते और वच्चे खचाखच भरे हुए थे। रेजीडेन्सी के क्षेत्र में स्थान के अभाव के कारण कोई और प्रवध भी नही किया जा सकता था। यह भी सभव नही था कि सक्रामक रोगो के फैलने पर वीमारो को अलग स्थान दिया जा सके।

क्रातिकारी दिन और रात रेजीडेन्सी पर गोलावारी कर रहे थे। विभिन्न भवनों की दीवालो पर गोलो की मार के वने निशान इतने अधिक और पास-पास थे कि उनकी तुलना चेचक से पीडित व्यक्ति के शरीर के दागो से की जा सकती थी। कव, कौन और किस समय गोली का शिकार हो जाए— यह घवराहट सदा वनी रहती थी। प्रतिदिन कई व्यक्ति गोली के शिकार होते थे। डायरी लिखने वालो को प्रतिदिन एक न एक दोस्त की मौत दर्ज करनी पडती थी। सात जुलाई को इतिहासकार रीज ने लिखा कि आज तक हमारे बहुत से लोग मारे गए। प्रतिदिन पद्रह से वीस व्यक्ति तक मारे गए है। अधिकाश रायफल और बदूको की गोलियो के शिकार हुए हैं। वहुत से व्यक्तियों की मृत्यु एक अफ्रीकी

की गोलियो से हुई है। उसका निशाना शायद ही कभी खाली जाता हो। यह अफ्रीकी नवाव वाजिद अली शाह की सेवा मे था, और अपने अचूक निशाने के कारण रेजीडेन्सी के निवासियो द्वारा 'अचूक निशाने वाला वौव'। कहा जाने लगा था।

वास्तविकता यह थी कि रेजीडेन्सी के ऊपर मौत हर समय मँडरा रही थी। वह कव किसको उठा ले जाए। अस्पताल मे भी सुविधाएँ इतनी कम थी कि घायल व्यक्ति के अच्छे होने की कोई आशा नही की जा सकती थी। ब्रिगेड मैस को अस्पताल वना दिया गया था। अस्पताल मे विछावन के लिए तबुओ को काट कर कपडे वनाए गए थे। घायल के आने पर उसकी कमीज को फाडकर ही पट्टियाँ वना दी जाती थी। क्लोरोफार्म के खतम हो जाने के कारण शल्य चिकित्सा के समय घायल व्यक्ति बुरी तरह चीखता और चिल्लाता था। कुछ व्यक्ति उसके सिर, हाथ, पैर और शरीर को दवाए रखते थे। दवा की कमी के कारण खुले घावों मे कीडे उगने लगते थे। रेजीडेन्सी मे जितने घायल व्यक्तियो के अग काटने पड़े, उनमे से एक भी न जी पाया। उस समय तक कीटाणु नाशक शल्य औषधि का आविष्कार भी नही हुआ था।

गोलावारी इतनी भयकर थी कि कब्रिस्तान मे भी मृतक आसानी से दफनाए नही जा सकते थे। क्रातिकारियो की

गोलियाँ वहाँ भी सक्रिय रहती थी। रात्रि के अधकार मे जल्दी-जल्दी, शत्रुओ से बचकर मृतको की अत्येष्टि क्रिया की जा सकती थी। कब्रो को गहरा नही खोदा जा सकता था। छिछली कब्रो मे मरे हुए व्यक्ति गाड दिए जाते थे। कब्रि-स्तान मे चारो ओर दुर्गध ही दुर्गध फैल गई थी। वहाँ खडा रहना कठिन था। स्थिति दिन पर दिन बिगडती गई।

हेनरी लारेन्स की मृत्यु के कारण रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो का नेता चल बसा था। इससे घिरे हुए व्यक्तियो का मनोबल कम हो गया था। हेनरी लारेन्स मरते समय बुदबुदाया था कि मैंने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की है। रेजीडेन्सी के कब्रिस्तान मे उसकी कब्र बनी है जिस पर लिखा है—

यहाँ चिर निद्रा मे लेटा है सर हेनरी लारेन्स,
जिसने अपने कर्तव्य-पालन की पूरी चेष्टा की थी।

रेजीडेन्सी का घेरा अभेद्य हो गया था। इसलिए रेजीडेन्सी के लोगो का बाह्य ससार से कोई सबध नही रह गया था। उन्हे उसी सामान और सुविधाओ पर जीवन बसर करना था, जिन्हे सर हेनरी लारेन्स ने एकत्र कर रखा था। ताजी तरकारियो का अभाव विशेष रूप से खटकने लगा था। रेजीडेन्सी मे सूखे रोग से इतने अधिक व्यक्ति पीडित हुए थे कि उसे लखनऊ रेजीडेन्सी की बीमारी कहा जाने

लगा था। कई बच्चे दूध की कमी के कारण असमय ही काल के मुँह मे चले गए थे। जुलाई २२ से बच्चो को जौ का दलिया दिया जाने लगा था। राशन मे क्रमश कटौती की जाने लगी थी। नमक का मिलना भी कठिन हो गया था। वस्त्रो के अभाव मे मरे हुए व्यक्तियो के कपडे पहने जाने लगे थे। तबाकू मिलना कठिन था। विभिन्न प्रकार की पत्तियो का प्रयोग तबाकू के रूप मे होने लगा था।

युद्ध और लबे घेरे की अनिश्चितता से घबरा कर रेजीडेन्सी के नौकर भाग निकले थे। इस काल मे अग्रेज नवाबो की भाँति रहने लगे थे। प्रत्येक अधिकारी के पास बीस से लेकर तीस तक नौकर थे। उनकी स्त्रियाँ काम करने की आदी नही रही थी। नौकरो के अभाव मे औरतो को विशेष कष्ट का सामना करना पड़ा। अब उन्हे सब काम स्वय ही करना पडता था।

क्रातिकारी घेरे को क्रमश दृढ करते गए। ज्यो-ज्यो दिन बीतते गए क्रातिकारियो की सख्या भी बढती गई। कुछ स्थानो पर घेरा डालने वाले सिपाही रक्षा पक्ति के भीतर के सैनिको के इतने समीप आ गए थे कि वे आपस मे बात-चीत कर लिया करते थे। क्रातिकारी सैनिक अग्रेजो का साथ देने वाले भारतीयो को 'धर्म त्यागी' कहकर उलाहने देने लगे थे।

भोजन की कमी घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को दिन पर दिन

खटकने लगी थी। अन्य सुविधाएँ भी क्रमश कम होती गई। अन्न जीवन के लिए आवश्यक था, किंतु उन लोगो के लिए जीवन तभी सभव हो सकता था जबकि घेरे से कोई उनको उबारता। घेरे के अदर सब लोग इस समाचार के लिए लालायित थे कि कानपुर स्थित सेना का अध्यक्ष हेवलाक उनकी सहायता के लिए कब पहुँचे और घेरे की यातना और अनिश्चितता से छुटकारा दिलाए। हेवलाक भी भली भाँति जानता था कि रेजीडेन्सी के त्रस्त लोगो की आँखे उस पर लगी है। वह सोचता, क्या वह इस गुरुतर भार को उठा सकेगा? हेवलाक के साधन सीमित थे, और कार्य कठिन था। लेकिन फल कुछ भी हो, उसे तो कर्म करना ही था। उसे बार-बार रेजीडेन्सी से सहायता के लिए प्रार्थना आ रही थी। रेजीडेन्सी के निवासियो का बाह्य ससार से किसी प्रकार का सपर्क नही रह गया था। न बाहर की खबर अदर आ सकती थी और न अदर की खबर बाहर ही जा सकती थी। समाचार लाने और ले जाने का काम दो भारतीय जासूस अंगद तिवारी और मिसिर कनौजी लाल करते थे। अगद को प्रति फेरे का पाँच सौ पौड धन दिया जाता था। उसी के द्वारा हेवलाक से पत्राचार सभव था। अगद को कानपुर मे नाना साहब की गतिविधि पर निगरानी रखने के लिए भेजा गया था। वहाँ से लौटकर उसने समाचार दिया कि हेवलाक गगा नदी को पार करने की तैय्यारी मे है। वहाँ से चलकर वह रेजीडेन्सी की सहायता

के लिए जरूर आएगा। २२ जुलाई को रेजीडेन्सी के कमाडर इगलिस ने अगद को निम्नलिखित समाचार लेकर हेवलाक के पास भेजा ·

"… … ··मै आपको सूचित करता हूँ कि क्रातिकारी हमारी किलेबदी की दीवालो तक आ गए है, और दिन-रात निरतर हम पर गोलाबारी कर रहे है। मै विश्वास करता हूँ कि आप शीघ्र से शीघ्र हमारी सहायता के लिए आएँगे।"

यह सदेश अग्रेजी मे लिखा गया था। उसका कुछ भाग ग्रीक भाषा मे था। यदि क्रातिकारियो के हाथ यह सदेश पड़ भी जाता तो भी वे उसे समझ न सकते थे। अगद इस सदेश को हुक्के की नली मे छिपा कर ले गया था। इस पत्र को पढ़ने से मालूम होता है कि रेजीडेन्सी का कमाडर इगलिस चिंतित था परतु उसे किसी प्रकार की घबराहट न थी। उसे आशा थी कि निकट भविष्य में मदद मिल जाएगी। तीन दिन पश्चात २५ जुलाई को अगद हेवलाक का यह सदेश लेकर लौटा था. "हमारी दो-तिहाई सेना गंगा नदी के पार आ गई है। आठ तोपे भी नदी को पार कर चुकी है। हमारे पास उन सबको नष्ट करने के लिए पर्याप्त सेना है, जो हमारा विरोध कर रहे है। पाँच या छः दिन में हम तुमसे आ मिलेगे।"

इस समाचार से रेजीडेन्सी में नई आशा का संचार हुआ।

वे सोचने लगे कि घेरे के कष्ट से छुटकारा मिलने ही वाला है। कह नही सकते कि हेवलाक ने आत्म विश्वास से परिपूर्ण यह पत्र किस आधार पर लिखा था। रेजीडेन्सी के निवासियो की आशा तो मृग-तृष्णा मात्र थी। वह दिवस तो अभी बहुत दूर था। उन्हे कई माह के पश्चात छुटकारा मिला। एक दिन विश्राम करने के पश्चात २७ जुलाई को अगद फिर हेवलाक के लिए एक सदेश एव लखनऊ क्षेत्र का विस्तृत मानचित्र लेकर चला। यह लखनऊ नगर, एव रेजीडेन्सी तक पहुँचने का नक्शा था, जिसका प्रयोग हैवलाक रेजीडेन्सी तक पहुँचने मे कर सकता था। ब्रिगेडियर इगलिस का सदेश इस प्रकार था

"रेजीडेन्सी नगर की सीमा से लगभग डेढ मील दूर है। हम आपके आने वाले मार्ग की दाई एव बाई तरफ स्थित क्रातिकारियो की मजबूत चौकियो पर अपने स्थान से पद्रह सौ गज की दूरी तक गोलाबारी कर सकते है। आपके मार्ग के दोनो तरफ मकान है और इस सडक से भारी तोपो को ले जाने मे कठिनता होगी।"

तत्पश्चात प्रत्येक रात्रि को आठ बजे रेजीडेन्सी के लोग दक्षिण आकाश की ओर आशा भरी दृष्टि से देखते थे। हेवलाक ने सूचित किया था कि नगर मे घुसने से पहली रात्रि को आकाश मे राकेट छोड कर वह अपने आने और रेजीडेन्सी पर तथाकथित आक्रमण की सूचना देगा। वह

आशा करता था कि अगले दिन रेजीडेन्सी से क्रातिकारियो की सशक्त चौकियो पर गोलावारी की जाएगी। ताकि क्रातिकारियो का ध्यान हेवलाक की सेना से हट जाए।

दक्षिण आकाश की तरफ देखते-देखते लोगो की आँखे पथरा गई, लेकिन राकेट न दिखे। रीज ने इन शब्दो मे रेजीडेन्सी के निवासियो की निराशा को प्रतिबिबित किया है

"सत्ताइस तारीख भी चली गई। कोई सेना न आई। अट्ठाइस भी चली गई और कोई सहायता नही मिली। उतिस, तीस और इकतिस तारीख भी निकल गई और हमारी सहायता के लिए आने वाली किसी सेना का कोई पता नही। हम आशा लगाए बैठे थे कि हमारे मित्र शीघ्र ही आएँगे और विद्रोहियो को मार भगाएँगे। परतु यह सब नही हुआ। हमारे दिल बैठने लगे। लोगो मे उदासी छा गई। जीवन के प्रति वे निराश हो चुके थे, और मारे जाने से पूर्व केवल मारने की उन्हे इच्छा थी। उनका जीवन उनके लिए भार स्वरूप हो गया था।"

अगस्त १५ को हेवलाक का लिखा हुआ सदेश इगलिस को मिला। यह ग्यारह दिन पूर्व ही लिखा जा चुका था। हेवलाक ने लिखा था :

"हम कल सुबह लखनऊ के लिए रवाना होगे। हमारे सैनिको की सख्या बढ गई है। तुम तक पहुँचने मे हमे

अधिक से अधिक चार दिन लगेगे । तुम्हे हमारी हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए । यदि हम रेजीडेन्सी मे घुस न सके, तो तुम्हे दुश्मनो के घेरे को काट कर हम से आ मिलना चाहिए ।''

इस सदेश को पढकर ब्रिगेडियर इगलिस को ऐसा प्रतीत हुआ कि हेवलाक उसकी कठिन परिस्थिति को समझ नही रहा है । उसने हेवलाक को लिखा

''यह असभव है कि मै अपनी कमजोर और क्षत-विक्षत सेना के सहारे रेजीडेन्सी की किलेबदी को छोड सकूँ । आपको यह ध्यान मे रखना चाहिए कि मैं किस कठिनाई मे पडा हूँ । मेरे पास १२० के ऊपर वीमार और घायल है, २२० स्त्रियाँ तथा २३० बच्चे है । किसी भी प्रकार की गाडी नही है । तीस तोपो को और तेईस लाख के खजाने को छोड़ना पड़ेगा । फिलहाल सेना का राशन आधा कर दिया जाएगा । इस कटौती के कारण हमारी भोजन सामग्री दस सितबर तक चल जाएगी । यदि आप इस सेना को वचाना चाहते है तो विना समय नष्ट किए, आगे बढिए । शत्रु प्रति-रक्षा पक्ति से कुछ ही गज की दूरी पर है और प्रतिदिन आक्रमण करता रहता है । शत्रु की सुरगो ने हमारी चौकी को पहले से ही असुरक्षित कर दिया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी वे सुरगे लगाते रहेगे ।

''करीब पच्चीस दिन पूर्व हमारी देशी सेना को यह विश्वास

दिलाया गया था कि आप जल्दी पहुँच रहे है। यह सेना अब विश्वास खो रही है। यदि ये चले जाएँगे तो हम नही जानते कि रक्षा के लिए आदमी कहाँ से आएँगे।''

रेजीडेन्सी को घेरे मे आए हुए लगभग पैतालिस दिन हो गए थे। एक माह से उनके पास कई आश्वासन आ गए थे कि कुछ ही दिनो मे छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन यह मुक्ति दिवस मृग-तृष्णा की भाँति दूर ही हटता गया। आशा · निराशा ·· और आशा सतत रेजीडेन्सी के निवासियो को वारी-वारी से हर्षित और चितित करते रहे। कभी जीवन की आशा बँध जाती थी और कभी मौत की झलक दीखने लगती थी। हेवलाक के आने मे जितनी ही अधिक देर हो रही थी, उतनी ही घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की कठिनाइयाँ भी बढती जा रही थी। यह उनके लिए मृत्यु एव जीवन का प्रश्न था।

बारह दिन के पश्चात अर्ध रात्रि मे, २८ अगस्त को अगद एक सदेश हेवलाक से लाया। उसमे हेवलाक ने उन्हे राजपूतों की भाँति केसरिया वाना पहनकर अतिम समय तक लडते हुए मर मिटने की सलाह दी थी—

''मुझे तुम्हारा सोलह अगस्त का पत्र मिला है। मैं तुम्हे यही राय दे सकता हूँ कि क्रातिकारियो से समझौता मत करो। यदि आवश्यकता हो तो तलवार लेकर क्रातिकारियो का सामना करते हुए जीवन बलिदान कर दो। वीस या

पच्चीस दिन मे मुझे और सैनिक मिल जाएँगे, और मै यथा-शक्ति लखनऊ पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।''

इस पत्र को पाकर रेजीडेन्सी मे और निराशा छा गई। लोग सोचने लगे थे कि सहायता कभी न आएगी। जब घेरे-बदी को पूरे साठ दिन हो गए थे, तो हेवलाक, जिसे वे अपना तारनहार समझ रहे थे, उन्हे पच्चीस दिवस की और यातना भोगने के लिए कह रहा था। कौन कह सकता था कि पच्चीस दिन मे सहायता मिल ही जाएगी। क्या इससे पूर्व भी सहायता के कई सदेश न आ चुके थे ? लखनऊ के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को विश्वास नही हो पा रहा था, कि लखनऊ और कानपुर की ५३ मील की दूरी को पार करने के लिए हेवलाक को पूरे नौ सप्ताह चाहिए।

रेजीडेन्सी मे राशन आधा कर दिया गया था और इधर क्रातिकारी दिन पर दिन सशक्त होते जा रहे थे।

हेवलाक की भी स्वय अपनी कठिनाइयाँ थी। उसके पास केवल पद्रह सौ सैनिक थे और दस छोटी तोपे थी। कानपुर और लखनऊ के बीच क्रातिकारियो की लगभग बारह चौकियाँ थी और लखनऊ का युद्ध भी लडना था। हेवलाक ने लखनऊ से आए मानचित्र का अध्ययन किया। वह हाथ मल कर रह गया। उसने कहा—''सभवत दस हजार व्यक्ति लखनऊ ले सकते है, इससे कम नही।''

लखनऊ रेजीडेन्सी की घेरेबदी को ८८ दिन हो गए थे। ब्रिगेडियर इगलिस हतोत्साहित हो गया था। उसने क्राति-कारियो से समझौता करने का प्रयत्न किया, लेकिन क्राति-कारी समझौते के लिए तैयार नही हुए। सैनिको की सख्या घट कर १७२० से ६७६ हो गई थी। क्या सहायता कभी आ भी पाएगी ? इससे पूर्व उन्हे निम्नलिखित आश्वासन मिले थे—

जुलाई २५, पाँच या छ दिन मे हम तुम से आ मिलेगे।

अगस्त १५, अधिक से अधिक हमे तुम तक पहुँचने मे चार दिन लगेगे।

अगस्त २८, वीस या पच्चीस दिन मे मुझे और सैनिक मिल जाएँगे, और मै यथाशक्ति लखनऊ पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।

२५ सितवर को हेवलाक का कोई आशावादी सदेश तो नही मिला, किंतु तोप के गोलो की आवाज ने रेजी-डेन्सी के निवासियो मे आशा का सचार किया। उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ कि तोपे कह रही है कि हम तुम्हारी मदद के लिए आ रहे है।

रेजीडेन्सी का मुक्ति प्रयास

रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो से हेवलाक को कई सदेश मिल चुके थे कि 'जान बचाओ' और 'भूखे मरने से बचाओ'। हेवलाक कानपुर क्षेत्र का कमाडर था। कानपुर लखनऊ से सबसे निकटस्थ सैनिक केद्र था। दोनों नगरो के बीच केवल ५३ मील की दूरी थी। हेवलाक भी अपनी जिम्मेदारी को भली भाँति समझता था। उसे रेजीडेन्सी की सहायता के लिए पहुँचना ही था। रेजीडेन्सी के नेता सर हेनरी लारेन्स की मृत्यु के कारण रेजीडेन्सी के निवासी और अधिक असहाय हो गए थे। लारेन्स की मृत्यु से हेवलाक का सकल्प और अधिक दृढ़ हुआ कि उसे रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को हर हालत मे बचाना ही चाहिए। वह रेजीडेन्सी के उद्धारक होने का श्रेय लेना चाहता था।

हेवलाक भली भाँति जानता था कि यदि वह समय पर रेजीडेन्सी की मदद के लिए नहीं आ पाया, तो वहाँ के

निवासियो के भाग्य का निपटारा दो ही प्रकार से होगा। या तो वे क्रातिकारियो द्वारा मौत के घाट उतार दिए जाएँगे, या वे भूखे मर जाएँगे।

लखनऊ रेजीडेन्सी सामरिक एक राजनैतिक दृष्टि मे क्रातिकारियो और अग्रेजो के लिए समान महत्व रखती थी। वह अवध की क्राति का केद्र-विदु थी। अग्रेजो द्वारा रेजीडेन्सी के घेरे का अत कर दिए जाने पर क्रातिकारियो के अवध के मोर्चे का अत हो जाता, और अग्रेजो का प्रभाव पुन: स्थापित हो जाता। दोनो दलो के लिए रेजीडेन्सी पर अधिकार महत्वपूर्ण था।

कई अग्रेज सैनिको ने वाद मे सर हेनरी लारेन्स की आलोचना की थी कि उसे अवध छोड देना चाहिए था। रेजीडेन्सी को खाली कर उसे अपनी सेना सहित कानपुर आ जाना चाहिए था। इससे दो लाभ होते। कानपुर और लखनऊ की सम्मिलित सेना कानपुर-काल्पी-झाँसी क्षेत्र मे अधिक सक्रिय होती। रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्ति भी घेरे की यातना से वच जाते। इस विचार के विरुद्ध यही कहा जा सकता है कि लखनऊ को छोड़ देने पर अग्रेजी सत्ता को अवध मे भारी धक्का लगता।

वे क्रातिकारियो की दृष्टि मे भगोडे सावित होते। क्रातिकारियो का हौसला और अधिक वढता। दिल्ली अग्रेजो के हाथ से पहले ही निकल चुकी थी। लखनऊ छोड

देने पर, अवध के ऐसे व्यक्ति जो निश्चय नही कर पा रहे थे कि किस पक्ष का साथ दे, अव क्रातिकारियो के पक्ष मे आ जाते। लखनऊ न छोडने का निश्चय सामरिक दृष्टि से उचित ही था।

हेवलाक लखनऊ के मुक्ति प्रयास की कठिनता भली भॉति समझता था। सपूर्ण अवधवासी अग्रेजों के विरुद्ध थे। स्थानीय जनता से उसे किसी भी प्रकार की सहायता नही मिल सकती थी। कानपुर और लखनऊ की दूरी अधिक तो नही थी, लेकिन इन दो नगरो के मध्य क्रातिकारियो की सशक्त चौकियॉ थी। हेवलाक के पास पर्याप्त सेना भी नही थी, और न उसे भावी युद्ध मे आहत सैनिको की पूर्ति की ही आशा थी। इन कठिनाइयो के होते हुए भी उसे लखनऊ की ओर वढना ही था। वह भली भॉति जानता था कि लखनऊ रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्ति उसे अपना बचाने वाला समझ रहे है। उनकी ऑखे उस पर लगी है। वह उनकी आशाओ पर तुषारापात नही कर सकता था।

कानपुर गगा नदी के किनारे वसा है। लखनऊ की ओर प्रस्थान करने के लिए उसे सर्वप्रथम गंगा नदी को पार करना था। उसने नावो का पुल बनाना प्रारभ किया। सामरिक दृष्टि से इस पुल का महत्व था। इसके द्वारा कानपुर से लखनऊ की ओर यातायात सभव हुआ। पुल के वनने में कई दिन लगे। एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि

क्रातिकारी इस समय क्या कर रहे थे ? न तो कानपुर के क्रातिकारियो ने इस पुल के वनने मे वाधा दी, और न लखनऊ के क्रातिकारियो ने इसके बनने मे रुकावट डाली। क्या लखनऊ के क्रातिकारी यह नही समझते थे कि पुल के वनने से अग्रेजो को अनवरत सहायता मिल सकेगी, और अवध मे दुर्घटना होने पर वे इस पुल के द्वारा जान वचा कर भाग सकते थे ? स्पष्ट है कि लखनऊ और कानपुर के क्रातिकारियो मे किसी भी प्रकार की पारस्परिक सुनियोजित योजना नही थी।

क्रातिकारियो को हर दशा मे इस पुल को वनने नही देना चाहिए था। वास्तव मे गगा के पुल का युद्ध अवध के युद्ध का प्रथम मोर्चा हो सकता था।

२५ जुलाई को हेवलाक ने पद्रह सौ सैनिको के साथ गगा को पार किया। कानपुर से पाँच मील की दूरी पर मगरवारा मे उसने एक अग्रिम चौकी स्थापित की। मगरवारा एक ऊँचे स्थान पर वसा था। इस चौकी से गगा मे आने-जाने वाली नावो पर नियत्रण रखा जा सकता था, और पुल से आने-जाने वाली फौजो को भी सरक्षण दिया जा सकता था। शत्रु की सेना को पुल पार करने से भी रोका जा सकता था। मगरवारा मे हेवलाक स्थिति के विगडने पर आश्रय लेने के लिए आ सकता था, और अपने घायल

एव बीमार सिपाहियो को भी इलाज के लिए भेज सकता था ।

मगरवारा मे वह तीन दिन रसद और यातायात के साधनो के लिए रुका । २८ जुलाई को उसने प्रधान सेनापति को एक पत्र लिखा, जिसमे उसने अपनी कठिनाइयो का वर्णन किया, और अपनी सीमित शक्ति के कारण कुछ कर सकने मे अपनी असमर्थता ही दिखलाई । उसके पत्र का आशय इस प्रकार था—

"यदि यह मान भी लिया जाए कि लखनऊ रेजीडेन्सी के सैनिक घेरा काटकर मुझसे आ मिलते है, तव भी मेरे गगा पार कर कानपुर वापस लौटने के प्रयास मे भारी क्षति की संभावना है । मेरी लौटती हुई सेना पर क्रातिकारी पीछे से वार करेगे । उसी प्रकार मेरा रेजीडेन्सी के घिराव मे आए हुए व्यक्तियो को मुक्ति देना भी कठिन है । क्राति-कारी रेजीडेन्सी के घेरे को क्रमश दृढ करते जा रहे है । ज्यों-ज्यों समय वीतता जा रहा है, क्रातिकारियो की सख्या भी क्रमश वढती जा रही है ।

"लखनऊ की ओर वढने मे कठिनाइयॉ अधिक है । मार्ग मे सई नदी के ऊपर 'वनी' नामक स्थान मे पुल है । नदी की प्राकृतिक रुकावट का लाभ उठाकर क्रातिकारियो ने यहॉ प्रबल मोर्चा वना रखा है । उन्होंने पुल को वारूद से

उडाने का प्रबध भी कर रखा है। यह भी सभव है कि 'वनी' पर सीधा आक्रमण करने मे मुझे एक-तिहाई सेना से हाथ धोना पड़े।

"आज सुवह मुझे रेजीडेन्सी के इजीनियर से लखनऊ क्षेत्र का मानचित्र मिला। उसमे उन्होने मुझे रेजीडेन्सी तक पहुँचने का मार्ग दर्शाया है, और अन्य लाभदायक सूचना भी दी है। जासूसों के द्वारा लाई गई सूचना के आधार पर मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि रेजीडेन्सी के घेराव मे आए हुए व्यक्तियो को किसी प्रकार की सहायता पहुँचा सकना अति कठिन है। इस प्रयास मे हमे हानि भी अधिक उठानी पड़ेगी। लेकिन मै हर प्रकार का खतरा उठा कर भी लखनऊ पहुँचने का प्रयास करूँगा। हैजा के कारण हमारी सेना की सख्या दिन प्रति दिन कम होती जा रही है। मेरी सेना मे पद्रह सौ सैनिक है, जिनमे वारह सौ अग्रेज है, और दस तोपे है।"

प्रधान सेनापति को लिखे हुए इस पत्र के अनुसार हेवलाक की स्थिति निराशाजनक प्रतीत होती है। लेकिन वह निष्क्रिय भी नही रह सकता था। अत २९ जुलाई को उसने उन्नाव की ओर प्रस्थान किया। उन्नाव में उसका मार्ग क्रातिकारियो ने रोक रखा था। क्रांतिकारियो की सेना का अगला भाग वगीचे की एक चहार दिवारी के पीछे सुरक्षित था। उसका दायाँ भाग दलदल के पीछे फैला

हुआ था, जिस पर सीधा आक्रमण नही किया जा सकता था। क्रातिकारियो की वाकी सेना मकानो के पीछे और मकानो के अदर इकट्ठी थी, जिनकी दीवालो पर गोली चलाने के लिए छेद कर दिए गए थे। युद्ध के फलस्वरूप हेवलाक ने क्रातिकारियो की तोपो पर कब्जा कर लिया।

इस समय उसे समाचार मिला कि लखनऊ से क्रातिकारियो की सहायता के लिए तोपखाने के साथ एक सेना आ रही है और वह उन्नाव पहुँचने ही वाली है। यह महत्वपूर्ण था कि नवागतुक सेना का नगर मे घुसने के पूर्व ही सामना कर लिया जाता। अत हेवलाक तेजी से आगे वढा और नगर को पार कर उसने अपना मोर्चा ऐसे स्थान पर लगाया जो चारो ओर दलदल से घिरा था। इस स्थान से, लखनऊ से आने वाली सडक पर गोलावारी की जा सकती थी। क्रातिकारी जाल मे फॅस गए। अकस्मात अग्रेजो की तोप और गोलियो की मार उन पर पडी। मार से वचने के लिए क्रातिकारी सेना दाएँ और वाएँ फैली, किंतु उनकी तोपे दल दल मे फॅस गई। तीन सौ क्रातिकारी मारे गए और पद्रह तोपे अग्रेजो के हाथ लगी। हेवलाक ने उनका पीछा कुछ दूरी तक किया, और तीन घटे विश्राम करने के वाद, वह ६ मील आगे वशीरतगज पहुँचा।

वशीरतगज छोटा कस्वा था। उसके चारो ओर चहार दिवारी थी। क्रातिकारी मकान [और चहार दिवारी की

आड मे मोर्चो पर डटे थे। पीछे की तरफ से उन्हे पानी के एक लगभग सात फुट गहरे तालाव मे सरक्षण मिलता था, जिसके ऊपर एक पुलिया से सडक जाती थी। हेवलाक ने सामने से आक्रमण नही किया, जैसा कि क्रातिकारी सोचते होगे। उसने नगर के दाएँ बाएँ ओर से आक्रमण किया। क्रातिकारी विस्मित रह गए। कुछ देर सामना करने के बाद वे रणक्षेत्र से भाग गए।

इन दो युद्धो के फलस्वरूप जिनमे हेवलाक को सफलता मिली थी, उसके अट्ठासी सैनिक मर चुके थे। अब उसकी सेना मे केवल आठ सौ पचास सैनिक बचे थे। जितनी भी गाडियाँ उपलब्ध थी, वे सब घायलो से भरी थी। वह केवल लखनऊ की एक-तिहाई दूरी को पार कर सका था। गुप्तचरो द्वारा सूचना मिली थी कि लखनऊ से आगे मार्ग मे क्रातिकारी कई स्थानो पर उसका सामना करने के लिए इकट्ठे है। हेवलाक ने निश्चय किया कि उसे मगरवारा लौट जाना चाहिए। वहाँ घायलो की सुचारु रूप से चिकित्सा हो सकेगी, और उसके सैनिक आराम कर सकेगे। पुन अधिक सैनिक प्राप्त होने पर ही उसे लखनऊ की ओर बढना चाहिए, इस निर्णय से कई सैनिको को निराशा हुई। वे सोचते थे कि सीमित साधनो के होते हुए भी, उनका लखनऊ पहुँचना सभव था।

मगरवारा पहुँचने पर हेवलाक ने ३१ जुलाई को कानपुर के

कमाडर नील को एक पत्र लिखा । (नील आगे चलकर 'कानपुर का कसाई' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । उसने क्राति-कारियो एव जनसाधारण पर अकथनीय अत्याचार किए)। पत्र मे लिखा था कि मै लखनऊ की ओर बढ सकता हूँ, यदि मुझे कुछ तोपे और एक हजार सैनिक मिले ।

नील ने हेवलाक के वापस लौटने को अच्छा नही समझा । उसका विचार था कि इससे ब्रिटिश प्रतिष्ठा को धक्का लगा है । अब तक भारतीय ब्रिटिश सैन्य शक्ति से प्रभावित थे । हेवलाक के लौटने से वे यही समझेगे कि अब अग्रेजो की शक्ति क्षीण हो गई है । नील ने हेवलाक को एक अभद्र पत्र भेजा—

"मुझे दु ख है कि आप पीछे हटे है, इससे हमारी प्रतिष्ठा पर बुरा प्रभाव पडा है । कानपुर मे अनेक खबरे फैली हुई है, जिनमे एक यह है कि आप जितनी तोपे ले गए थे, उनको खो चुके है । आप अधिक तोपो को लेने के लिए पीछे हटे है । सबका यह विश्वास है कि आप पराजित हुए है । यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि शत्रुओ से छीनी हुई तोपे आप अपने साथ नही लाए । आपके पीछे हटने का निश्चय हमारे उद्देश्य के लिए बहुत हानिकर हुआ है । आपको फिर आगे बढना चाहिए, और तब तक नही रुकना चाहिए, जब तक कि आप रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को बचा न ले ।"

अपने अधीनस्थ अधिकारी की कटु आलोचना से हेवलाक तिलमिला उठा। उसने नील को मुहतोड जवाब दिया कि, "तुम्हे यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि यदि यह राजकाज मे बाधक नही होता तो मै तुम्हे गिरफ्तार करवा देता। तुम्हारा इस प्रकार का पत्र-व्यवहार अशोभनीय है।"

हेवलाक को केवल २५७ सैनिको की और सहायता मिल सकी थी। उन्होने केवल मरे हुए सैनिको के रिक्त स्थानो की पूर्ति की। उससे सैनिक सख्या मे कोई वृद्धि न हो सकी, और न स्थिति मे ही कोई सुधार हुआ। फिर भी उसने दूसरी बार लखनऊ की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया। बशीरतगज मे क्रातिकारी फिर आ गए थे, और उन्होने हेवलाक से युद्ध करने की सब तैयारियाँ कर रखी थी। हेवलाक ने क्रातिकारियो को हराया, लेकिन वह उनका पीछा न कर पाया। उसके पास घुडसवार सेना बहुत कम थी। क्रातिकारी अपनी तोपो को भी साथ ले जाने मे सफल हुए। हेवलाक को स्पष्टतया आभास हुआ कि वह लखनऊ को सहायता पहुँचाने के लिए शक्तिशाली नही है।

इस समय उसे ग्वालियर सेना के विद्रोह का भी समाचार मिला, जिसके कारण काल्पी और कानपुर मे गभीर स्थिति पैदा होने की सभावना बढ गई थी। उसके सम्मुख दो समस्याएँ थी : वह लखनऊ की ओर बढे, या गगा पार कर काल्पी तथा कानपुर क्षेत्र की बिगडती हुई स्थिति का सामना

करने के लिए तत्पर रहे। हेवलाक ने सोचा कि यदि वह लखनऊ की ओर बढता है तो उसे एक-तिहाई सेना से हाथ धोना पडेगा। लखनऊ के युद्ध के लिए उसके पास केवल सात सौ व्यक्ति बचेगे। प्रतिदिन उसकी सेना मे हैजा से मृत्यु हो रही थी। यह असभव था कि सात सौ सैनिको की सहायता से वह रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो की किसी भी प्रकार की मदद कर पाता। यह भी सभव था कि इस प्रयास मे उसकी पूरी सेना ही नष्ट हो जाती। उसने निश्चय किया कि वह मगरवारा लौट जाएगा।

उसे रेजीडेन्सी मे 'जान बचाओ।' सदेश मिल रहे थे। लेकिन वह कर ही क्या सकता था। अब तो वह इस स्थिति मे भी न था कि उनको आशा का सदेश भी दे पाता। कटु वास्तविकता का विचार कर उसने इगलिस को राय दी कि जो कुछ बन पड़े स्वय ही करो। कही से भी किसी प्रकार की मदद की आशा छोड दो। यदि सभव हो तो घेरे को काटकर कानपुर चले आओ। यह एक ऐसी राय थी जिसका पालन करना इगलिस के लिए असभव था। लेकिन कानपुर में क्रातिकारियो की बढती हुई शक्ति के कारण हेवलाक को गगा पार कर अवध को छोडना पडा।

हेवलाक अवध को छोड़ कर कानपुर नही जाना चाहता था। उसका विश्वास था कि इसका दुष्परिणाम होगा। सर्वसाधारण इसका यही अर्थ लगाएँगे कि अग्रेज पीछे हट रहे है। क्रातिकारियो के पक्ष की वृद्धि होगी।

हेवलाक का अवध छोड़ना

कानपुर मे क्रातिकारियो का नेता नाना साहब था। वह पदच्युत पेशवा का दत्तक पुत्र था। जब अग्रेजो ने उसकी पेंशन बद कर दी तो वह अग्रेजो का शत्रु बन गया। सन '५७ की क्राति मे वह विठूर-कानपुर क्षेत्र मे सक्रिय रहा।

लखनऊ की अपेक्षा कानपुर मे क्रातिकारियो को अधिक सफलता मिली। मगरवारा मे हेवलाक को समाचार मिला कि विठूर मे क्रातिकारी सक्रिय हो रहे है। यह अग्रेजो के लिए नया खतरा पैदा हो गया था। यदि कानपुर क्षेत्र मे क्रातिकारी और अधिक सशक्त बनने दिए जाते तो हेवलाक को पीछे की ओर से भी आक्रमण की आशका बनी रहती, अत उसने विठूर की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया।

लखनऊ की स्थिति तो शोचनीय थी ही। इस प्रकार

हेवलाक लखनऊ और कानपुर के क्रातिकारियो के मध्य चक्की के दो पाटो के वीच आए हुए अनाज की तरह पिस सकता था, यदि दोनो नगरो के क्रातिकारियो ने मिल कर उस पर दोनो तरफ से साथ-साथ हमला कर दिया होता ।

कानपुर का सामरिक दृष्टि से अपना महत्व था । यदि कानपुर क्रातिकारियो के अधिकार मे पूर्णतया आ जाता, तो इलाहावाद से आने-जाने के साधनों पर रोक लग जाती । उत्तर भारत के अग्रेजो को सहायता कलकत्ता से होते हुए गगा के मार्ग से ही मिल सकती थी । अत हेवलाक को

हाथी पर सवार नाना साहव

कानपुर मे अग्रेजी सत्ता को बनाए रखना आवश्यक प्रतीत हुआ ।

कानपुर का कमाडर नील अपनी बची-खुची सेना के साथ एक चौकी बना कर रक्षात्मक युद्ध लड रहा था । उसकी स्थिति स्वय निर्बल थी । नील ने हेवलाक को लिखा कि, "विठूर मे एक हजार क्रातिकारी पाँच तोपों के साथ आ डटे है । यदि मुझे सहायता नही मिल पाती है तो मै इस सिलसिले मे कुछ नही कर सकता हूँ । मै केवल अपनी और चौकी किलेबदी की रक्षा कर सकता हूँ ।"

हेवलाक ने निश्चय किया कि सामरिक दृष्टि से उसका विठूर जाना उचित ही होगा । उसने अपना कुछ सामान गगा पार भेज भी दिया था, जब उसे समाचार मिला कि बशीरतगज मे चार हजार क्रातिकारी फिर एकत्र हो गए है । नदी पार करते समय उसे डर बना रहता कि कही उस पर पीछे से आक्रमण न हो जाए । अत उसने तय किया कि पहले बशीरतगज मे एकत्र क्रातिकारियो से निपटा जाए ।

भारी वर्षा हो रही थी । वह बशीरतगंज की ओर बढा । बशीरतगज मे तीसरी बार उसने क्रातिकारियो से युद्ध किया । वे पराजित हुए, और रणक्षेत्र छोड कर भाग गए ।

मगरवारा लौट कर हेवलाक ने गगा नदी को पार किया ।

तत्पश्चात पुल को तोड कर उसने बिठूर की ओर प्रस्थान किया । उसने पुल को तोडना आवश्यक समझा । पुल के बने रहने पर उसे अवध के क्रातिकारियो से डर बना रहता । वे उस पर पीछे से आक्रमण भी कर सकते थे और कानपुर के क्रातिकारियो की सहायता के लिए भी आ सकते थे ।

बिठूर मे क्रातिकारियो ने विस्तृत मैदान मे जहॉ गन्ने की खेती हो रही थी, युद्ध के लिए व्यूह रचना की थी । उन्होने अपनी सेना और तोपो को पौधो के पीछे छिपा रखा था । हेवलाक अपने सशक्त तोपखाने को लेकर युद्ध के लिए बढा । दोनो तरफ से गोलाबारी हुई । युद्ध के परिणामस्वरूप क्रातिकारियो की पैदल सेना तो टिक न सकी, किंतु छिपी हुई तोपो से अग्रेजो पर भीषण अग्नि वर्षा हुई । हेवलाक ने स्वय इस तथ्य को स्वीकार किया कि क्रातिकारी उसके सशक्त तोपखाने के विरुद्ध वीरता से लडे । विजय अग्रेजो की हुई । हेवलाक कानपुर लौट आया ।

लखनऊ की बिगडती हुई स्थिति के कारण उसे चिता हो रही थी । उसका लखनऊ का मुक्तिदाता बनने का स्वप्न अपूर्ण ही रह गया था । अब तक वह क्रातिकारियो पर छुट-पुट विजय ही प्राप्त कर सका था, लेकिन क्रातिकारियों का उत्साह किसी प्रकार कम नही हुआ था । वे पुनः युद्ध के लिए एकत्र हो जाते थे ।

छ सप्ताह पश्चात उसे कलकत्ता से सहायता मिल। ; कलकत्ता से उटरम इतनी सेना लेकर आया कि उनकी सम्मिलित सेना मिलकर लखनऊ के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की सहायता के लिए बढ सकती थी । उधर अवध की क्राति ने हेवलाक के अवध छोडने पर जन क्राति का रूप ले लिया था । अवध के विभिन्न वर्ग के लोगो ने अग्रेजो के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे । लखनऊ रेजीडेन्सी के घेरे को सशक्त करने के लिए, अवध से विभिन्न भागों से सैनिक खिचे आ रहे थे ।

मददगार स्वयं घेरे के अंदर

बिठूर की विजय के पश्चात जब हेवलाक १७ अगस्त को कानपुर पहुँचा तो उसे कलकत्ता गजट की एक प्रति मिली। उसे ज्ञात हुआ कि उसके पद को सर जेम्स उटरम को दे दिया गया है। उसे अब उटरम के अधीन रहकर कार्य करना होगा, इस समाचार से उसे निराशा हुई। उसने सीमित साधनों के होते हुए भी रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को बचाने का गुरुतर भार उठाने का भरसक प्रयत्न किया था। वह असभव को तो सभव नही कर सकता था! और उसे यह पुरस्कार मिला कि वह पदच्युत कर दिया गया। अब नेता न रहकर वह अधीनस्थ हो कर कार्य करेगा। कोई अन्य सैनिक होता तो इस स्थिति मे उसकी आत्मा विद्रोह करती, किंतु हेवलाक एक अनुभवी और सुलझा व्यक्ति था। अनुशासन का पालन करना सैनिक के लिए सर्वोपरि था।

वह लखनऊ लेने के लिए तैयारी करता रहा। हैजा के कारण उसके सैनिक मरते जा रहे थे। उसकी सेना मे केवल सात सौ सैनिक रह गए थे। हेवलाक उत्कठापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जब सर जेम्स उटरम अपने सैन्य दल के साथ आएगा, और उनकी सम्मिलित सेना लखनऊ की ओर कूच करेगी।

उटरम के आने पर सम्मिलित सेना मे ३,१७० सैनिक हो गए थे, जिनमे २,३८८ अग्रेज सैनिक थे। घुडसवारो की सख्या केवल १६८ थी।

उटरम रेजीडेन्सी लेने वाली सेना का अधिनायक बना कर भेजा गया था। उसने निश्चय किया कि हेवलाक ही इस सेना का सचालन करेगा। वह एक असैनिक स्वय सेवक की भाँति उसके साथ रहेगा। उसका विचार था कि रेजीडेन्सी को लेने का श्रेय हेवलाक को ही मिलना चाहिए, जो सीमित साधनो के होते हुए भी रेजीडेन्सी तक पहुँचने का सतत प्रयत्न करता रहा।

कानपुर से हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना ने लखनऊ की ओर प्रस्थान किया। पहले कहा जा चुका है कि विठूर जाते समय हेवलाक ने गगा के पुल को तोड दिया था। यह निश्चय किया गया कि पुराने पुल के स्थान पर फिर नावो का पुल बनाया जाए।

हेवलाक के हटने पर क्रांतिकारियो ने मगरवारा पर अधिकार कर लिया था। वहाँ आठ तोपो के साथ आठ हजार क्रांतिकारी जमे हुए थे। पुल बनने लगा, और बनता गया, लेकिन क्रांतिकारियो ने उसके बनने मे किसी प्रकार की बाधा नही दी। सामरिक दृष्टि से क्रांतिकारियो के लिए यह अति महत्वपूर्ण था कि गगा मे पुल न बनने पाता। पुल बनने से हेवलाक और उटरम को निरतर सहायता मिल सकती थी। मगरवारा मे क्रांतिकारियो की सख्या इतनी काफी थी कि वे पुल के बनने मे रुकावट डाल सकते थे। उन्हे रुकावट डालनी चाहिए थी, किंतु वे केवल दर्शक मात्र ही रहे। अग्रेजी सेना के पुल पार करते समय भी उन्होने किसी प्रकार की बाधा नही डाली। क्रांतिकारियो ने एक अच्छे अवसर को हाथ से निकाल दिया। वास्तव मे रेजीडेन्सी की लडाई का यह पहला मोर्चा था।

१६ सितबर को हेवलाक ने गगा को पार किया। उसी दिन उसे रेजीन्डेसी से इगलिस का सदेश मिला। अगद समाचार लाया था कि रेजीडेन्सी मे क्रांतिकारी लगातार आक्रमण कर रहे थे, और खाद्य पदार्थ की कमी से चिता-जनक स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

मगरवारा मे युद्ध हुआ। क्रांतिकारी टिक न सके, और व बशीरतगज की ओर भाग निकले। उनके १२० सैनिक मरे और दो तोपे अग्रेजो के अधिकार मे आई। उस रात्रि को

हेवलाक की सेना ने बशीरतगंज में विश्राम किया। क्रांतिकारी बशीरतगंज के मोर्चे को छोड़कर पहले ही चल दिए थे। अगले दिन २२ सितंबर को मूसलाधार वर्षा में हेवलाक की सेना सई नदी के किनारे आ पहुंची। क्रांतिकारियों ने इस मोर्चे को छोड़ते समय पुल को न तोड़ कर विश्राम किया। अब वे लखनऊ से लगभग सोलह मील की दूरी पर थे। यहाँ उन्होंने तोपों के गोले इस आशय से छोड़े कि तोपों की आवाज रेजीडेन्सी के घेरे में आए हुए व्यक्ति सुन लें, और उनमें नई आशा का संचार हो जाए। किंतु तोपों की आवाज घेरे में आए हुए व्यक्ति सुन न पाए।

अगले दिन वर्षा रुक गई, किंतु घुटन और उमस थी। हवा भी रुकी हुई थी। क्रांतिकारियों की तोपें जो रेजीडेन्सी पर लगातार गोलाबारी कर रही थीं, प्रातःकाल से ही शान्त थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि आगामी युद्ध की संभावना का विचार कर तोपें नगर की रक्षा के लिए नए स्थानों को ले जाई जा रही थीं। लखनऊ के क्रांतिकारी हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना का सामना करने के लिए अपनी शक्ति सँजो रहे थे।

क्रांतिकारी आलमबाग में मोर्चा बनाए डटे थे। आलमबाग लखनऊ कानपुर मार्ग पर लखनऊ से पाँच मील की दूरी पर स्थित है। इसे अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह ने अपनी बेगमों के रहने के लिए बनवाया था।

वर्षा के कारण सर्वत्र जल ही जल दीखता था। क्रातिकारियो ने अपनी व्यूह-रचना मे वारह सौ सैनिको को सडक के आर-पार फैलाया था। वाएँ पक्ष को आलमवाग और दाएँ पक्ष को दलदल के पीछे सुरक्षित रखा था। क्रातिकारियो ने अग्रेजो के पहुँचते ही तोपो से गोले वरसाने शुरू किए।

प्रत्युत्तर मे हेवलाक ने भी अपने तोपखाने को सामने किया और क्रातिकारियो पर गोलावारी प्रारभ की। अग्रेजो का तोपखाना भारतीय तोपखाने की अपेक्षा अधिक सशक्त था, और अग्रेजो के पास तोपे भी सख्या मे अधिक थी।

तोप के गोलो और वदूक की गोलियो की वौछार से कुछ हद तक सुरक्षा पाकर अग्रेज पैदल सेना आक्रमण के लिए आगे वढी।

आलमवाग

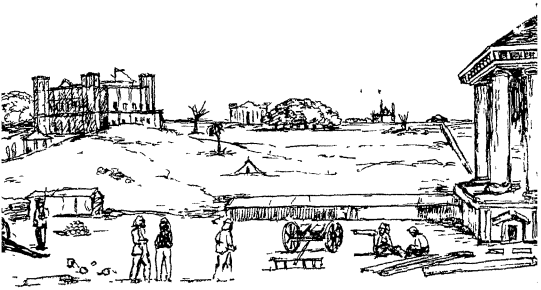

क्रातिकारी यह आशा नही करते थे कि अग्रेज दलदल को पार कर उन पर आक्रमण करेगे। किन्तु हेवलाक ने क्राति-कारियो को आश्चर्य मे डाल दिया। उसके सैनिक दलदल को पार कर आक्रमण कर बैठे। जिस दलदल को वे दुर्भेद्य समझे बैठे थे, वह आसानी मे पार कर लिया गया। अग्रेज सिपाही सीने तक गहरे पानी को पार कर आक्रमण कर बैठे। क्रातिकारियो के मध्य भाग मे भी उसी समय साथ-साथ आक्रमण किया गया। अग्रेजो के सशक्त तोपखाने

आलमबाग का मुख्य द्वार

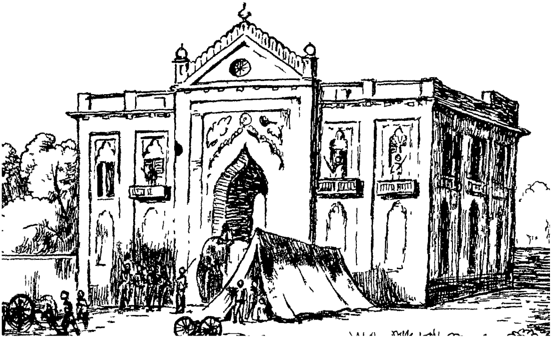

ने क्रातिकारियो की तोपो की मार को शात कर दिया। क्रातिकारियो की पैदल सेना ने आगे वढकर अग्रेजो का सामना करने का प्रयास किया, किंतु तोपो की मार से बचने के लिए उन्हे भी लौटना पडा। आलमवाग की दीवालो का सहारा लेकर उन्होने युद्ध किया, किंतु अत मे क्रातिकारियों को आलमवाग छोडना पडा।

अग्रेजो की घुडसवार सेना ने क्रातिकारियो का पीछा नहर के ऊपर चारवाग के पुल तक किया। इस नहर को नवाव गाजीउद्दीन हैदर ने वनवाया था। उसकी योजना यह थी कि गगा के अतिरिक्त जल को गोमती नदी मे इस नहर के द्वारा पहुँचाया जाए। तराई के एक तालाव से निकलने वाली गोमती नदी मे वहुत कम जल रहता है। वह उसके जल की वृद्धि करना चाहता था किंतु नहर कुछ ही मील वन पाई। नगर के लिए कुछ सीमा तक वह सुरक्षा का साधन अवश्य वन गई। पुल पर क्रातिकारियो ने डट कर सामना किया। हेवलाक वापस लौट आया, और उस रात्रि को अग्रेजो ने आलमबाग मे विश्राम किया।

अव अग्रेजी सेना लखनऊ के सम्मुख थी। इसी समय समाचार मिला कि अग्रेजो ने दिल्ली ले ली है। इस समाचार से अग्रेजी सेना का मनोवल वढा और उन्होने दृढ सकल्प किया कि लखनऊ को ले लेना चाहिए। वाद मे पता चला कि इस समाचार का कोई आधार नही था।

हेवलाक के सामने यह समस्या थी कि वह किस मार्ग का चयन करे कि कम-से-कम समय मे रेजीडेन्सी पहुँच जाए, और उसकी सेना को न्यूनतम क्षति पहुँचे। जासूसो से उसे समाचार मिला कि सिकदरबाग, शाहनजफ और मोती-महल खाली है। ये तीनो स्थान चहार दीवारी से घिरे थे और किले की भाँति सुरक्षित थे। क्रातिकारियो ने नगर के बचाव के लिए यहाँ मोर्चे नही बनाए थे। केवल कैसरबाग मे उन्होने तैयारी कर रखी थी।

उटरम जो सन सत्तावन की क्राति के पूर्व अवध का रेजीडेट एव चीफ कमिश्नर रह चुका था, लखनऊ और

गोमती नदी के दक्षिण ओर स्थित महत्वपूर्ण भवनो का एक विहगम दृश्य—शाहनजफ, मोतीमहल और छतरमजिल आदि।

उसके निकटस्थ क्षेत्र से भली भाँति परिचित था। उसने राय दी कि सबसे उचित मार्ग यह होगा कि चारबाग के पुल को पार कर, नहर के बाएँ किनारे बढते हुए रेजीडेन्सी के पूर्व मे स्थित महलो तक पहुँचा जाए।

२५ सितबर को प्रात काल अग्रेजी सेना आलमबाग से आगे बढी। सेना के अग्रिम दल का नेतृत्व उटरम तोपखाने के साथ कर रहा था। हेवलाक सेना के पिछले भाग के साथ था। वर्षा ऋतु के कारण मार्ग के दोनो तरफ लबी घास उग आई थी। क्रातिकारियो न अपनी तोपे घास के अदर छिपा रखी थी। ज्यो ही अग्रेजी सेना आगे बढी उस पर तोप के गोलो की मार पडी। दीवालो से घिरे बगीचो एव मकानो से गोलाबारी जारी रही, लेकिन अग्रेजी सेना आगे बढती रही और पुल तक पहुँच गई।

क्रातिकारियो ने निश्चय किया कि पुल पर अग्रेजों का जम कर सामना किया जाए। वहाँ उन्होने ६ तोपे लगा रखी थी, और निकटस्थ मकानों से भी गोलाबारी करने का प्रबध कर रखा था। उन्होंने चारबाग की चहार दिवारी के पीछे भी कई तोपे लगा रखी थी। इस सम्मिलित मार से अग्रेजी फौज आगे न बढ सकी। वह रुक गई। उटरम ने एक टोली को लेकर चारबाग के अहाते से आक्रमण-कारियों को हटा दिया। इसी समय नील ने पुल पर स्थित क्रातिकारियों की छ तोपो पर कब्जा कर लिया। अब

अग्रेजो को तोप के गोलो की मार से छुटकारा मिल गया, और उन्होने पुल को पार किया।

नहर के किनारे-किनारे बाई ओर बिना किसी विशेष रुकावट के बढती हुई अग्रेज सेना मोतीमहल पहुँची। मोतीमहल और रेजीडेन्सी की छ फर्लाग की दूरी मे कई महल एव भवन थे। बेगम कोठी और अस्तबल पर अग्रेजो को रोकने का प्रयास किया गया, किंतु अग्रेजो के तोपखाने की मार के सामने वे टिक न पाए।

अब अग्रेजो की सेना रेजीडेन्सी से केवल पाच सौ गज की दूरी पर थी, और फरहतबख्श महल पर आ पहुँची थी। अँधेरा होने लगा था। रेजीडेन्सी की ऊँचाई से घेरे मे आए हुए व्यक्ति आगे बढती हुई सेना को देख रहे थे। वे अति

मोतीमहल

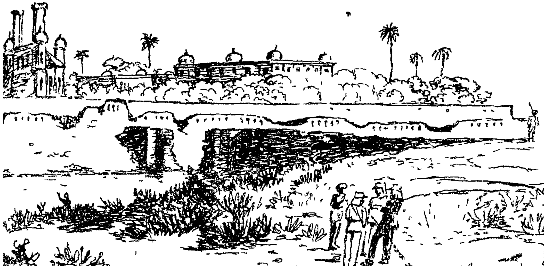

प्रसन्न थे कि घेरे के जीवन के अभावो से उनको छुटकारा मिल जाएगा। कुछ ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रार्थना करने लगे थे। मुक्तिदायिनी सेना के स्वागत के लिए सब उत्कठित थे।

उटरम इस पक्ष मे नही था कि रात्रि को ही रेजीडेन्सी पहुँचा जाए। वह चाहता था कि रात्रि को सैनिक छतर-मजिल मे विश्राम करे। किंतु हेवलाक ने निश्चय किया कि विश्राम करना उचित न होगा। तुरत रेजीडेन्सी पहुँचना चाहिए। उसने उस मार्ग का चयन किया, जिसके दोनो तरफ मकान थे। मकान की दीवालो मे बने छेदो से उन पर लगातार गोलाबारी हुई। कदम-कदम पर सैनिक गिरने लगे। बचाव का कोई साधन न था। सड़को मे क्रातिकारियो ने गहरी खाइयाँ खोद रखी थी। इसी समय कानपुर के हत्यारे नील के एक गोली लगी और वह मर गया।

अँधेरे मे हेवलाक, उटरम और उसकी सेना रेजीडेन्सी पहुँची। ८८ दिन के पश्चात रेजीडेन्सी मे घिरे हुए व्यक्तियो को सहायता मिली, लेकिन आक्रमणकारियो की एक-चौथाई सेना मारी गई या घायल हुई। घनी आबादी से आक्रमण करना विवेकपूर्ण कार्य नही था। प्रत्येक घर से उन पर लगातार गोलियो की बौछार होती रही।

रेजीडेन्सी मे खुशियाँ मनाई गई और ईश्वर को धन्यवाद

दिया गया कि आखिर सहायता आ ही गई, लेकिन यह सहायता भी कैसी सहायता थी। घेरे में आए हुए व्यक्ति पूर्वत घेरे मे ही रहे। उद्धारक स्वय घेरे मे आ गए थे।

अव रेजीडेन्सी मे उटरम और हेवलाक की सम्मिलित सेना के आने के कारण सैनिको की सख्या वढ गई थी। अत रेजीडेन्सी के वचाव की पुनर्व्यवस्था की गई। रेजीडेन्सी का पुराना क्षेत्र व्रिगेडियर इगलिस के अधिकार मे वना रहा।

हेवलाक उस विस्तृत क्षेत्र का सचालक वना जिसके अदर कई महल आते थे, और जिन्हे क्रमश क्रातिकारियो से रेजीडेन्सी की सुरक्षा के हेतु सामरिक दृष्टि से छीन लिया गया था। नए सैनिक फरहतवख्श महल और छतर मजिल मे रहने लगे थे। (छतर मजिल मे आजकल ड्रग रिसर्च इस्टीट्यूट है।) ये दोनो महल रेजीडेन्सी से करीव-करीव मिले थे, और इनके चारो तरफ मजबूत चहार दीवारी वनी थी। नवाबो ने अपनी बेगमो के रहने के लिए छतर मजिल वनाई थी। फरहतवख्श महल क्लौड मार्टिन का महल था। उसने उसे नवाव सआदत अली खान को पचास हजार रुपए में बेच दिया था।

रेजीडेन्सी की सेना और आलमवाग की सेना का एक-दूसरे से किसी प्रकार का सबंध नही रह गया था। २ अक्तूवर को उटरम ने लिखा कि मै नगर के एक भी व्यक्ति से किसी प्रकार का पत्राचार नही कर पाया हूँ। उटरम अवध राज्य

मे रेजीडेट रह चुका था और तत्पश्चात अवध का चीफ कमिश्नर भी रहा था। अत उसके लखनऊ एव अवध के गण्यमान्य व्यक्तियो से व्यक्तिगत सबध थे। उसे आशा थी कि वह उन्हे प्रभावित कर पाएगा लेकिन क्रातिकारियो ने नगर निवासियो को इतना आतकित कर रखा था कि 'किसी की हिम्मत मुझ से पत्र-व्यवहार करने की नही हुई।' उसकी यह आशा कि उसके लखनऊ पहुँचने पर अवध की जनता मे किसी प्रकार की प्रतिक्रिया होगी केवल निराशा मात्र ही रही।

रेजीडेन्सी से घुडसवार सेना ने प्रयास किया कि घेरे को काटकर कानपुर निकल जाएँ, कितु यह सभव नही हो पाया। भविष्य मे घेरे को काटकर बाहर निकलने के प्रयास त्याग दिए गए। हेवलाक और उटरम जो रेजीडेन्सी के मुक्तिदाता होकर आए थे, स्वय घेरे मे फँस गए। उन्होने अपनी शक्ति को इस योग्य नही समझा कि वे घेरे को तोड कर बाहर निकल सकते।

रेजीडेन्सी का सफल मुक्ति प्रयास

हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना के रेजीडेन्सी के घेरे मे आने पर स्थित पहले जैसी ही रही । अतर इतना ही था कि घेरे मे आए हुए व्यक्तियो की सख्या बढ कर तिगुनी हो गई थी। सम्मिलित सेना घेरे से बाहर आ पाने मे अपने को असमर्थ पा रही थी । वह स्वय सकट मे फॅस गई थी ।

भारत मे अग्रेजो का नया सेनापति कोलिन केपवेल आ गया था । वह एक योग्य सैनिक था, और क्रीमिया के युद्ध मे प्रसिद्धि पा चुका था । उसने निश्चय किया कि वह स्वय रेजीडेन्सी के घेरे मे आई हुई सेना को मुक्ति प्रदान करेगा और अवध क्षेत्र को क्रातिकारियो से विमुक्त करेगा । वह स्कॉटलैंड का रहने वाला था और उसके साथ कई स्कॉटलैंड के हाइलैंडर्स (पहाडियो) की सेनाएँ थी, जो

अपनी वीरता के लिए आज भी प्रसिद्ध है। नेपाल के राणा जग वहादुर क्राति के कुछ वर्ष पूर्व विलायत गए थे। उन्हे हाइलैडर्स की एक सेना ने, जो अव लखनऊ मे थी, सलामी दी थी। वे इन छ फुट लबे जवानो की सेना से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्हे खरीदने की इच्छा प्रकट की थी। उन्हे वताया गया था कि यह सेना स्वयसेवको की है, और उसे बेचा नही जा सकता। इनकी वर्दी मे स्कर्ट होती है, जिसके कारण इन्हे भारतवासी घघरिया पल्टन भी कहते थे। एक तत्कालीन अवधवासी ने एक हाइलैडर्स से प्रश्न किया था कि क्या वे विलायत की रानी की हिजडा पल्टन के सैनिक है। मुस्लिम युग मे हिजडे सैनिक विशेष रूप से हरमो की सुरक्षा के लिए रखे जाते थे। अचूक निशाने वाला वौव, जिसने रेजीडेन्सी के युद्ध मे प्रसिद्धि पाई थी, स्वय एक अफ्रीकी हिजडा था।

सर कोलिन केपवेल भी कानपुर से होता हुआ लखनऊ की ओर बढा। उसकी सेना मे एक भी ऐसा व्यक्ति नही था जो कि लखनऊ एव उसके निकटस्थ क्षेत्र से परिचित हो। अवध को अग्रेजी राज्य मे मिले केवल एक वर्ष हुआ था। अवध क्षेत्र के नक्शे न वन पाए थे। पथ-प्रदर्शक के अभाव में आक्रमणकारी सेना का आगे वढना खतरनाक हो सकता था। भाग्यवश अग्रेजो को ऐसा व्यक्ति मिल गया। केवेने रेजीडेसी मे लिपिक का कार्य करता था। वह लखनऊ एव

उसके निकटस्थ क्षेत्र से भली भाँति परिचित था। उसने अपनी सेवा को पथ-प्रदर्शक के रूप में अर्पित किया। एक रात्रि को वह भारतीय भेष मे रेजीडेन्सी से निकला, और कोलिन केंपबेल के पडाव मे जा पहुँचा। इस अभियान मे केवेने सदैव सेनापति के साथ रहा और निरतर पथ-प्रदर्शन करता रहा।

दस नववर १८५७ को केवेने सेनापति से मिला। सेनापति ने उसे अपनी आक्रमण योजना वताई। एक बात उसने निश्चयपूर्वक कही कि हेवलाक के मार्ग चयन की गलती फिर दुहराई नही जानी चाहिए। उन्हे ऐसा मार्ग चुनना चाहिए जहाँ आवादी न हो। लखनऊ का प्रत्येक मकान क्रातिकारियो से भरा था। केंपवेल ने अपने अभियान को तीन भागो मे विभाजित किया।

सर्वप्रथम उन्हे आलमवाग पहुँचना था, जहाँ कि अग्रेजी सेना की चौकी थी, और रेजीडेन्सी से वे सकेतो द्वारा वातचीत कर सकते थे। सेनापति का विचार था कि आलमवाग मे तबू तथा भारी सामान छोड दिया जाए, ताकि सेना तेजी से आगे बढ सके।

इसके पश्चात वह आलमवाग से नगर के वाहर एक लवा चक्कर लगाकर दिलकुशा पहुँचेगा। दिलकुशा मे वह अपनी गाडियाँ और सामान ले जाने वाले पशुओ को छोड़

देगा। अब वह लखनऊ नगर की सीमा पर होगा। रेजीडेन्सी यहाँ से लगभग तीन मील की दूरी पर है। दिलकुशा से ला मार्टिनियर कालेज, सिकदरबाग और शाहनजफ होता हुआ वह रेजीडेन्सी पहुँचेगा।

अभियान का तीसरा और अतिम भाग रेजीडेन्सी के घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को सही सलामत दिलकुशा पहुँचा देना था।

सर कोलिन केपवेल का पहला पडाव ऊँची दीवार से घिरे

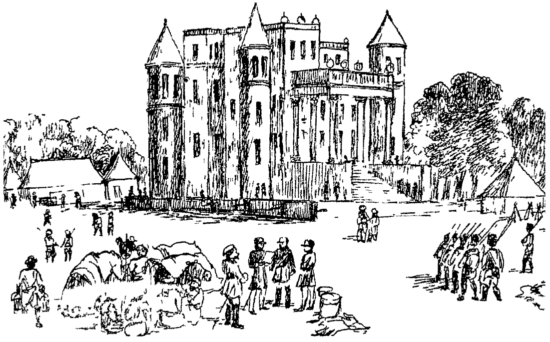

दिलकुशा महल

आलमवाग मे था, जहाँ अग्रेजी सेना के ग्यारह सौ व्यक्ति उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। १३ नववर की रात्रि को रेजीडेन्सी की छत पर कोलतार के एक पीपे मे आग लगाई गई। उसकी ऊँची उठती हुई लपटो के माध्यम से आलमबाग मे एकत्र सेना को सूचना दी गई थी कि रेजीडेन्सी के सैनिक आने वाली लड़ाई के लिए तैयार है, और अपना कर्तव्य निवाहेगे। उसके उत्तर मे आलमबाग से भी नीली रोशनी दिखाई गई। इसने रेजीडेन्सी के घेरे में आए हुए व्यक्तियो मे नई आशा का सचार किया था।

आलमवाग से केपवेल की सेना नगर के बाहर लबा चक्कर लगाकर दिलकुशा पहुँची। दिलकुशा शब्द के अर्थ है 'चित्त को प्रसन्न करने वाला'। दिलकुशा का निर्माण तीन वर्ग मील विस्तृत जगल के मध्य किया गया था। यहाँ नवाब शिकार खेलने के लिए आते थे। मार्ग में उन्हे किसी प्रकार की रुकावट नही मिली। दिलकुशा पर क्रातिकारियो का अधिकार था, लेकिन वे सीमित सख्या मे ही वहाँ थे।

जब अग्रेजो की सेना दिलकुशा के समीप पहुँची, तो क्राति-कारियों ने अपनी छ छिपी हुई तोपों से उन पर गोलाबारी की। अंग्रेजो ने भी गोलाबारी की, और एक घटे के अदर दिलकुशा ले लिया। क्रांतिकारियो ने ढालू भूमि को पार कर ला मार्टिनियर कालेज मे जाकर शरण ली। दिलकुशा की सुरक्षा के लिए केपवेल ने बारह सौ सैनिकों को वहाँ

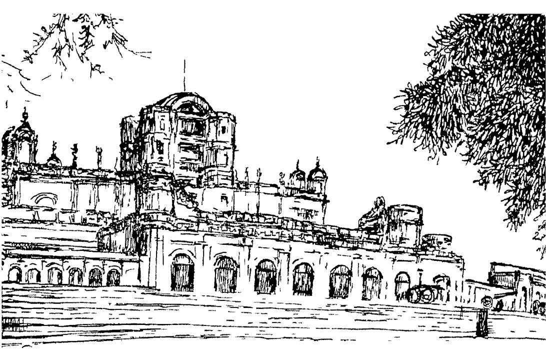

ला मार्टिनियर कालेज

चौकसी रखने के लिए छोडा ।

अग्रेजो ने क्रातिकारियो का पीछा किया और उनको ला मार्टिनियर कालेज से हटा दिया । यह भवन कालेज बनने के पूर्व फ्रासिसी 'क्लौड मार्टिन' का निवास स्थान था । मरते समय उसने इस भवन और अपनी सपत्ति का एक ट्रस्ट बनाया, जो इस कालेज को चलाता है । पूर्व योजना के अनुसार सब तबू एव भारी सामान दिलकुशा में छोड

दिया गया था, अत उस रात्रि को सैनिक अपने ओवर कोटो को पहने हुए, हथियार बगल मे दवाए हुए, जमीन पर ही सो गए। रात्रि को रेजीडेन्सी के निवासियो ने नीलो रोशनी को अधिक निकट देखा। आज वह ला मार्टिनियर कालेज की छत से टिमटिमा रही थी। पास ही केबेने छत के ऊपर आग जला रहा था। सकेतो द्वारा यह तय हो गया था कि यदि आग जलने का सकेत मिले, तो समझ लेना चाहिए कि अगले दिन प्रातः काल रेजीडेन्सी की सेना को घेरे से निकल कर मार्ग के मकानो को ले लेना है। इस प्रकार रेजीडेन्सी के व्यक्ति अधिक से अधिक सुरक्षापूर्वक रेजीडेन्सी खाली कर दिलकुशा पहुँच सकते थे।

अगले दिन प्रात काल सैनिको को चाय के साथ तीन दिन का राशन दिया गया। इसके यह अर्थ थे कि अगले तीन दिन बहुत ही अनिश्चित होगे, भोजन की व्यवस्था की भी सभावना कठिनता से ही होगी, और युद्ध भी कितने समय तक चलेगा और कैसा रूप ले लेगा, यह भी नही कहा जा सकता था। हर समय सैनिक को युद्ध के लिए तैयार रहना था। सैनिको को सचेत किया गया कि चूँकि लड़ाई घिरे हुए स्थानो मे होगी अत बारूद का प्रयोग कम से कम किया जाए। पास की लडाई मे जिसमे हाथापाई की अधिक संभावना थी, शत्रु एव मित्र, दोनों पक्ष समान रूप से घायल हो सकते थे। सर कोलिन कैंपवेल ने सिपाहियों को यह आदेश दिया—

"सिपाहियो ! तुम्हे कठिन कार्य करना है। जहाँ तक सभव हो तीन-तीन सैनिक साथ-साथ रहे। घिरे हुए स्थानो मे पहुँचते ही सगीनो का प्रयोग करो। मध्यवर्ती सैनिक को सगीन से आक्रमण करना चाहिए, और उसके दाएँ वाएँ वाले सैनिको को उसकी सहायता करनी चाहिए। किलेबदी के अदर बदूक की गोलियाँ न चलाई जाएँ, क्योकि उससे अपने पक्ष के लोग भी घायल हो सकते है।"

नहर को पार कर गोमती नदी के दाएँ किनारे एक मील चल-कर अग्रेजी सेना वाई ओर घूम कर सिकदरवाग पहुँची। सुवह के नौ बजे थे। नदी के किनारे कुहरा छाया हुआ था। अग्रेजो को मार्ग मे किसी प्रकार की रुकावट नही मिली। सँकरे मार्ग के दोनो तरफ मिट्टी की दीवाले थी, जो आम के वगीचो की घेरेबदी थी। यह अग्रेजी सेना का भाग्य ही था कि मार्ग के किनारे की दीवालो के पीछे क्रातिकारियो ने किसी प्रकार का प्रबध नही किया था। सिकदरबाग के चारो तरफ एक बीस फुट ऊँची मजबूत दीवाल थी, और उसका क्षेत्रफल १५० वर्ग गज था। कैपवेल की सेना और रेजीडेन्सी के मध्य यह क्रातिकारियो की एक महत्वपूर्ण चौकी थी।

सिकदरवाग मे दो हजार चुने हुए वीर क्रातिकारी एकत्र थे। उसकी दीवालो मे प्रति गज की दूरी पर छेद थे, जहाँ से आक्रमणकारियो पर गोलावारी की जा सकती थी। घेरे

के अदर कुछ दुमजिले मकान थे, जहाँ से शत्रु पर दूर-दूर तक मार की जा सकती थी। क्रातिकारियो ने निश्चय किया था कि वे अत समय तक लडते रहेगे। मर भले ही जाएँ किंतु भागेगे नही।

जव क्रातिकारियो ने अग्रेज फौज देखी तो उन्होने उस पर तोप और बदूको से गोलाबारी की। अग्रेज सिपाही यत्र तत्र गिरने लगे, अत उनको लेटने की आज्ञा दी गई। अग्रेजो की तोपो से भी सिकदरवाग की दीवालो को तोडने के लिए गोलाबारी की गई, लेकिन उस पर कोई विशेष असर नही हुआ। अकस्मात एक अग्रेज सिपाही को दीवाल मे प्रवेश करने योग्य एक दरार दिखाई दी। अग्रेज सेना उससे प्रवेश कर गई। अब क्रातिकारियो और अग्रेज सैनिकों मे सगीन और तलवार का भयकर युद्ध हुआ। न दया की भीख माँगी गई और न किसी को उसकी आशा ही थी। प्रत्येक क्रातिकारी अपने स्थान पर लड़ता हुआ मारा गया। घायल और धराशायी क्रातिकारियो मे इतना जोश था कि उन्होने अग्रेज सैनिकों से कहा कि यदि हम उठ पाते तो तुम्हे मार डालते। क्रांतिकारियों की लाशे इस प्रकार पट गई थी कि एक के ऊपर एक, उनकी ऊँचाई चार फुट तक हो गई थी। अवध क्षेत्र की यह सबसे भयकर लडाई थी, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति अपने स्थान पर लडता हुआ मारा गया। जहाँ पर वह था वही डटा रहा, हटा नही।

सिकदरबाग के बीच मे पीपल का एक घना वृक्ष था। उसके नीचे पानो से भरे मिट्टी के कई मटके रखे थे। मार-काट के पश्चात अंग्रेज सैनिक अपनी प्यास बुझाने के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे आए। वहाँ उन्हे ठडा जल और ठडी छाँह दोनो मिले। कैप्टन डौसन ने देखा कि पेड़ के नीचे कई मृत अंग्रेज सैनिक पडे है। उनके घावो का निरीक्षण कर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा, कि वे सब किसी ऊँचे स्थान से गोली चलाकर मारे गए थे। उसको सदेह हुआ कि पीपल के पेड पर छिप कर कोई व्यक्ति गोली चला रहा था। उसने उस वृक्ष का निरीक्षण करवाया। एक व्यक्ति वहाँ छिपा बैठा था। उस पर निशाना लगाया गया, और वह वृक्ष से लुढक पडा। वह एक वीरागना थी जो लाल जैकेट और गुलावी पैजामा पहने हुए थी। उसके पास दो पिस्तौले थी। उसने आधा दर्जन से अधिक अंग्रेज सैनिकों को मार डाला था।

सिकदरबाग से रेजीडेन्सी की ओर केवल पाँच सौ गज को दूरी पर शाह नजफ है। यह नवाव गाजी उद्दीन हैदर का मकवरा है। उसके चारो तरफ एक मजबूत दीवाल थी। दीवाल के चारों तरफ मिट्टी के कच्चे मकान थे। दोपहर का समय था। कैंपवेल की यह इच्छा थी कि गोधूलि वेला तक शाह नजफ को भी ले लिया जाए। अंग्रेजो ने शाह नजफ की दीवार पर गोलावारी प्रारभ की। गोमती नदी

के पार से क्रातिकारियो ने भी अग्रेज आक्रमणकारियो पर गोलावारी शुरू की ।

शाह नज़फ की रक्षा करने वालो मे कुछ तीरदाज भी थे, जो धनुष और बाण का प्रयोग कर रहे थे । यह देखकर विस्मय होता है कि जिस युग मे इनफील्ड रायफल का प्रयोग होता था, उस युग मे तीर और कमान का भी प्रयोग हो रहा था । उनके तीर बड़े वेग एव शक्ति से सही निशाने पर बैठते थे । एक सिपाही ने अपना आँखो देखा हाल इस प्रकार लिखा है—उसके समीप एक सिपाही के सिर को भेदता हुआ तीर सिर के पीछे एक फुट बाहर निकल गया । दूसरे सिपाही के दिल को छेदता हुआ तीर छ. गज पीछे जमीन पर गिर पड़ा । सिपाही तडपा और तुरत मर गया ।

अंग्रेजो पर शाह नजफ और नदी के पार से गोलाबारी हो रही थी । तीन घटे की गोलाबारी का भी शाह नजफ की मजबूत दीवालो पर कोई असर नही पडा था । दीवाल के चारों तरफ की झोपडियो को जला दिया गया था । अग्रेजी सेना ने दीवाल पर चढकर आक्रमण करने की सोची, लेकिन क्रातिकारियो ने उन पर ईट, खौलता पानी, तेल में भीगे हुए जलते कपडे डालकर वार किया और अदर नही आन दिया । केपवेल ने सिपाहियो को इन शब्दो मे ललकारा—"सैनिको, याद रखो । रेजीडेन्सी के अंदर औरत और बच्चों का जीवन सकट मे है । उनको वचाना आवश्यक है । प्रश्न यह नही उठता है कि तुम रेजीडेन्सी को ले सकते हो

या नही । उसे तुम्हे हर हालत मे लेना है ।''

अकस्मात शाह नजफ मे बिगुल बजा । उसका अर्थ था कि स्थान छोड कर कूच कर दो । अग्रेज सशय मे पड गए कि इसका क्या अर्थ है । इसमे कोई चाल तो नही है ? शाह नजफ की किलेबदी के अदर सुरक्षित सेना क्यो कर वहाँ से हटने लगी । लेकिन कुछ समय पश्चात गोलाबारी भी बद हो गई । इससे अग्रेजो को विश्वास हो गया कि बिगुल का बजना कोई चाल न थी, वरन वास्तविकता थी । बात यह थी कि शाह नजफ मे क्रातिकारियो ने पर्याप्त मात्रा मे बारूद एकत्र कर रखा था, और उन्हे भय हो गया था कि तोप के गोलो के लगातार आक्रमण से यदि बारूद में आग लग गई, तो वे भी उसमे भुन जाएँगे ।

प्रश्न यह उठता है कि क्यो क्रातिकारी बारूद के ढेर को छोड कर चले गए, यदि एक क्रातिकारी वहाँ रुक जाता, और अग्रेज सेना के अदर आने पर विस्फोट कर देता तो सैकडों अग्रेज सैनिक मर जाते ।

१७ नवंबर को रेजीडेन्सी मे यह सदेश प्रसारित किया गया—

''कल रात्रि १८ नवबर को प्रत्येक व्यक्ति को रेजीडेन्सी छोडना है । अपने साथ उतना ही सामान ले जा सकते हैं, जितना कि स्वय ले जा सके ।''

जिस समय कोलिन केपबेल सिकदरबाग मे लड रहा था,

उस समय हेवलाक रेजीडेन्सी और शाह नजफ के मध्य की क्रातिकारी चौकियो पर कब्जा कर रहा था। अव रेजीडेन्सी खाली करने वालो के लिए रेजीडेन्सी से दिलकुशा तक सुरक्षित मार्ग वन गया था। मार्ग को अधिक मुरक्षित बनाने के लिए सब प्रकार की सावधानियाँ वरती गई थी। खुले हुए स्थानो को कनातो से ढक दिया गया था, ताकि निशाने वालो से रेजीडेन्सी छोडने वाले वच सके। ऊँची सड़कों मे खाइयाँ खोद दी गई थी। स्त्रियो को डोलियो से उतरकर, खाइयो को पैदल पार करना पडा था। यह तय किया गया था कि पहले महिलाएँ, वच्चे और घायल दिलकुशा पहुँचा दिए जाएँगे। इसके पश्चात रेजीडेन्सी की पुरानी सेना ब्रिगेडियर इगलिस के साथ रवाना होगी। नदी के किनारे के स्थानो से हेवलाक की सेना इगलिस की सेना से आ मिलेगी। वे मोतीमहल की अग्रिम चौकी को पार कर शाह नजफ मे रुक जाएँगे। केप-वेल सिकदरबाग मे अपने तोपखाने और पैदल सेना के साथ तैयार रहेगा। यदि क्रातिकारियों ने रेजीडेन्सो से निकलने वालो का पीछा किया तो वह उनके प्रयास को विफल करेगा, और तव तक चौकसी करेगा, जब तक कि आखिरी आदमी सही सलामत दिलकुशा न पहुँच जाए।

२२ नववर को रेजीडेन्सी की पुरानी सेना ने अर्धरात्रि को रेजीडेन्सी से प्रस्थान किया। क्रातिकारियो को सशय न हो कि रेजीडेन्सी खाली की जा रही है, इसीलिए सव मकानों

मे मोमबत्ती एव लालटेने जलती हुई छोड़ दी गई थी।
इगलिस रेजीडेन्सी की पुरानी सेना का कमाडर था। उसने इसे अपना विशेषाधिकार समझा कि उसे ही सबसे बाद रेजीडेन्सी को छोडने का श्रेय मिलना चाहिए। कहा जाता है कि उटरम ने मुस्करा कर अपना हाथ इगलिस की ओर बढाया और कहा—"हम साथ-साथ निकले।"

इस पर इगलिस ने कहा—"श्रीमान, आप मुझे अपने मकान के दरवाजे को बद करने की आज्ञा देगे।"

लेकिन रेजीडेन्सी से सबसे बाद मे निकलने वाला व्यक्ति इगलिस नही कैप्टन वाटरमैन था। जब रेजीडेन्सी खाली की जा रही थी, तो वह सोता रह गया था। नीद खुलने पर वह अपना होश-हवास खो बैठा। लेकिन भाग्यवश कुछ दूरी पर उसे आखिरी टोली के व्यक्ति जाते दीखे, दौड कर वह उनके साथ हो लिया।

यह कहा जाता है कि रेजीडेन्सी से भूखे लोग जब दिलकुशा पहुँचे थे तो उन्होने एक ही दिन मे बीस दिन का राशन चट कर दिया था।

रेजीडेन्सी पर ३० जून को घेरा डाला गया था और २२ नवबर को पाँच माह पश्चात घेरे मे आए हुए व्यक्तियो को छुटकारा मिल पाया था। लेकिन अभी लखनऊ नगर और अवध का क्षेत्र क्रातिकारियो के पूर्ण अधिकार मे था। सर कलिन केपवेल को अभी बहुत कुछ करना बाकी था।

सिहावलोकन

हेवलाक और उटरम की सम्मिलित सेना, २२ नवबर को रेजीडेन्सी से बाहर निकलने मे सफल हुई थी। इसके दो माह पूर्व अग्रेजो ने दिल्ली भी ले लिया था। इन दो घटनाओ ने सन '५७ की क्राति को नया मोड दिया। अब तक क्रातिकारी अग्रेजो की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली थे, किंतु अब अग्रेजो का पलडा भारी पडने लगा। उनको निरतर विलायत से सैनिक सहायता मिलने लगी।

अवध के क्रातिकारी निश्चय ही चिनहट के युद्ध के पश्चात रेजीडेन्सी को ले सकते थे, लेकिन वे समय के महत्व को समझ न पाए। क्रातिकारी युद्ध को खीचते रहे। उनको इस बात का आभास नही हो पाया कि युद्ध जितनी जल्दी खतम हो जाएगा उनकी विजय की उतनी ही अधिक सभावना होगी। वे यह समझ नही पाए कि जितना ही

अधिक समय खिचता जाएगा उतनी ही अधिक अग्रेजो की शक्ति भी बढती जाएगी ।

यदि अवध के क्रातिकारी नेता दूरदर्शी होते और उनका दृष्टिकोण अखिल भारतीय होता तो रेजीडेन्सी के पश्चात उनको कानपुर के क्रातिकारियो को सहयोग देना चाहिए था । लेकिन अवध के क्रातिकारियो को लखनऊ के अतिरिक्त न कुछ दिखा और न कुछ सूझा । कानपुर से ही तो उनको दबाने के लिए अग्रेजी फौज आती । यदि कानपुर और लखनऊ के क्रातिकारियों की सहयोजना होती तो वे हेवलाक को चक्की के दो पाटो के बीच के दानो की भाँति कभी भी पीस सकते थे । उनको केवल एक साथ हेवलाक पर दोनो तरफ से आक्रमण करना था—कानपुर के क्राति-कारियो को पीछे से और लखनऊ के क्रातिकारियो को आगे से ।

सर कोलिन केपवेल रेजीडेन्सी के घेरे में आए हुए व्यक्तियो को छुटकारा दिलाने मे सफल हुआ था । घेरे से निकाल कर उसने उन्हे आलमबाग पहुँचा दिया था । यहाँ लगभग चार हजार सैनिकों की छावनी थी । इस समय केपवेल को कानपुर से समाचार मिला कि ताँतिया टोपे के नेतृत्व मे ग्वालियर की सेना सक्रिय हो रही है । वह उटरम को आलमबाग छोड़कर कानपुर की ओर रवाना हुआ ।

इस समय आलमबाग की अवध मे लगभग वही स्थिति हो

गई थी, जो पहले रेजीडेन्सी की थी। रेजीडेन्सी के घेरे से अग्रेज बाहर निकल आए थे । किंतु आलमबाग मे भी वे पूर्णतया सुरक्षित नही थे। आलमबाग मे क्रातिकारियो ने कई आक्रमण किए थे। स्वय हजरत महल ने भी एक वार अपने नेतृत्व मे उस पर आक्रमण किया था। मौलवी अहमदउल्लाह शाह ने भी उसको लेने के कई प्रयत्न किए थे, लेकिन विफल रहा था । क्राति-कारियो के लिए यह महत्वपूर्ण था कि कोलिन केपवेल के लौटने से पूर्व ही आलमबाग की सेना को नष्ट कर दिया जाए। उसके पहुँचने पर अग्रेजों की शक्ति दुगनी हो जाती किंतु क्रातिकारी आलमबाग को लेने मे सफल नही हुए।

आलमबाग की चौकी कोलिन केपवेल की अग्रिम चौकी का महत्व रखने लगी थी। ताँतिया टोपे से निपट कर उसे पुन. लखनऊ वापस लौटना था। अभी नगर क्रांतिकारियों के हाथ मे था, और सपूर्ण अवध मे यत्र तत्र क्रातिकारियो का जमघट था।

दिसबर के प्रारभ में कोलिन केपवेल लखनऊ की ओर रवाना हुआ। जग बहादुर की गोरखा सेना भी उसकी मदद के लिए आ पहुँची थी। हेनरी लारेन्स के भाई जौन लारेन्स ने पजाब से भी सेना भेज दी थी। पजाब को अग्रेजी शासन मे आए केवल छ: वर्ष हुए थे, लेकिन जौन लारेन्स ने वहाँ ऐसा जनप्रिय शासन स्थापित किया था कि सिख अग्रेजो

लखनऊ नगर पर अंग्रेजो का कब्जा हो जाने के बाद लगभग ९००० क्रांतिकारियो ने बेगम हजरतमहल और फैजाबाद के मौलवी के नेतृत्व मे मूसाबाग की मोर्चेबंदी की थी। सर जेम्स उटरम इस पर १९ मार्च १८५८ के पहले कब्जा न जमा सका। और कब्जा करने पर उसके हाथ केवल इमारत आई, क्रांतिकारी नही।

के परम मित्र बन गए थे। अब अंग्रेजी सेना मे सैनिको की कमी न रह गई थी। केपवेल पहली मार्च '५८ तक लखनऊ नगर पर पूर्ण अधिकार करने मे सफल हुआ था। अवध में

लडाई चलती रही, क्योकि क्रातिकारियो की टोलियाँ जगह-जगह बिखरी लडती रही।

लखनऊ-विजय के पश्चात लूट मार प्रारभ हुई। प्रत्येक विजित नगरी की भॉति लखनऊ भी श्रीविहीन हो गई थी। अधिकाश सपन्न लोग तो पहले ही नगर छोड कर चले गए थे। अग्रेज, सिख और गोरखे सिपाहियो ने तो उसे लूटा ही, साथ ही नगर के लुच्चे और लफगो ने भी लूट मे पूरा भाग लिया। नगर मे नाटकीय दृश्य होने लगे थे। जिसकी समझ मे जो आया उसने वही किया। मनुष्यो में किसी प्रकार का नियत्रण नही रह गया।

युद्ध काल मे कई घरो से दरवाजा बद करके लोग लडे थे। इन घरो मे बारूद की बोरियो को दियासलाई दिखाकर अदर फेक दिया जाता था। भुनी और जली हुई लाशें वही सडती रही थी। नगर मे भयकर दुर्गंध फैल गई थी। कई सहस्त्र व्यक्ति नगर की सफाई करने एव घरो से मुर्दे निकालने मे लगाए गए थे। लखनऊ नगर एव उसके समीप के क्षेत्र मे मनुष्य, घोड़ो, गधो आदि की लाशे सडती रही, और मक्खियों के कारण जीना कठिन हो गया।

युद्ध का अत हो गया था, लेकिन युद्धजनित घृणा एव अत्याचारो के प्रतिफल बदला लेने का दूसरा दौर प्रारभ हो गया था। अग्रेज विजयी हो गए थे। उनके हाथ मे शक्ति

थी। उन्होने दोषी एव निर्दोष व्यक्तियो मे किसी प्रकार का अतर नही रखा। जो मिला उसे फॉसी पर लटका दिया। गॉव के गॉव जला दिए गए। न स्त्री, न पुरुष और न बच्चो का ही विचार किया गया। इन अत्याचारो के फलस्वरूप भारतवासियो एव अग्रेजो मे स्थायी वैमनस्य हो गया। दोनो जातियों ने एक दूसरे का विश्वास छोड दिया। उनमे कटुता बनी रही। इसका अत तभी हुआ जब भारत स्वतत्र हो गया।

कई जमीदार नवाबी व्यवस्था मे स्वय छोटे-मोटे नवाब के सदृश्य थे। अपनी रय्यत पर उनका अपरिमित प्रभाव था। क्राति में भाग लेने के फलस्वरूप वे राजा से रक हो गए थे। उनकी जमीदारियॉ छीन ली गई थी, और उन लोगो को दे दी गई थी जिन्होने अग्रेजो का साथ दिया था। इस प्रकार अवध मे अग्रेजो के पिट्ठू एक नए जमीदार वर्ग का सृजन हुआ।

अवध की क्राति का वास्तविक नेता एव सेनानी मौलवी अहमदउल्लाह शाह था। अवध मे वह अग्रेजो से निरतर लडता रहा, और जँब अग्रेजो ने अवध पर अधिकार जमा लिया, तो वह रूहेलखड जा पहुँचा। वहॉ भी उसने स्वतत्रता सग्राम का सगठन किया। अवध के वीर सेनानी अहमदउल्लाह शाह का विश्वासघात पूर्वक वध कर दिया गया। चिनहट के युद्ध मे बरकत अहमद ने सर हेनरी

लारेन्स को बुरी तरह हराया था। लेकिन यह आश्चर्य का विषय है कि आगे चलकर बरकत अहमद के सदृश्य सुयोग्य एव दक्ष सैनिक को किसी महत्वपूर्ण सैनिक अभियान का सचालन करने का अवसर नही दिया गया। बेगम हजरत महल ने नेपाल मे जाकर शरण ली।

अग्रेजी पक्ष के उल्लेखनीय सेनानायक हेवलाक, उटरम, सर हेनरी लारेन्स एव सर कोलिन केपवेल थे। हेवलाक की कब्र आलमबाग और सर हेनरी लारेन्स की कब्र रेजीडेन्सी मे है। हेवलाक युद्धजनित परिश्रम एव बीमारी से मरा। सर हेनरी लारेन्स गोले की मार से वीर गति को प्राप्त हुआ था। 'कानपुर का कसाई' नील भी रेजीडेन्सी में घुसते समय एक गोली का शिकार हुआ। हडसन, जिसने बहादुर शाह के दो लडको को गोली से मारा था लखनऊ मे मारा गया। केबेने ने सर कोलिन केपवेल के अभियान मे पथ-प्रदर्शक का कार्य किया था। उसे वीरता के सबसे बड़े पदक विक्टोरिया क्रॉस से विभूषित किया गया, और युद्ध के पश्चात वह सिविल जज बना दिया गया।

कपनी के शासन का अत हुआ। १ नवबर १८५८ को ब्रिटेन की सम्राज्ञी ने भारत का शासन अपने हाथ मे लिया। यह जौन कंपनी का मृत्यु दिवस था। स्वयं ब्रिटेन की पार्ल्यामेंट के सीधे सरक्षण मे भारत का शासन प्रारभ हुआ।

यूदध के फलस्वरूप लखनऊ रेजीडेन्सी खडहर हो गई थी।

यह तव से उसी दशा मे है, और सन '५७ की क्राति की याद दिलाती है। यह भारत सरकार की एक सरक्षित इमारत है, और अपना ऐतिहासिक महत्व रखती है।

जव भी तुम्हे अवसर मिले, तुम लखनऊ जाओ और वहाँ की इस प्रसिद्ध इमारत को अवश्य देखो। रेजीडेन्सी मे तुम्हे सन सत्तावन की क्राति से सबधित अनेक चित्र, फोटो, नक्शे आदि मिलेंगे। उनकी सहायता से तुम्हे उस इतिहास को समझने मे मदद मिलेगी जो तुमने इस पुस्तक मे अभी पढा।

रेजीडेन्सी के खडहरो से यदि तुम दोस्ती कर सको तो वहाँ की एक-एक ईट तुम्हे अपनी कहानी वताएगी। दिखाएगी तुम्हे वह तस्वीर जो उसने अपनी आँखो से देखी थी। सुनाएगी तुम्हे वह दास्तान जो वीरता, बर्बरता और देशप्रेम से पगी हुई है।

सन '५७ की क्रात्रि के ठीक सौ वर्ष पश्चात् रेजीडेन्सी की निचली भूमि मे गोमती के किनारे, स्वतत्र भारत ने सगमरमर का एक स्तभ उन क्रातिकारियों की याद मे बनवाया है जिन्होने अपना जीवन भारत की स्वतत्रता के लिए अर्पित किया था। सगमरमर के स्तभ पर आलेख है—